

दिगम्बर

जैन

मन्दिर



जयपुर

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ, जयपुर



शुभकामनाओं सहित :

खरीदिये !

## बजाज ऑटो थ्री व्हीलर्स

जल्दी डिलीवरी :—

- पिक-अप
- एफ/इ ऑटो रिवशा
- आर/इ ऑटो रिवशा

अधिकृत विक्रेता :—

**कमल एण्ड कम्पनी**

मिर्जा इस्माइल रोड, जयपुर

फोन : 65099, 67399

**निधिकमल कम्पनी प्रा. लि.**

बरबाड़ा हाउस, प्रजमेर रोड, जयपुर

फोन : 77683

# स्मारिका

जयपुर दिगम्बर जैन मन्दिर परिचय

31



प्रधान सम्पादक  
अनूपचन्द न्यायतीर्थ

सम्पादक मण्डल :

पं० भेंवरलाल न्यायतीर्थ  
डॉ० कस्तूरचन्द कासलीवाल  
डॉ० कमलचन्द सौगाणी  
श्री ज्ञानचन्द्र खिन्नुका

परामर्श मण्डल :

श्री ज्ञानचन्द बिल्टीवाला  
श्री कुबेरचन्द काला  
डॉ० शीतलचन्द जैन  
श्री अनूपचन्द ठोलिया

प्रबन्ध मण्डल :

श्री रामचन्द्र कासलीवाल  
श्री कपूरचन्द पादनी  
श्री बलभद्रकुमार जैन  
श्री महेन्द्रकुमार पादनी

प्रकाशक :

बाबूलाल सेठी  
मानद मंत्री



श्री दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ, जयपुर

## प्राप्ति स्थान :-

कार्यालय :

श्री दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ, जयपुर  
महावीर भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003

□

दिगम्बर जैन मंदिर कालाडेरा (महावीर स्वामी)  
गोपालजी का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302003

□

दिगम्बर जैन मंदिर सोनियान (पार्श्वनाथजी)  
खवासजी का रास्ता, सिरहड्योदी बाजार, जयपुर

1990

□

मूल्य : 20 रुपये

□

मुद्रक :

जयपुर प्रिन्टर्स

एम० भाई० रोड, जयपुर

एवं

फुवाल प्रिन्टर्स

गोधो का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर

शुभाशीर्वाद

एवं

शुभकामनाएँ

*With best compliments from*



# TARA CHAND THOLIA

Jewellers, Manufacturers, Exporters & Importers  
of the  
Precious & Semi-Precious Stones

*Jaipur Office .*

Vijay Bhawan,  
Chaksu ka Chowk, Johari Bazar,  
Jaipur-3

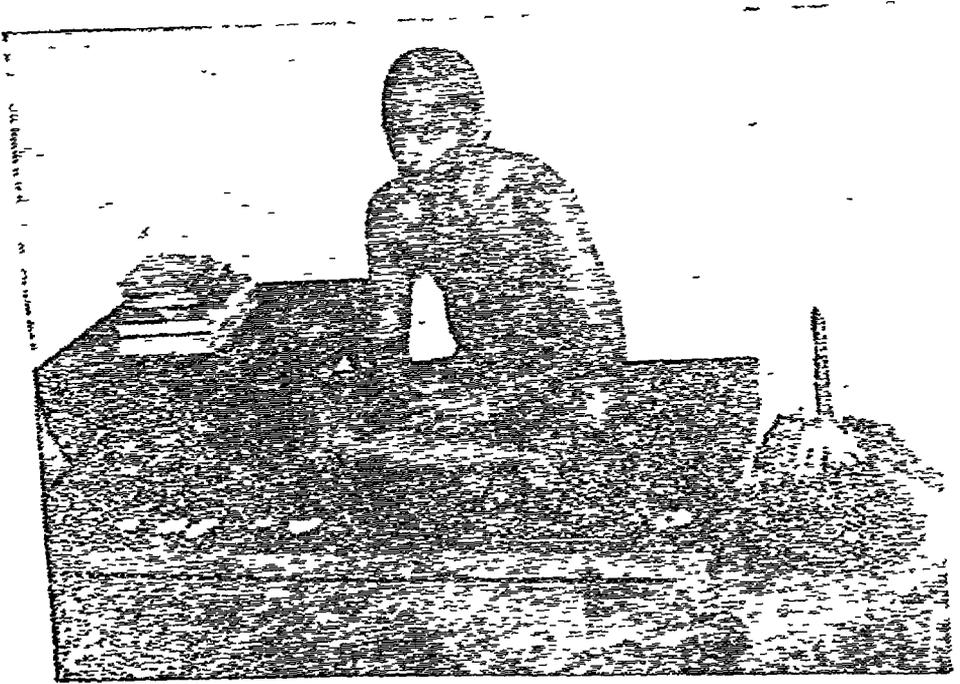
Tel nos 73935 & 561232

Game MIRACLE

*Bombay Office :*

80/94 Mirza Street, 3rd Floor  
Zaveri Bazar,  
Bombay-3

Tel No 328857



### आचार्य विद्यासागरजी

घराघाम की बबल घोहर.

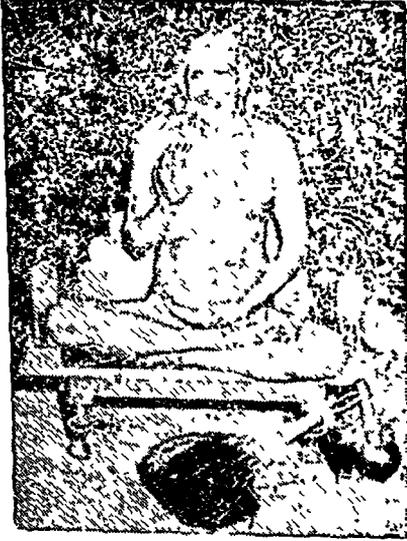
सकल संस्कृति का संजीवन ।

प्राणों का पराग त्याग वैभव का,

शाब्दन ज्वालों का न्यन्दन ।

आज स्वतः ही विद्या धारा,

बन गई आजीर्वाद हमारा



सोनागिर  
12-4-90

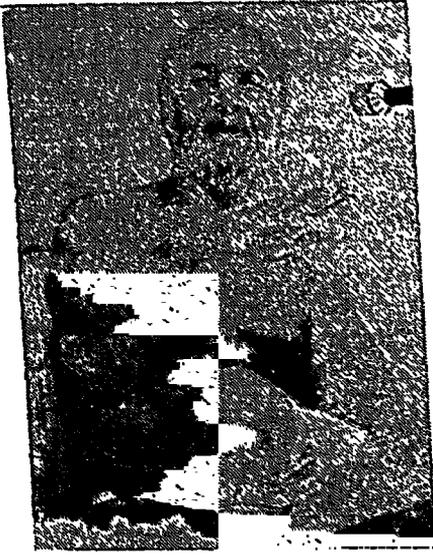
आचार्य विमलसागरजी,

जयपुर समस्त भारत वर्ष में जैन संस्कृति का प्रधान केन्द्र रहा है। आध्यात्मिक क्षेत्र में जहाँ प० टोडरमलजी, जयचन्दजी, सदा-सुखजी ने अपनी लेखनी द्वारा जन साधारण को सरल भाषा में आध्यात्मिकता का रसपान कराया है वहाँ कला के क्षेत्र में अनुभवी शिल्पकारों द्वारा विशाल मन्दिरों का निर्माण हुआ है जो देश एवं समाज की अमूल्य धरोहर है।

महासच द्वारा इस अमूल्य विरासत की सामग्री का समुच्चय सकलन कर, उसे लिपिबद्ध कर जन साधारण की जानकारी हेतु प्रकाशन कराने का कार्य सांस्कृतिक जागरण की एक कड़ी के रूप में सिद्ध होगा।

इस मंगल कार्य के लिये हमारा शुभार्शीवाद है।

—आचार्य विमलसागरजी



शान्ति गिरि क्षेत्र  
कोथली कुप्पनवाड़ी  
1.8.1989

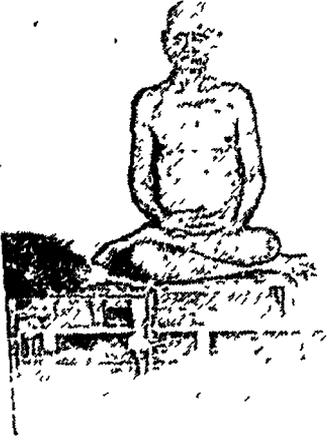
### आचार्य विद्यानन्द जी

जयपुर जैनो के एक केन्द्र के रूप में प्रख्यात रहा है। यहाँ प्रशासनिक क्षेत्र में अनेक जैन दीवान हुए, साहित्यिक क्षेत्र में पंडित टोडरमल जैसे प्रौढ़ सारस्वत पुत्र हुए, कला के क्षेत्र में यहाँ और इस नगर के चारों ओर अनुपम शिल्प वैभव सुरक्षित है। यहाँ लगभग दो सौ जिनालय और उनमें हजारों हस्तलिखित और ताडपत्रीय कलापूर्ण ग्रन्थ विराजमान हैं। अनेक जिनालयों में दर्शनीय भित्तिचित्र हैं। कई मंदिरों में बहु संख्या ताम्र-यन्त्र सुरक्षित हैं। यहाँ कागजों पर प्रस्तारों और नक्शों की संख्या भी विपुल है। यह सब हमारी सांस्कृतिक सम्पदा है, जिसके कारण जैन समाज विश्व समाज के समक्ष एक जागृत समाज होने का गौरव अनुभव कर सकती है। ऐसी सम्पदा के कारण ही विश्व में जैन समाज सम्पन्न समाज कही जाती है।

यह जानकार हमें धार्मिक प्रमोद हुआ कि जयपुर का श्री दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ इस सांस्कृतिक विरासत का समुच्चय संकलन, उसका प्रामाणिक इतिहास और कलात्मक निदर्शनो के चित्र सहित एक स्मारिका प्रकाशित कर रहा है। ऐसे धार्मिक और सांस्कृतिक जागरण के शुभ कार्य में हमारा सदा ही शुभाशीर्वाद है। इस स्मारिका के प्रकाशन के अनन्तर महासंघ को कुछ ऐसे भी रचनात्मक उपाय करने चाहिये, जिनके द्वारा इस अमूल्य सांस्कृतिक सम्पदा का उपयोग देश और विदेश के विद्वान् एवं सर्व साधारण कर सकें।

शुभाशीर्वाद।

आचार्य विद्यानन्द मुनि



आचार्य अजित सागर जी

लोहारिया,  
जिला वांसवाड़ा  
19.8.89

दि० जैन समाज के बुद्धिजीवी वर्ग ने जैन धर्म, जैन साहित्य, ऋषि प्रणीत ग्रन्थ, पुरातनकला युक्त जिनधर्मायतन, जिन मन्दिरों में स्थित मन्त्र समन्वित यन्त्र आदि जिनधर्म की महत्वपूर्ण सामग्री तथा जिनायतनों के संरक्षणार्थ "श्री दि० जैन मंदिर महासंघ जयपुर" नामक एक संस्था की स्थापना की है जो अत्युत्तम एवं महत्वपूर्ण है। इस महासंघ के सदस्यगण पुरातन आर्ष परम्परा के संरक्षण एवं संवर्धन में अपने मनोविचारों को रखते हुए सातिशय पुण्य के पात्र बनकर अपनी विद्वत्ता एवं उत्तम वंश का परिचय देकर अपने लक्ष्य की पूर्ति करते रहे, ऐसा मेरा आप सभी के लिए शुभाशीर्वाद है।

आचार्य अजित सागर



‘निर्मल’ तृतीय मंजिल  
नरीमन पाइन्ट  
बम्बई-400021  
दिनांक 2 मई, 1989

श्रियांस प्रसाद जैन

यह हर्ष का विषय है कि महासघ मंदिर सर्वेक्षण योजना के अन्तर्गत एक संदर्भ ग्रन्थ का प्रकाशन कर रहा है। आपकी योजना प्रशंसनीय है।

हमारी कला व सस्कृति को सुरक्षित रखने की नितान्त आवश्यकता है। जन साधारण को इसकी पूरी जानकारी उपलब्ध हो सके इस ओर आपके द्वारा किया गया कार्य सदैव इतिहास के पृष्ठों में अंकित रहेगा। ये पावन प्राचीन मंदिर जैन धर्म की सस्कृति के प्रतीक एवं आत्मोन्नति के केन्द्र है।

इस अवसर पर आप एक स्मारिका का भी प्रकाशन कर रहे हैं, उसके सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ भेजता हूँ।

श्रियांस प्रसाद जैन



साहू जैन, 7 बहादुर शाह जफर मार्ग,  
नई दिल्ली-110002  
दिनांक 29.5.1989

**अशोक कुमार जैन**

अध्यक्ष

भारत-वर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, बम्बई

यह जानकर बहुत ही प्रसन्नता हुई कि श्री दिगम्बर जैन मंदिर महासघ, जयपुर द्वारा एक ऐसा सन्दर्भ ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है जिसमें जयपुर, आमेर एव सांगानेर के दिगम्बर जैन मंदिरों के इतिहास के साथ साथ वहां उपलब्ध कलाकृतियों, ग्रन्थों, यन्त्रों भित्तिचित्रों एव पाषाण पर उकेरे भाव चित्रों के बारे में पूरी जानकारी होगी। निश्चय ही महासघ का यह प्रयास स्तुत्य है।

वास्तव में जैन संस्कृति की परम्परा शिल्प और वाङ्मय इतना समृद्ध है कि भारतीय संस्कृति के समूचे इतिहास पर उसकी छाप है। हमें अपनी इस संस्कृति को सुरक्षित रखना ही है। आपका यह प्रयास अत्यन्त उपयोगी व सराहनीय है। मैं इसकी सफलता की कामना करता हूँ और विश्वास करता हूँ कि इसके महत्त्व को देखते हुए अन्य प्रान्तों में भी ऐसे प्रयत्न होंगे।

शुभ कामनाओं सहित,

दरबारीलाल कोठिया

न्यायाचार्य

भू पू रीडर, शैल-बौद्ध दर्शन विभाग,  
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय  
वाराणसी

वीना (सागर)

म० प्र०

दिनांक 3.9 1989

दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ जयपुर मंदिर सर्वेक्षण योजना के अन्तर्गत सग्रीहत सामग्री को एक संदर्भ ग्रन्थ के रूप में लिपिबद्ध कर उसकी जानकारी जन साधारण को सुलभ कराने के हेतु एक स्मारिका प्रकाशित करने का जो निर्णय लिया है स्तुत्य है। उसमें प्रत्राकित सामग्री का परिचय दिया जावेगा, यह बहुत उचित और सुन्दर कार्य होगा। हम आपके ऐसे बहुमूल्य प्रयास और उसकी सूझबूझ के लिये हार्दिक वधाई देते हुए उसका स्वागत करते हैं।

दरबारीलाल कोठिया

---

फूलचन्द सिद्धान्त शास्त्री

दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर

हस्तिनापुर

दिनांक 24 6 89

श्री दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ जयपुर ने जो काम हृदय से लिया है उसकी सफलता की मैं कामना करता हूँ। इतिहास और विवरण सबधी काम की ओर दिगम्बर जैन समाज का ध्यान कम गया है। यह काम दिशा निर्देश करने वाला है। इससे संभव है कि अन्य भाइयों को भी प्रोत्साहन मिले इससे जगह जगह की दुर्लभ सामग्री प्रकाशन में आवे। मैं इस काम के लिये आपका अभिनन्दन करता हूँ। इसमें जयपुर के अन्य जैन विद्वानों का तो सहयोग होगा ही।

शेष शुभम्।

फूलचन्द शास्त्री

हीरालाल जैन कौशल  
मन्त्री, भा. वि. जैन विद्वत् परिषद्

3749, गली जमादारान  
पहाडी धीरज, दिल्ली  
दि० 20.5.89

मंदिर सर्वेक्षण योजना के अन्तर्गत आपके यहाँ से जो स्मारिका निकाली जा रही है वह कई दृष्टियों से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होगी। जयपुर जैन साहित्य, कला तथा सस्कृति की सुरक्षा में अग्रणी स्थान रखता है। वहाँ की सामग्री प्रकाशित होने पर अनेक नई बातें सामने आवेगी।

मैं विद्वत् परिषद् की ओर से इस कार्य के लिये हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इस योजना की सफलता की कामना करता हूँ।

हीरालाल जैन कौशल

बाबूलाल पाटोदी  
महामंत्री, दिगम्बर जैन महा समिति

64/3, मल्हार गज,  
इन्दौर  
दिनांक 3.5.89

जयपुर तो जैन सस्कृति का खजाना है। वहाँ पर अद्भुत दिगम्बर मंदिर हैं जिसमें भी आमेर, सांगानेर, खानियाँ आदि स्थानों के मंदिर तो ऐतिहासिक हैं।

इन मंदिरों का इतिहास, उनमें उपलब्ध कलाकृतियाँ एवं भित्तिचित्रों को देखकर हृदय उल्लासित हो जाता है। आप इस महान सस्कृति की धरोहर की महत्ता के सबंध में स्मारिका के प्रकाशन का सोच रहे हैं यह हमारे लिये एक महान उपलब्धि होगी।

इससे विश्व को सस्कृति की प्राचीनता एवं उसकी गौरवगाथा का आभास प्राप्त होगा।

आपका यह मंगलमय कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न हो यही भावना है।

बाबूलाल पाटोदी



नई दिल्ली

श्री रतनलालजी गंगवाल  
अध्यक्ष, दिगम्बर जैन महासमिति

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासघ, जयपुर अपनी मन्दिर सर्वेक्षण योजना के अन्तर्गत एक ऐसा सदस्य ग्रथ प्रकाशित कर रहा है जिसमें जयपुर, आमेर तथा सांगानेर के दिगम्बर जैन मदिरो के संबंध में पूर्ण जानकारी यथा निर्माणकर्ता, निर्माणकाल, प्रतिमां, यत्र-सख्या, ग्रथ भंडार, भित्तिचित्र एवं अन्य कलाकृतियों का सचित्र विवरण रहेगा ।

इसके अतिरिक्त मदिरो के सबध में मूर्धन्य विद्वानो के लेख, राजस्थान के दिगम्बर जैन तीर्थों का परिचय तथा जयपुर की दिगम्बर जैन संस्थाएं, विशिष्ट व्यक्तियों का परिचय प्रथम बार जन साधारण को उपलब्ध कराया जावेगा ।

महासघ का यह प्रयास सराहनीय एवं अनुकरणीय है ।

मैं इसकी सफलता की कामना करता हूं ।

—रतनलाल गंगवाल

## आचार्य कुन्दकुन्द विरचित—‘तिरुक्कुरल’ से

- १—वही सबसे योग्य राजदूत है जिसको समुचित क्षेत्र और समुचित समय की परख है, जो अपने कर्त्तव्य को जानता है तथा जो बोलने से पहले अपने शब्दों को जाच लेता है ।
- २—मृत्यु का सामना होने पर भी सच्चा राजदूत अपने कर्त्तव्य से विचलित नहीं होता बल्कि अपने स्वामी के कार्य की सिद्धि के लिये पूरा यत्न करता है ।
- ३—जो व्यक्ति राजाओं के साथ रहना चाहता है, उसको चाहिए कि वह उस आदमी के समान व्यवहार करे, जो आग के सामने बैठकर तापता है, उसको न तो अग्नि समीप जाना चाहिए न अग्नि दूर ।
- ४—हार्दिक भाव को विश्वस्त रूप से जान लेने वाले मनुष्य को देवता समझो ।
- ५—जो आखे एक ही दृष्टि में दूसरे के मनोगत् भावों को नहीं भाप सकती उनकी इन्द्रियों में विशेषता ही क्या ?
- ६—बुद्धिमान लोगों के सामने असमर्थ और असफल सिद्ध होना धर्म मार्ग से पतित हो जाने के समान है ।
- ७—अपने मतभेद रखने वाले व्यक्तियों के समक्ष भाषण करना ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार अमृत को मलिन स्थान पर डाल देना ।
- ८—जो व्यक्ति ज्ञानी मनुष्यों के समुदाय में अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ रह सकता है वही विद्वानों में विद्वान माना जाता है ।
- ९—जो मनुष्य ज्ञानी है लेकिन विज्ञानियों के सामने आने में डरते हैं वे अज्ञानियों से भी गये बीते हैं ।
- १०—वही श्रेष्ठ देश है जो धन की विपुलता से जनता का प्रीतिभाजन हो और घृणित लोगों से मुक्त होकर समृद्धिशाली हो ।

★ प्रकाशकीय

★ अध्यक्ष की कलम से

★ सम्पादकीय

★ आभार

★ संस्था परिचय

हार्दिक शुभकामनाओं सहित :

## मोतीराम कंवरभान जैन एजेन्सीज

86, जौहरी बाजार, जयपुर 302003

अधिकृत विक्रेता :

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड

लिफ्टन इंडिया लिमिटेड

दूरभाष कार्यालय 569314 निवास 47764, 46434

×

×

×

## मोतीराम कंवरभान जैन

जौहरी बाजार, जयपुर 302003

अधिकृत विक्रेता :

एवरेडी घी, सिन्थोल सोप व फ्रूटी

दूरभाष कार्यालय 568769 निवास 44727

×

×

×

## कंवरभान जैन एजेन्सीज

जौहरी बाजार, जयपुर 302003

अधिकृत विक्रेता :

पारले बिस्कुट—स्वीट टाफी

दूरभाष कार्यालय 568769 निवास 44727

## प्रकाशकीय

जयपुर नगर व इसके उपनगरों में 200 से अधिक दिगम्बर जैन मंदिर, चैत्यालय एवं नशियां आदि हैं। यहाँ के जैन मन्दिर समस्त भारतवर्ष में धार्मिक प्रेरणा के केन्द्र बिन्दु रहे हैं, जिनमे बैठकर आध्यात्मिक प्रवक्ता पंडित टोडरमलजी, जयचदजी, सदासुखजी आदि विद्वानों ने अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना एव टीकाएँ कर जैन धर्म के मार्मिक सिद्धान्तों को जनसाधारण तक पहुँचाया है।

इस धरोहर की सुरक्षा हेतु महासंघ ने अपने कार्य के प्रथम चरण के रूप में जयपुर के इन मन्दिरों का सर्वेक्षण कार्य अपने हाथ में लिया। सर्वेक्षण में सकलित सामग्री बहुत ही महत्त्वपूर्ण एव अप्रकाशित होने के कारण जानकारी में नहीं होने से इस सामग्री को लिपिबद्ध करने एव उसके मुख्य तथ्यों की जानकारी जनसाधारण को सुलभ कराने की दृष्टि से महासंघ ने प्रथम पुष्प के रूप में जयपुर दिगम्बर जैन मंदिर परिचय के प्रकाशन करने का निर्णय लिया। यहाँ के मंदिर विशाल एवं कलापूर्ण हैं। पत्थर में पच्चीकारी, तीर्थों के उकेरे गये भाव, धार्मिक भावना जागृत करने वाले भित्तिचित्र, सचित्र ग्रंथ, पांडुलिपियों एवं अन्य कलाकृतियों के चित्र देकर भी इस प्रकाशन की उपयोगिता एवं महत्त्व को बढ़ाने का यथासभव प्रयास किया है।

यहाँ भाद्रपद मास के पश्चात् सवाई जयपुर के समस्त मंदिरों एवं चैत्यालयों के दर्शनों की परम्परा रही है। ऐसे दर्शनाथियों एवं अन्य बाहर से आने वाले पर्यटकों की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए मंदिरों चैत्यालयों की सूची के अतिरिक्त उनके मार्ग-दर्शक नक्शे, चौकड़ी वार देकर उपयोगी बनाने का प्रयास किया है।

इस सांस्कृतिक निधि की महत्ता एवं इससे सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर विचार-मंथन करना आवश्यक समझा गया है। अतः समाज के भूधन्य विद्वानों के विचारों को भी स्मारिका में समुचित स्थान दिया गया है।

तीर्थक्षेत्रों की अपनी एक विशेषता है जहाँ मानव स्वयमेव आत्म-कल्याण के बारे में सोचने लगता है। यद्यपि राजस्थान में सिद्धक्षेत्र नहीं है परन्तु यहाँ के कतिपय क्षेत्र, अतिशयपूर्ण एव दर्शनीय हैं जो भारत में अपना एक विशिष्ट स्थान रखते हैं अतएव राजस्थान के प्रमुख तीर्थों का संक्षिप्त परिचय भी सबकी जानकारी हेतु प्रकाशित किया गया है।

विभिन्न धार्मिक, शैक्षणिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक सस्थाओं का इन मंदिरों के साथ सदैव से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है, अतएव मुख्य दिगम्बर जैन सस्थाओं के परिचय को सकलित कर स्मारिका में प्रकाशित करने का प्रयत्न किया गया है।

सभी सामाजिक निधियों के पीछे विद्वज्जन एव सेवाभावी विभूतियों का हाथ रहा है जिनके कठिन परिश्रम और त्याग के कारण ही हमारे सामने ये निधियाँ उपलब्ध हैं। उन व्यक्तियों के बारे में परिचय न देना अपने आप में एक कमी होगी। अतएव प्रमुख व्यक्तियों का परिचय देकर इस कमी को भी दूर करने का प्रयास किया है।

मैं उन सभी महानुभावों के प्रति आभार प्रकट करना भी अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ, जिनके अपूर्व में सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हो सका है।

सर्वप्रथम उन आचार्यों के प्रति जिन्होंने लिखित अथवा मौखिक शुभाशीर्वाद प्रदान किया जिसके फलस्वरूप यह मंगलमय प्रकाशन आपके सम्मुख आ सका। मैं उनके प्रति श्रद्धावन्त हूँ।

मदिरो के समस्त प्रबन्धकों के प्रति जिन्होंने अपने-अपने मदिरो के सम्बन्ध में परिचय सामग्री उपलब्ध करायी है एव प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान किया है तथा मार्गदर्शन किया उन सबका महासंघ की ओर से आभार प्रकट करता हूँ।

किसी भी वस्तु की पूर्ण रूप से जानकारी लेख द्वारा चाहे वह कितनी ही विद्वत्ता-पूर्ण हो सम्भव नहीं हो पाती है, जबकि चित्र द्वारा उसकी सम्पूर्ण जानकारी सहज रूप से साक्षर, निरक्षर, बाल, युवा, वृद्ध को हो जाती है। चित्र खण्ड के प्रकाशन में सर्वश्री ज्ञानचन्दजी खिन्दूका, श्री कुबेरचन्दजी काला, हरकचन्दजी सौगानी, सतीशजी पाटनी, एव श्री अशोकजी काला ने अथक परिश्रम किया है। मैं उनका भी हृदय से आभारी हूँ।

मूर्धन्य विद्वानों एवं लेखकों का जिन्होंने अमूल्य समय निकाल कर इस सांस्कृतिक धरोहर के विषय में अपनी मौलिक रचनाओं को प्रेषित कर इस प्रकाशन के महत्त्वपूर्ण कलेवर को निर्मित किया है वे भी साधुवाद के पात्र हैं। सभी सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक संस्थाओं के पदाधिकारियों का भी आभारी हूँ जिन्होंने हमारे निवेदन पर अपनी-अपनी संस्थाओं का परिचय उपलब्ध कराया।

बिना आर्थिक सहयोग के किसी भी प्रकार का प्रकाशन कार्य सम्भव नहीं है, इस कार्य में श्री कपूरचन्दजी पाटनी एव उनके सहयोगी श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी, व अर्थ समिति के अन्य सहयोगियों ने अथक प्रयास किया है उनका मैं अत्यन्त आभारी हूँ।

इस प्रकाशन की समस्त प्रक्रिया में महासंघ के अध्यक्ष श्री रामचन्द्रजी कासलीवाल एव श्री कपूरचन्दजी पाटनी से मार्गदर्शन मिला है जिससे यह आकर्षक व उपयोगी बन सकी है उनके प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

श्री अनुपचन्दजी न्यायतीर्थ, प्रधान सम्पादक ने निरन्तर मदिरो के प्रबन्धकों से व्यक्तिगत सम्पर्क कर सामग्री का संकलन कर लिपिबद्ध किया है। यह एक लम्बा एव श्रम साध्य कार्य है। उनके निरन्तर प्रयास का ही यह सारा फल है। मैं उनका तथा सम्पादक मडल के अन्य सहयोगियों का भी हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

महासंघ की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों एव अन्य महानुभावों का जितने प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग दिया है उनका भी आभार प्रकट किये बिना नहीं रह सकता। स्मारिका के मुद्रण कार्य को श्री सोहनलालजी, जयपुर प्रिण्टर्स एव श्री कुशलजी काला, कुशल प्रिण्टर्स एव सहयोगियों ने लगन के साथ कार्य कर स्मारिका को सुन्दर बनाया है अतः साधुवाद के पात्र हैं।

उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर परिचय प्रकाशन में पूर्ण सावधानी रखी गई है फिर भी त्रुटियाँ रहना संभव हैं। यदि किन्हीं के पास अतिरिक्त सामग्री उपलब्ध हो या इसे श्रेष्ठ बनाने को कोई सुझाव हो तो पाठक हमें भिजवायें ताकि आगे के प्रकाशनों में सुधार किया जा सके। इस सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा एव उन्नति में सभी की रुचि हो, इस मंगल भावना के साथ।

बाबूलाल सेठी

मानद मंत्री

## अध्यक्ष की कलम से

जयपुर के दिगम्बर जैन मंदिरों का परिचय प्रकाशन पाठकों के हाथों में देते हुए अपार हर्ष हो रहा है। दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ, जयपुर ने एक मंदिर सर्वेक्षण योजना तैयार की और मंदिरों के प्रबंधकों को भेजी। राजकीय नियमों की अनुपालना में आवश्यक जानकारी के अतिरिक्त मंदिरों के निर्माण की तिथि निर्माणकर्ता का पूरा परिचय तथा महत्वपूर्ण कलाकृतियों का विवरण भी प्रबंधकों के सहयोग से हमें प्राप्त हुआ। उपलब्ध सामग्री का विस्तार से विश्लेषण किया गया, जिसका निचोड़ स्मारिका के रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

हमने सर्वप्रथम जयपुर, सांगानेर, आमेर एवं जयपुर के आस-पास के उपनगरों में स्थित 116 जैन मंदिरों के परिचय निकालने का संकल्प लिया। हमारा यह पहला प्रयास है। यदि पाठकों ने इसे सराहा तो जयपुर के आस-पास के दिगम्बर जैन मंदिरों का सर्वेक्षण कार्य भी शीघ्र हाथ में लिया जावेगा।

प्रकाशन में मंदिरों से संबंधित जिस महत्वपूर्ण सामग्री का संकलन किया गया है उसका सम्पूर्ण श्रेय पं. अनूपचन्द्रजी न्यायतीर्थ को है जिन्होंने अपने अथक परिश्रम एवं लगन के साथ मंदिरों के प्रबंधकों से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित कर आवश्यक सूचनाएँ एकत्रित की। यह कार्य अत्यधिक श्रम साध्य था। उपलब्ध सामग्री की जानकारी किस प्रकार जन-साधारण को दी जा सके - इस पर काफी समय से विचार किया जा रहा था। श्री अनूपचन्द्रजी ठोलिया के मन्त्रित्व-काल में सर्वेक्षण योजना प्रारम्भ की गई और श्री कुबेरचन्द्रजी काला के मन्त्रित्वकाल में अथक परिश्रम कर इसे संजोया गया। श्री कुबेरचन्द्रजी काला का जयपुर से बाहर स्थानान्तरण हो जाने के कारण उनका सहयोग मिलने में कठिनाई हुई और गत वर्ष कार्यकारिणी समिति के नये चुनावों से हमें श्री बाबूलालजी सेठी की सेवाएँ मंत्री के रूप में प्राप्त हुईं। श्री बाबूलालजी सेठी एक उत्साही एवं युवक कार्यकर्ता हैं। नव-निर्वाचित कार्यकारिणी की प्रथम बैठक में ही श्री कपूरचन्द्रजी पाटनी ने महासंघ के कार्य में तेजी लाने तथा संकलित सामग्री को प्रकाश में लाने का सुझाव रखा तथा निम्न चार व्यक्तियों की एक उपसमिति गठन कर शीघ्र ही योजना का प्रारूप बना कर प्रस्तुत करने को कहा गया। श्री बाबूलालजी सेठी, श्री कपूरचन्द्रजी पाटनी, श्री अनूपचन्द्रजी न्यायतीर्थ तथा मैंने बैठकर एक मंदिर परिचय स्मारिका निकालने की योजना प्रस्तुत की, जिसमें विज्ञापनों के माध्यम से तथा मंदिरों से सहायता स्वरूप राशि लेकर आर्थिक साधन जुटाना प्रमुख कार्य रहा। कार्यकारिणी समिति ने योजना की स्वीकृति दी। तदनुसार श्रुतपंचमी को स्मारिका प्रकाशित करने

का निश्चय कर कार्य प्रारम्भ किया गया; किन्तु समय पर आवश्यक सूचनाएँ तथा लेख आदि नहीं आने एव प्रेस की विवशता के कारण निश्चित समय पर स्मारिका प्रकाशित नहीं हो सकी। विलम्ब के लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

मैं सम्पादक मडल के सभी सदस्यों, मुख्यरूप से प्रबन्ध सम्पादक श्री अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ, प्रकाशक मंत्री श्री बाबूलालजी सेठी, विज्ञापन समिति के प्रमुख श्री कपूरचन्दजी पाटनी एव महेन्द्रकुमारजी पाटनी, विज्ञापनदाताओं एव मदिरो के प्रबन्धको का, जिन्होंने अपना बहुमूल्य सहयोग तथा आर्थिक सहायता दी है, सभी का आभारी हूँ।

मैं उन विद्वान लेखको का भी हृदय से आभार मानता हूँ जिन्होंने अपने महत्वपूर्ण लेख प्रकाशनार्थ भेजे हैं। मैं उन सभी सामाजिक सस्थाओं के पदाधिकारियों को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने हमारी प्रार्थना पर अपनी संस्थाओं के परिचय भेजे है।

मैं मदिरो महासंघ की कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्यों एव पदाधिकारियों का भी आभारी हूँ जिनके सहयोग एवं मार्गदर्शन से यह कार्य सानन्द सम्पन्न हुआ है।

मैं विशेषरूप से श्री ज्ञानचन्दजी खिन्दूका, डॉ. कमलचन्दजी सोगानी, डॉ. कस्तूरचन्दजी कासलीवाल, प० भंवरलालजी न्यायतीर्थ का आभार मानता हूँ जिनके सहयोग से कार्य सम्पन्न हो सका है। मैं स्मारिका के सुन्दर मुद्रण के लिये श्री सीहनलालजी, जयपुर प्रिन्टर्स एव श्री कुशलजी काला, कुशल प्रिन्टर्स को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता।

अन्त मे, उन सभी का आभार प्रदर्शित करता हूँ जिनका हमे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप मे सहयोग प्राप्त हुआ है।

पाठकों से विनम्र निवेदन है कि वे हमे अपने अमूल्य सुझाव भेजकर अनुगृहीत करें ताकि अगले प्रकाशन मे उनका उपयोग किया जा सके।

आशा है हमारा यह प्रयास पाठकों को रुचिकर लगेगा।

धन्यवाद !

रामचन्द्र कासलीवाल

## सम्पादकीय

जैन मन्दिरों की विशालता एवं संख्या की दृष्टि से जयपुर का नाम देग में सर्वोपरि गिना जाता है। विगत 263 वर्षों में एक ही नगर में 200 से अधिक मन्दिरों, गृह चैत्यालयों एवं नशियाँ का निर्माण जैन समाज के इतिहास में अपूर्व घटना है। जैन कवि श्री स्वरूपचन्द विलाला ने जद सवत् 1892 में जयपुर नगर के मन्दिरों के दर्शन किये तो उन्होंने 81 मन्दिरों के नाम गिनाये थे। इन मन्दिरों में आमेर एवं सांगानेर के मन्दिर भी सम्मिलित हैं। लेकिन इन्हीं विलालाजी ने सम्वत् 1910 अर्थात् 18 वर्ष पश्चात् जब यहाँ के मन्दिरों के पुनः दर्शन किये तो उनमें मन्दिरों की वृद्धि हुई और उनकी संख्या 84 हो गयी। सन् 1947 के पश्चात् जब उपनगर वसाये जाने लगे तो इन 42 वर्षों में इन उपनगरों में नये-नये मन्दिर बनने लगे, तो मन्दिरों की संख्या 84 से बढ़कर 116 हो गयी।

ये मन्दिर संख्या की दृष्टि के साथ-साथ विशालता, कला एवं साहित्य संग्रह की दृष्टि से भी अभूतपूर्व हैं। जो भी एक बार इन मन्दिरों के दर्शन कर लेता है वही आनन्द-विभोर होकर निर्माणकर्त्ताओं के चरण स्पर्श करने को आतुर हो उठता है, क्योंकि इन मन्दिरों से ही हमारी संस्कृति, साहित्य एवं सामाजिकता सुरक्षित रह सकी है और हमारे सांस्कृतिक गौरव में अभिवृद्धि हुई है। इन मन्दिरों का विस्तृत परिचय जानने के लिए स्थानीय एवं बाहर से आने वाले दर्शनार्थी अपनी उत्सुकता दिखाते रहते हैं लेकिन मन्दिरों के सम्बन्ध में कोई उपयुक्त पुस्तक उपलब्ध नहीं होने से वह अभाव सभी को खटकता रहता है हालांकि तीन-चार सूचियाँ सभी मन्दिरों की प्रकाशित हो चुकी हैं।

दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ की स्थापना के पश्चात् यहाँ के जयपुर शहर, आमेर एवं सांगानेर के 116 मन्दिरों में उपलब्ध सामग्री की जानकारी प्राप्त की गयी। हमें यह लिखते हुए बड़ी प्रसन्नता है कि मन्दिरों की सर्वेक्षण योजना से इन मन्दिरों की विभिन्न दृष्टियों से इतिहास, कला, शास्त्र भण्डार, मूर्तियों की प्राचीनता एवं उनकी संख्या की जानकारी एकत्रित की गयी जिसके फलस्वरूप ही प्रस्तुत प्रकाशन समाज के सामने प्रस्तुत करते हुए जैन मन्दिर महासंघ, जयपुर के सभी सदस्यों को गौरव अनुभव हो रहा है।

प्रस्तुत प्रकाशन में यहाँ के मन्दिरों के परिचय में मन्दिर का निर्माणकार्य, निर्माणकर्त्ता का नाम, मूलनायक प्रतिमा, यत्र, मन्दिरों की आम्नाय, शास्त्र भण्डार में पाण्डुलिपियों की संख्या, कलापूर्ण एवं सचित्र पाण्डुलिपियाँ, मूर्तियाँ, परिचय, भित्तिचित्र, कला एवं व्यवस्था सम्बन्धी जानकारी दी गयी है जिससे यह प्रकाशन भविष्य में इन मन्दिरों की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने में एक दस्तावेज का कार्य करेगा।

का निश्चय कर कार्य प्रारम्भ किया गया; किन्तु समय पर आवश्यक सूचनाएँ तथा लेख आदि नहीं आने एव प्रेस की विवशता के कारण निश्चित समय पर स्मारिका प्रकाशित नहीं हो सकी। विलम्ब के लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

मैं सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों, मुख्यरूप से प्रबन्ध सम्पादक श्री अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ, प्रकाशक मंत्री श्री बाबूलालजी सेठी, विज्ञापन समिति के प्रमुख श्री कपूरचन्दजी पाटनी एव महेन्द्रकुमारजी पाटनी, विज्ञापनदाताओं एव मदिरों के प्रबन्धको का, जिन्होंने अपना बहुमूल्य सहयोग तथा आर्थिक सहायता दी है, सभी का आभारी हूँ।

मैं उन विद्वान लेखको का भी हृदय से आभार मानता हूँ जिन्होंने अपने महत्वपूर्ण लेख प्रकाशनार्थ भेजे हैं। मैं उन सभी सामाजिक सस्थाओं के पदाधिकारियों को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने हमारी प्रार्थना पर अपनी सस्थाओं के परिचय भेजे हैं।

मैं मंदिर महासंघ की कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्यों एव पदाधिकारियों का भी आभारी हूँ जिनके सहयोग एवं मार्गदर्शन से यह कार्य सानन्द सम्पन्न हुआ है।

मैं विशेषरूप से श्री ज्ञानचन्दजी खिन्दूका, डॉ. कमलचन्दजी सोगानी, डॉ. कस्तूरचन्दजी कासलीवाल, प० भवरलालजी न्यायतीर्थ का आभार मानता हूँ जिनके सहयोग से कार्य सम्पन्न हो सका है। मैं स्मारिका के सुन्दर मुद्रण के लिये श्री सोहनलालजी, जयपुर प्रिन्टर्स एवं श्री कुशलजी काला, कुशल प्रिन्टर्स को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता।

अन्त में, उन सभी का आभार प्रदर्शित करता हूँ जिनका हमें प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में सहयोग प्राप्त हुआ है।

पाठकों से विनम्र निवेदन है कि वे हमें अपने अमूल्य सुझाव भेजकर अनुगृहीत करें ताकि अगले प्रकाशन में उनका उपयोग किया जा सके।

आशा है हमारा यह प्रयास पाठकों को रुचिकर लगेगा।

धन्यवाद !

रामचन्द्र कासलीवाल

## प्रकाशन सामग्री

जयपुर के इन मंदिरों की विशेषताओं को जन-साधारण तक पहुँचाने की दृष्टि से प्रस्तुत पुस्तक में विद्वानों के कुछ उपयोगी लेख भी दिये हैं जो इन मंदिरों में विराजमान यंत्रों के महत्त्व पर शास्त्र भण्डारी पर भक्ति चित्र एवं मूर्तिकला तथा व्यवस्था मन्त्री एवं राजकीय नियमों पर विशेष प्रकाश डालते हैं ।

पुस्तक को दर्शनार्थियों के लिए विशेष उपयोगी बनाने हेतु चोकरों के अनुसार मंदिरों के मानचित्र एवं उनमें पहुँचने के मार्ग को अंकित किया गया है. साथ ही वे जयपुर एवं उपनगरों, सांगानेर एवं आमेर के मंदिरों का पूरा परिचय दिया गया है जिससे भविष्य के लिये इन मंदिरों का इतिहास सुरक्षित रह सके ।

### चित्रखंड, तीर्थ क्षेत्र, संस्थाएँ

यहाँ के मंदिर विशाल एवं कलापूर्ण हैं । चित्रों के माध्यम से कलाकृतियों की जानकारी देने हेतु चित्रखण्ड में चित्रों की जानकारी दी गई है ।

राजस्थान में यद्यपि कोई निर्वाण क्षेत्र अथवा कल्याणक क्षेत्र नहीं है किन्तु अतिशय क्षेत्र एवं दर्शनीय क्षेत्रों की कमी नहीं है । प्रस्तुत स्मारिका में जानकारी हेतु राजस्थान के दिग्म्बर जैन तीर्थों का भी परिचय देकर उसे उपयोगी बनाया गया है ।

जयपुर में अनेक दिग्म्बर जैन सामाजिक संस्थाएँ हैं । पाठकों की जानकारी हेतु एक खंड में उन्हें भी सजाया गया है ।

प्रस्तुत प्रकाशन की योजना को तैयार करने में तथा उसकी क्रियान्विति में अध्यक्ष, मंत्री एवं सदस्यों का जो योगदान रहा वह सराहनीय है । मंदिरों के प्रबन्धकों ने भी अपने मंदिरों का जो परिचय तैयार कर भिजवाया है उसके लिये हम सभी का आभार व्यक्त करते हैं । सम्पादक मंडल उन सभी विद्वानों का जिनने मंदिरों के सम्बन्ध में अपने महत्त्वपूर्ण निबन्ध लिखकर पुस्तक को सर्वोपयोगी बनाने में जो योगदान दिया उसके लिये पूर्ण आभारी हैं ।

अनूपचन्द न्यायतीर्थ  
भँवरलाल न्यायतीर्थ  
कस्तूरचन्द कासलीवाल  
कमलचन्द सौगानी  
ज्ञानचन्द खिन्दूका  
(सम्पादक मण्डल)

## मन्दिरों का क्रमिक निर्माण

महाराजा सवाई जयसिंह द्वारा संवत् 1784 में जयपुर बसाने के साथ ही यहाँ आमेर एवं सांगानेर व आस-पास से जैन परिवार आकर बसने लगे और तभी से मन्दिर निर्माण का कार्य प्रारम्भ हुआ। चाकसू का मन्दिर तो तत्कालीन दीवान राव कृपारामजी ने संवत् 1782 में ही बनवाना प्रारम्भ कर दिया। इसके पश्चात् संवत् 1784 से 1800 तक महाराजा सवाई जयसिंह के शासनकाल में पाटोदी का मन्दिर, लश्कर का, सधीजी का, सागांको का, बघीचन्दजी का, तेरहपंथी बड़ा मन्दिर, लूणकरणजी पाड्या का मन्दिर, पापल्यों का, बूचरों का, सिवाड़ का, पहाड़ियों का, जोबनेर का एव बास गोधान का इस प्रकार इन 17 मन्दिरों का निर्माण प्रथम चरण में हुआ। उनमें अधिकांश मन्दिर विशाल एवं कलापूर्ण तथा दर्शनीय हैं।

इन मन्दिरों के पश्चात् संवत् 1801 से संवत् 1892 तक महाराजा सवाई ईश्वरी-सिंह, माधोसिंह, पृथ्वीसिंह, प्रतापसिंह, जगतसिंह एव सवाई जयसिंह (तृतीय) का शासन रहा। कोई भी महाराजा अधिक वर्षों तक शासन नहीं कर पाये, फिर भी उनके शासन काल में 64 नये मन्दिरों का निर्माण हो सका। लेकिन इन राजाओं के राज्य में साम्प्रदायिक ताकतों ने अधिक जोर पकड़ा और इसमें जैन मन्दिरों को पर्याप्त हानि उठानी पड़ी। अनेक मन्दिर तोड़े गये और उनमें शिवपिंड स्थापित करके उन पर जबरन कब्जा कर लिया गया। लेकिन जैसे ही शान्ति हुई मन्दिरों का निर्माण फिर होने लगा और आज भी उसी तरह चल रहा है।

## चार पंचायती मन्दिर

अन्य जगह की तरह जयपुर में भी समाज में पंचायत की व्यवस्था थी। पंचायत बीसपथ तथा तेरहपंथ के दो घड़ों में बटी हुई थी तथा दोनों पंचायतों के दो-दो मन्दिर थे। पाटोदी तथा चाकसू का मन्दिर, बीसपंथ तथा तेरहपंथी बड़ा मन्दिर एव बघीचन्दजी का मन्दिर तेरहपंथ आम्नाय के थे। शेष सभी मन्दिर इन्हीं की आम्नाय के अनुसार थे। पाटोदी का मन्दिर बीसपंथ आम्नाय का प्रमुख मन्दिर था जहाँ आमेर से भट्टारक गद्दी स्थानान्तरित हुई। कालांतर में बघीचन्दजी का मन्दिर, पंडित टोडरमलजी के पुत्र गुमानी राम के द्वारा चलाये गये गुमानपथ (तेरहपंथ का विशुद्ध रूप) का कहलाया।

## मन्दिरों का नामकरण

जयपुर में मन्दिरों की यह एक विशेषता रही है कि उनका नामकरण निर्माणकर्त्ताओं के नाम पर, उनके गोत्रों के नाम पर, गाँवों के नाम पर होता रहा है। दीवानों के नाम पर, पांड्या, जाति एवं पंडितों के नाम से भी यहाँ के मन्दिर जाने जाते हैं। गोत्रों के नाम से विख्यात मन्दिरों की संख्या सबसे अधिक है। इनमें खिन्दूको का, बजो का, पाटोदी का, ठोलियों का, सोनियों का, गोघो का, कालो का, छाबड़ों का, सागांकों का, सधीजी का (मालावतो) के अतिरिक्त गाँवों के नाम पर लश्कर, फागी, चाकसू, काला-डेरा, जोबनेर, सिवाड़ के मन्दिरों के नाम का उल्लेख किया जा सकता है। मन्दिरों के नामकरण की ऐसी परम्परा अन्यत्र नहीं मिलती।

## प्रकाशन में आर्थिक सहयोग

नाम सहयोगी	राशि रुपयों में	नाम सहयोगी	राशि रुपयों में
श्री साहू श्रेयास प्रसादजी जैन, ववई	5000	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर मिन्मोग्रियान,	
पचायत श्री दिगम्बर जैन मन्दिर,		जयपुर	501
बगरुवालान, जयपुर	1501	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चागागू, जयपुर	501
श्री दिगम्बर जैन चैरिटेबिल ट्रस्ट		श्री दिगम्बर जैन मन्दिर रनि यमोदानदजी	501
मलजी खोगालाल, जयपुर	1500	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पापल्यान, जयपुर	501
श्रीमती अजनादेवीजी लुहाडिया		श्री दिगम्बर जैन मन्दिर टोन्नियान, जयपुर	501
घ प चिरजीलालजी लुहाडिया	1111	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर वधीनदानी दीवान,	
श्री गजकुमार ब्रदर्स, 5-धर्मतल्ला स्ट्रीट		जयपुर	501
कलकत्ता	1101	श्री हरकचंद मुमेरचंद पाट्या	
(सेठ लखमीचंदजी सर्वमुखदासजी के		कुचामन वाले (मतोप रोडवेज), जयपुर	501
वशज श्री देवकुमार गजकुमार, दिगम्बर		दि जैन मन्दिर पाटोदी, जयपुर	501
जैन नसियां खजाचीजी, ससारचन्द्र रोड		ग्रामाम होटल, जयपुर	501
जयपुर)		श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बडा तेरहपयियान,	
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कालाडोरा		जयपुर	501
(महावीर स्वामी) जयपुर	1001	श्री राजीव पुत्र श्री एके जैन, जयपुर	500
श्री दिनेश कुमारजी पापडीवाल, जयपुर	1001	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर दीवान अमरचंदजी	500
श्री दिगम्बर जैन नसिया ट्रस्ट, जयपुर		श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सगहीजी, जयपुर	351
दीवान उदयलालजी, जयपुर	1000	श्री दिगम्बर जैन नसियांसगही हीरालालजी	301
श्री बडजात्या चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर	1000	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर लूणकरणजी पाड्या	301
श्री फूलचन्दजी छाबडा, जयपुर	1000	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर फागी का, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय,		श्री दिगम्बर जैन मन्दिर घिराही, जयपुर	301
ठोलिया निवास, चितरजन मार्ग, जयपुर	1000	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सेठी कॉलोनी,	
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर गढमलजी बैनाडा,		जयपुर	301
जयपुर	1000	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर छावडान, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पाशर्वनाथजी		श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जवाहरनगर, जयपुर	301
(सोनियान), जयपुर	1000	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सागाकान, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर आदिनाथजी		श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पहाडियान, जयपुर	251
(खोजान), जयपुर	652	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर खिन्दुकान, जयपुर	251
प टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर	601	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर कालान, जयपुर	251
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्श नगर,		श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बडा दीवानजी	251
जयपुर	600	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर दारोगाजी, जयपुर	250
श्री आदिनाथ मेडीकल स्टोर, जयपुर	600	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बाई कुशलमतिजी,	
		जयपुर	201

# आभार

दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ की स्थापना दिगम्बर जैन मंदिरों के चहुँमुखी विकास में सहयोग देने हेतु वर्ष, 1982 में हुई, किन्तु महासंघ को अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में अर्थाभाव के कारण उतनी सफलता नहीं मिली जितनी अपेक्षित थी। आज के युग में बिना आर्थिक साधन के किसी भी कार्य का सम्पादन होना असम्भव न हो तो कठिन अवश्य है। अतः कार्यकारिणी समिति ने एक स्मारिका प्रकाशन करने का निर्णय लिया है। स्मारिका में महासंघ का परिचय, जयपुर नगर में स्थित दिगम्बर जैन मंदिरों की जानकारी, राजस्थान में दिगम्बर जैन तीर्थों के बारे में सूचनाओं का सकलन एवं जयपुर की दिगम्बर जैन सस्थाओं का परिचय प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। स्मारिका में महासंघ के कार्यक्रमों की गति और मूर्तरूप देने के लिए अर्थ संग्रह के लिए विज्ञापन एकत्रित करने का भी निर्णय लिया है। मुझे यह बताते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि इस कार्य के लिए सभी क्षेत्रों से मुझे पूरा सहयोग मिला जिससे ही कार्यकारिणी समिति द्वारा निर्धारित लक्ष्य को पूरा किया जा सका। उन समस्त प्रतिष्ठानों के महानुभावों का जिन्होंने अपने विज्ञापन के आदेश देकर आर्थिक सहयोग प्रदान किया, मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

मंदिरों के सभी प्रबन्धकों का जिन्होंने मंदिरों के सम्बन्ध में परिचय आदि भेजकर जानकारी उपलब्ध करायी, आर्थिक सहयोग प्रदान किया तथा मार्गदर्शन किया उन सबका हृदय से आभारी हूँ।

मैं उन सभी विद्वान लेखकों का जिन्होंने अपने बहुमूल्य विचारों से स्मारिका की उपयोगिता बढ़ायी एवं अनेक सुझावों से लाभान्वित किया, साधुवाद देता हूँ।

स्मारिका की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मंदिर परिचय खण्ड है जिसके लिए स्मारिका के सम्पादक श्री अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ की जितनी प्रशंसा की जाये कम है। उन्होंने मंदिरों के प्रबन्धकों से निरन्तर व्यक्तिगत सम्पर्क कर परिचय सामग्री एकत्रित की तथा लिपिबद्ध कर मूर्तरूप दिया। मैं सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों एवं परामर्शदाताओं का आभार प्रगट किये बिना भी नहीं रह सकता जिनके सहयोग एवं मार्गदर्शन से यह सुन्दर प्रकाशन हो सका है।

मैं महासंघ के अध्यक्ष श्री रामचन्द्रजी कासलीवाल, मंत्री श्री बाबूलालजी सेठी तथा कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्यों का आभारी हूँ जिनकी सत्प्रेरणा एवं मार्गदर्शन तथा सक्रिय सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हो सका है।

मैं अर्थ समिति के सभी सदस्यों एवं मेरे अनन्य सहयोगी श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी, श्री बलभद्रकुमारजी जैन को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने अपना अमूल्य समय अर्थसंग्रह में लगाया।

## प्रकाशन में आर्थिक सहयोग

नाम सहयोगी	राशि रुपयों में	नाम सहयोगी	राशि रुपयों में
श्री साहू श्रेयास प्रसादजी जैन, बवई	5000	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर मिर्मांगियान, जयपुर	501
पचायत श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बगछ्वालान, जयपुर	1501	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर नारगु, जयपुर	501
श्री दिगम्बर जैन चैरिटेबिल ट्रस्ट		श्री दिगम्बर जैन मन्दिर यनि यमोमानदजी	501
मलजी छोगालाल, जयपुर	1500	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पापल्भान, जयपुर	501
श्रीमती अजनादेवीजी लुहाडिया		श्री दिगम्बर जैन मन्दिर टोत्रियान, जयपुर	501
घ प चिरजीलालजी लुहाडिया	1111	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बर्धोणदनी दीवान, जयपुर	501
श्री गजकुमार ब्रदर्स, 5-धर्मतला स्ट्रीट कलकता	1101	श्री हरकचद मुमेरचद पाट्या कुचामन बाने (मतोप रोडवेज), जयपुर	501
(सेठ लखमीचंदजी सर्वसुखदासजी के वशज श्री देवकुमार गजकुमार, दिगम्बर जैन नसियां खजाचीजी, समारचन्द्र रोड जयपुर)		दि जैन मन्दिर पाटोदी, जयपुर	501
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कालाडेर		श्रीमाम होटल, जयपुर	501
(महावीर स्वामी) जयपुर	1001	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बडा तेरहपयियान, जयपुर	501
श्री दिनेश कुमारजी पापडीवाल, जयपुर	1001	श्री राजीव पुत्र श्री ए के जैन, जयपुर	500
श्री दिगम्बर जैन नसिया ट्रस्ट, जयपुर		श्री दिगम्बर जैन मन्दिर दीवान अमरचंदजी	500
दीवान उदयलालजी, जयपुर	1000	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर भगहीजी, जयपुर	351
श्री बडजात्या चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर	1000	श्री दिगम्बर जैन नसियामगही हीरालालजी	301
श्री फूलचन्दजी छावडा, जयपुर	1000	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर लूणकरराजी पाट्या	301
श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय,		श्री दिगम्बर जैन मन्दिर फागी का, जयपुर	301
डोलिया निवास, चितरजन मार्ग, जयपुर	1000	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर घिसोही, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर गढमलजी बैनाडा, जयपुर	1000	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर मेठी कॉलोनी, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथजी (सोनियान), जयपुर	1000	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर छावडान, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर आदिनाथजी (खोजान), जयपुर	652	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जवाहरनगर, जयपुर	301
प टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर	601	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सांगाकान, जयपुर	301
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्श नगर, जयपुर	600	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पहाडियान, जयपुर	251
श्री आदिनाथ मेडीकल स्टोर, जयपुर	600	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर खिन्डूकान, जयपुर	251
		श्री दिगम्बर जैन मन्दिर कालान, जयपुर	251
		श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बडा दीवानजी	251
		श्री दिगम्बर जैन मन्दिर वारोगाजी, जयपुर	250
		श्री दिगम्बर जैन मन्दिर वार्ड कुशलमतिजी, जयपुर	201

नाम सहयोगी	राशि रूपयों में
श्री दिगम्बर जैन मंदिर आदिनाथजी (बख्शीजी), जयपुर	201
श्री दिगम्बर जैन मंदिर चौघरिधान, जयपुर	201
श्री दिगम्बर जैन मंदिर मेघराजजी लुहाड़िया, जयपुर	201
श्री दिगम्बर जैन मंदिर चपारामजी पाड़्या	201
श्री दिगम्बर जैन मंदिर जीऊवाड़, जयपुर	201
श्री मवरलालजी खिन्दूका, जयपुर	201
श्री दिगम्बर जैन मंदिर मुशरफान, जयपुर	200
श्री दिगम्बर जैन मंदिर नया बैराठियो का	151
श्री दिगम्बर जैन मंदिर ईश्वरलालजी गोघा	151

नाम सहयोगी	राशि रूपयों में
श्री दिगम्बर जैन मंदिर वेगस्यान, जयपुर	151
श्री दिगम्बर जैन मंदिर भूराजी, जयपुर	151
श्री दिगम्बर जैन मंदिर वास गोघान ,,	151
श्री दिनेश एग्नो इडस्ट्रीज, जयपुर	101
श्री दीप्ति टेक्सटाइल्स, जयपुर	101
श्री दिगम्बर जैन मंदिर मारूजी, जयपुर	101
श्री दिगम्बर जैन मंदिर सिवाड बालो का ,,	101
श्री दिगम्बर जैन मंदिर वाकलीवालान ,,	101
श्री दिगम्बर जैन मंदिर कासलीवाल वैनाडान, जयपुर	101
श्री महावीर जिनालय, तिलकनगर	101
श्री दिगम्बर जैन मंदिर लशकर का	100

# श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ, जयपुर

## एक परिचय

मंदिर धर्म एवं सामाजिक संस्कृति के आधार-स्तम्भ हैं। ये ऐसे केन्द्र हैं जहाँ से मानव को सुचारित्र जीवन जीने की प्रेरणा एवं आत्मशुद्धि की ओर अग्रसर होने का अवसर प्राप्त होता है जो जीवन का सनातन लक्ष्य है। भौतिकता प्रधान वर्तमान युग के संदर्भ में इनका विशिष्ट महत्त्व हो जाता है। जैन संस्कृति के प्रतीक चिह्नों में प्रतिदिन देवदर्शन भी एक चिह्न है, जिसका एक उद्देश्य इस सामाजिक धरोहर की रक्षा भी है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस प्रतीक चिह्न की अनुपालना में गिरावट तथा राजकीय नियमों का हस्तक्षेप इन सामाजिक धरोहरों की रक्षा में रुकावट है। अतः इनकी सुरक्षा हेतु एक संगठन की आवश्यकता प्रतीत हुई।

मंदिरों में उपलब्ध प्रतिमाओं, साहित्य भण्डारों, यंत्रों, वेजोड कलाकृतियों तथा अन्य निधियों की जानकारी प्राप्त कर उनके समुचित संरक्षण हेतु मांगदर्शन करने एवं व्यवस्थापकों को वर्तमान के विभिन्न राजकीय नियमों की अनुपालना में, आंतरिक व्यवस्था में बिना किसी हस्तक्षेप के, यथासम्भव सहयोग प्रदान करने के लक्ष्य से श्री दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ, जयपुर की स्थापना की गई। अगस्त 1982 में राजस्थान सस्था रजिस्ट्रीकरण अधिनियम के अन्तर्गत इसे पंजीकृत कराया गया। इसकी स्थापना में स्वर्गीय श्री मोहनलालजी काला एवं श्री मुन्नीलालजी अजमेरा ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सस्था का अपना विधान है जिसके अनुसार सस्थापक सदस्य एवं दिगम्बर जैन मंदिर सस्था सदस्य हैं। कार्यकारिणी समिति में वर्तमान में 9 सस्थापक सदस्य, 13 संस्था सदस्य एवं 3 अभ्यर्थित सदस्य हैं, जिनका विवरण सलग्न परिशिष्ट में है।

महासंघ ने अपना प्रथम कार्य-क्षेत्र जयपुर को चुना, जहाँ नगर व उपनगरों में लगभग 200 दिगम्बर जैन मंदिर, नशिया एवं चैत्यालय हैं। इनमें विशाल एवं मनोज्ञ तीर्थंकर प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं। इसके अतिरिक्त शास्त्र भण्डारों में दुर्लभ धर्म-ग्रंथ, धार्मिक भावों के भित्ति चित्र, प्रस्तर में उत्कीर्ण अपूर्व एवं दुर्लभ धर्म दृश्य हैं जो सभी कला एवं संस्कृति के प्रतीक हैं। महासंघ ने विभिन्न कार्य प्रवृत्तियाँ अपने हाथ में ली, जिनमें निम्नलिखित मुख्य हैं :-

- ❖ जयपुर नगर के सभी दिगम्बर जैन मंदिरों की एक सर्वेक्षण योजना बनाई जिसके अन्तर्गत एक विस्तृत प्रश्नावली बनाकर मंदिरों के सबंध में सभी प्रकार की जानकारी, जैसे मंदिर निर्माणकर्ता का नाम, निर्माणकाल, मूर्तियों, यंत्रों, शास्त्र भण्डारों, भित्ति चित्रों, कलाकृतियों एवं व्यवस्था सबंधी विवरण प्राप्त किया।

- ❖ “दी एन्टीक्विटीज एण्ड आर्ट ट्रेजस एक्ट” के अन्तर्गत की जाने वाली कार्यवाही के सबध में सभी मंदिरों को जानकारी दी एव सहयोग देकर कार्य पूरा कराया ।
- ❖ मंदिरों की संपत्ति को किराया नियंत्रण कानून से मुक्त कराने हेतु महासंघ का शिष्ट-मंडल मुख्य मंत्री, राजस्थान सरकार, से मिलकर दो बार ज्ञापन दिया जिसके फलस्वरूप राजस्थान विधान सभा में आवश्यक बिल विचाराधीन है तथा जिसके स्वीकृत हो जाने पर मंदिरों की संपत्ति उक्त कानून से मुक्त हो जावेगी ।
- ❖ मंदिरों में होने वाली चोरियों के बारे में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कराने एवं चोरियों का माल बरामद कराने हेतु समय-समय पर महासंघ के तत्त्वावधान में शिष्टमंडल गृहमंत्री से मिला एव ज्ञापन प्रस्तुत किया । मंदिरों के व्यवस्थापकों से भी इस हेतु आवश्यक कदम उठाने के लिए मार्गदर्शन किया ।
- ❖ राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम की पालना हेतु महासंघ ने विधि परामर्शदात्री समिति का गठन किया, जिसने सभी मंदिरों के प्रबन्ध में एकसूत्रता लाने के लिये आदर्श विधान का प्रारूप बना सभी मंदिरों के प्रबन्धकों के मार्गदर्शन हेतु भिजवाया ।
- ❖ मंदिरों के आधिपत्य, सम्पत्ति सबधो तथा अन्य विवादो को न्यायालय से परे रखकर सबधित पक्षों से वार्ता कर सुलभाने का प्रयास किया ।
- ❖ मंदिरों में उपलब्ध यंत्रों का विस्तृत सर्वेक्षण कार्य कर पूर्ण जानकारी प्राप्त की एव इन यंत्रों की महत्ता एवं उपयोगिता के संबंध में शोध-कार्य हेतु इस विषय में विद्वानों से सम्पर्क किया ।

महासंघ के समक्ष निम्नांकित भावी योजनाएँ एवं कार्यक्रम हैं :-

- ❖ जयपुर जिले के स्तर पर समस्त दिगम्बर जैन मंदिरों का सर्वेक्षण कार्य एवं उसको लिपिबद्ध कर सब को जानकारी हेतु सुलभ कराना ।
- ❖ कलाकृतियों, भित्ति चित्रों आदि की वीडियो फिल्म बनाकर सर्वसाधारण को जानकारी हेतु सुलभ कराना ।
- ❖ मंदिरों के पंजीकरण कार्य को पूरा कराने की दिशा में विधि परामर्श एवं मार्गदर्शन देना ।
- ❖ मंदिरों में विराजमान यंत्रों पर शोध-कार्य कराना ।
- ❖ मंदिरों में जीर्णोद्धार की जानकारी प्राप्त कर आवश्यक सुधार कार्य कराना ।
- ❖ जैन धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु संगोष्ठियों एवं सेमिनार आदि का आयोजन कराना ।
- ❖ धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक सगठनों की जानकारी प्राप्त कर इन्हें एक सूत्र में समाज के सर्वांगीण विकास हेतु योजनाएँ बनाकर प्रतिबद्ध करना ।

❁ विवाह एवं स्वर्गवास के अवसर पर व्यक्ति मंदिर संस्थाओं को आर्थिक सहयोग की राशि देना चाहते हैं परन्तु विस्तृत क्षेत्र एवं प्रबन्धको का समय पर मंदिर में न मिलने के कारण कठिनाई होती है। महासघ सभी मंदिरों की ओर से ऐसे महानुभावों से राशि संगृहीत कर उन्हें सवधित मंदिरों में वितरण करने की प्रक्रिया चालू करने हेतु भी प्रयत्नशील है।

❁ तीये की बैठक में मंदिरों में अच्छा जनसमुदाय एकत्रित होता है। इस अवसर पर मंदिरों में वैराग्य भावना/आत्मसंवोधन/तत्त्वविवेचन सवधी कार्यक्रम के अभाव में सांसारिक कार्यों के बारे में ही वात्सलाप चालू रहता है। इस कमी को दूर करने हेतु टेप-रिकॉडिंग के माध्यम से आत्मसंवोधन/तत्त्वज्ञान विचारों का प्रसारित करना।

संस्था अभी शैशवकाल में है। प्रारंभ में सर्वेक्षण कार्य में मंदिरों से जानकारी प्राप्त करने में बहुत कठिनाइयाँ आईं, परन्तु शनैः-शनैः इस कार्य की महत्ता की जानकारी आने पर मंदिरों के प्रबन्धको ने आवश्यक जानकारी उपलब्ध करायी है।

सभी का सक्रिय सहयोग प्राप्त कर इस सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा एवं समाज के सर्वांगीण विकास में क्रियात्मक कदम उठाने हेतु महासघ कृत-सकल्प है।

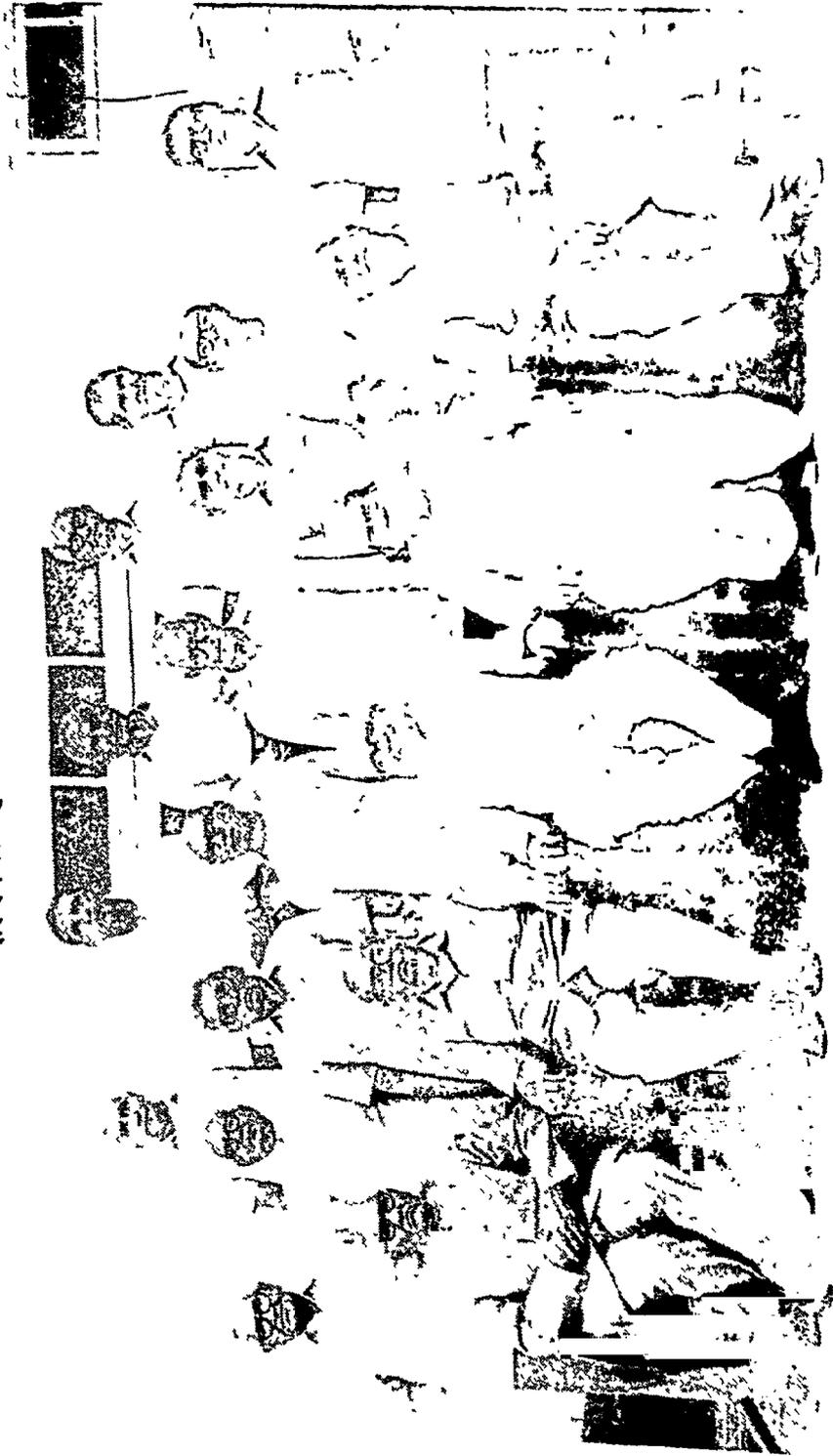
— वावूलाल सेठी  
मानद् मंत्री

- ❖ "दो एन्टीविब्रटीज एण्ड आर्ट ट्रेजस एक्ट" के अन्तर्गत की जाने वाली कार्यवाही के सबब में सभी मंदिरों को जानकारी दी एवं सहयोग देकर कार्य पूरा कराया ।
- ❖ मंदिरों की संपत्ति को किराया नियंत्रण कानून से मुक्त कराने हेतु महासंघ का शिष्ट-मंडल मुख्य मंत्री, राजस्थान सरकार, से मिलकर दो बार ज्ञापन दिया जिसके फलस्वरूप राजस्थान विधान सभा में आवश्यक बिल विचाराधीन है तथा जिसके स्वीकृत हो जाने पर मंदिरों की संपत्ति उक्त कानून से मुक्त हो जावेगी ।
- ❖ मंदिरों में होने वाली चोरियों के बारे में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कराने एवं चोरियों का माल बरामद कराने हेतु समय-समय पर महासंघ के तत्वावधान में शिष्टमंडल गृहमंत्री से मिला एवं ज्ञापन प्रस्तुत किया । मंदिरों के व्यवस्थापकों से भी इस हेतु आवश्यक कदम उठाने के लिए मार्गदर्शन किया ।
- ❖ राजस्थान सार्वजनिक प्रत्यास अधिनियम की पालना हेतु महासंघ ने विधि परामर्शदात्री समिति का गठन किया, जिसने सभी मंदिरों के प्रबन्ध में एकसूत्रता लाने के लिये आदर्श विधान का प्रारूप बना सभी मंदिरों के प्रबन्धकों के मार्गदर्शन हेतु भिजवाया ।
- ❖ मंदिरों के आधिपत्य, सम्पत्ति सबधी तथा अन्य विवादों को न्यायालय से परे रखकर सबधित पक्षों से वार्ता कर सुलझाने का प्रयास किया ।
- ❖ मंदिरों में उपलब्ध यंत्रों का विस्तृत सर्वेक्षण कार्य कर पूर्ण जानकारी प्राप्त की एवं इन यंत्रों की महत्ता एवं उपयोगिता के सबब में शोध-कार्य हेतु इस विषय में विद्वानों से सम्पर्क किया ।

महासंघ के समक्ष निम्नांकित भावी योजनाएँ एवं कार्यक्रम हैं :-

- ❖ जयपुर जिले के स्तर पर समस्त दिगम्बर जैन मंदिरों का सर्वेक्षण कार्य एवं उसको लिपिबद्ध कर सब को जानकारी हेतु सुलभ कराना ।
- ❖ कलाकृतियों, भित्ति चित्रों आदि की वीडियो फिल्म बनाकर सर्वसाधारण को जानकारी हेतु सुलभ कराना ।
- ❖ मंदिरों के पंजीकरण कार्य को पूरा कराने की दिशा में विधि परामर्श एवं मार्ग-दर्शन देना ।
- ❖ मंदिरों में विराजमान यंत्रों पर शोध-कार्य कराना ।
- ❖ मंदिरों में जीर्णोद्धार की जानकारी प्राप्त कर आवश्यक सुधार कार्य कराना ।
- ❖ जैन धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु संगोष्ठियों एवं सेमिनार आदि का आयोजन कराना ।
- ❖ धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठनों की जानकारी प्राप्त कर उन्हें एक सूत्र में समाज के सर्वांगीण विकास हेतु योजनाएँ बनाकर प्रतिबद्ध कराना ।

कार्यकारिणी समिति 1989-92

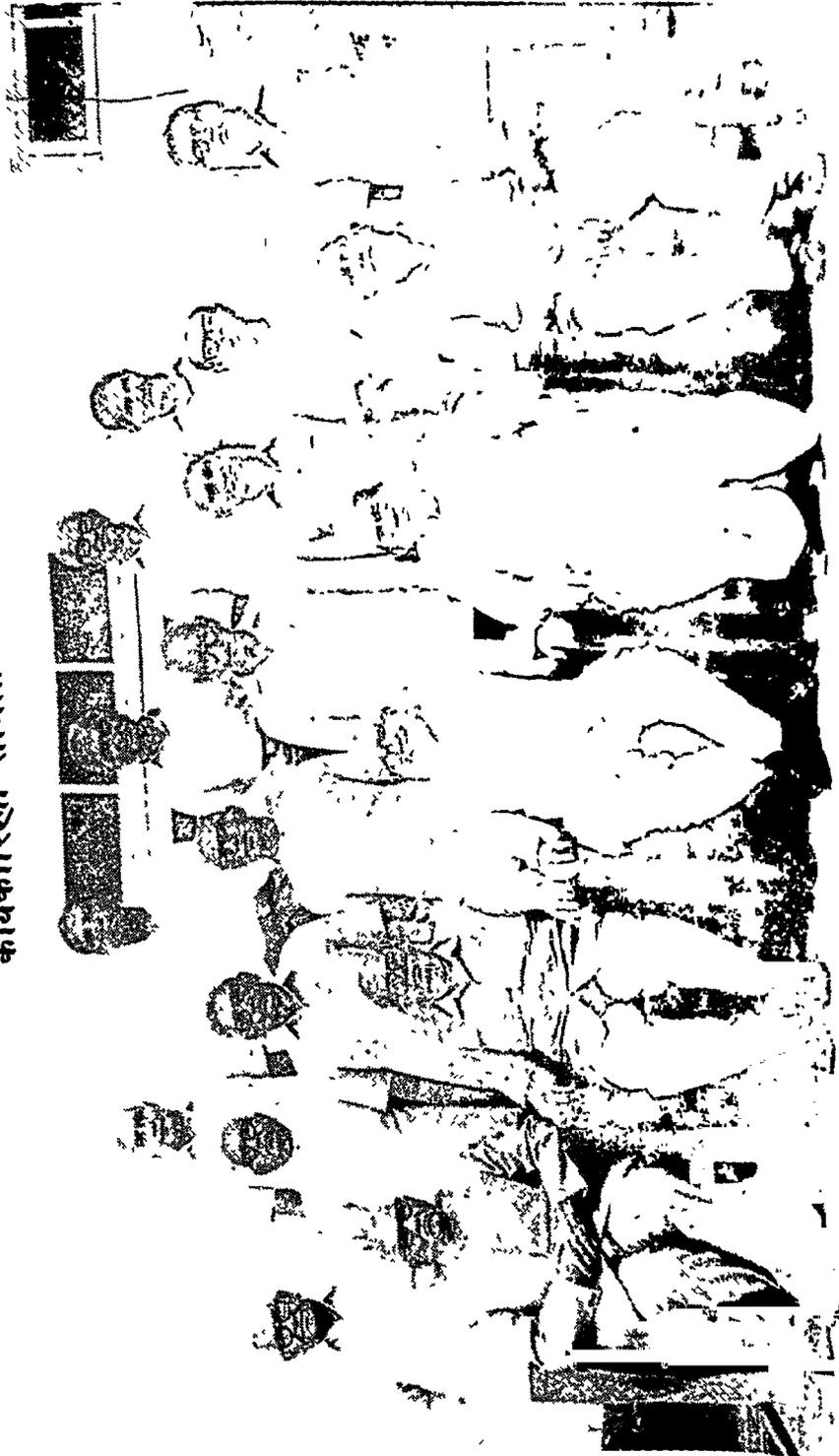


श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ, जयपुर

## कार्यकारिणी समिति

1. श्री रामचन्द्र कासलीवाल	अध्यक्ष
2. श्री भंवरलाल न्यायतीर्थ	उपाध्यक्ष
3. श्री बाबूलाल सेठी	मन्त्री
4. श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ	सं. मन्त्री
5. श्री बलभद्रकुमार जैन	कोषाध्यक्ष
6. श्री ज्ञानचन्द खिन्दूका	सदस्य
7. श्री कपूरचन्द पाटनी	"
8. डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल	"
9. श्री जयकुमार छाबड़ा	"
10. श्री अनूपचन्द ठोलिया	"
11. श्री नरेन्द्रमोहन ङण्डिया	"
12. श्री सूरजमल बैद	"
13. श्री विद्यानन्द काला	"
14. श्री कपूरचन्द काला	"
15. श्री केवलचन्द ठोलिया	"
16. श्री ताराचन्द पाटनी	"
17. श्री विजयचन्द जैन	"
18. श्री चिरजीलाल लुहाड़िया	"
19. श्री कुबेरचन्द काला	"
20. श्री नाथूलाल गोदीका	"
21. श्री कुन्दनमल बगड़ा	"
22. श्री राजकुमार कासलीवाल	"
23. श्री हरकचन्द सौगाणी	"
24. श्री नरेन्द्रकुमार पापड़ीवाल	"

कार्यकारिणी समिति 1989-92



# प्रथम खण्ड



## मंदिर दर्शन

	पृ० सं०
मंदिर/चैत्यालयो की मूची	1-11i
मार्गदर्शक मानचित्र	
जिनेन्द्र वन्दना	1
चैत्य-चैत्यालयो की वन्दना	3-8
परिचय दिगम्बर जैन मंदिर जयपुर	
चौकडी घाट दरवाजा	9-29
चौकडी तोपखाना हज़ूरी	29-30
चौकडी रामचन्द्रजी	30-32
चौकडी विश्वेश्वरजी	32-35
चौकडी मोदीखाना	35-57
चौकडी तोपखाना देस	58-63
चौकडी पुरानी वस्ती	64-65
चौकडी हवाली गहर	65-92
ग्रामेर	93-100
सामानेर	100-104

आगमहीणो समणो खवेदि कम्मए किध ?

आगम से हीन श्रमण ( साधु ) कर्मो का  
क्षय कैसे कर सकता है ?



*With best compliments from :*



**THOLIA FINANCE & LEASING (P) Ltd.**

*Regd. Office :* **THOLIA MANSION**

**GHEEWALON KA RASTA**

**JOHARI BAZAR, JAIPUR - 302003**

**Rajendra Kumar Tholia**  
*Chairman*

**Sudeep Tholia**  
*M Director*

## जयपुर के दिगम्बर जैन मन्दिर तथा चैत्यालयों की सूची

क्र.सं.	नाम मन्दिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
<b>चौकड़ी घाट दरवाजा</b>				
1.	दि० जैन मंदिर ठोलियान		धी वाली का रास्ता, दूसरा चौराहा	सगमरमर में गुम्दर कार्य, विल्लोर की प्रतिमाएँ
2.	दि० जैन मंदिर दीवान बघीचंदजी साह		धी वाली का रास्ता, दूसरा चौराहा (गुमान पथी पचायती मंदिर)	गुम्बज में मोने का वारीक काम, ममवमरणा रचना, भर्कृपिम चैत्यालय रचना, टोडरमलजी का मोक्ष-मार्ग प्रकाशक मूलप्रति, विशाल शास्त्र बण्जार
3.	दि० जैन मंदिर नया बैराठियों का चैत्यालय चांदूबालजी गंगवाल (1)		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, पीपली महादेव का चौराहा	सचित्र ग्रथ, काष्ठा सघी मन्दिर
4.	दि० जैन मंदिर गोघान		गंगवाल भवन, नागोरियों का चौक नागोरियों का चौक	चौक में प्रवेश द्वार पर सुन्दर पच्चीकारी
5.	दि० जैन मंदिर (चन्द्र-प्रभ स्वामी) चौधरियों का चैत्यालय सौगाणियों का (2)		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, चौथा चौराहा, बोहराजी के कुए के पास मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, (चैत्यालय चतुर्भुज सौगाणी का नले में से चौधरियों के मंदिर में धाया)	
6.	दि० जैन मंदिर निगोतियान		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, चौथा चौराहा, बोहराजी के कुए के पास	
7.	दि० जैन मंदिर फागीका चैत्यालय बांकीवालो का (3)		धी वालों का रास्ता, तीसरा चौराहा, मोहल्ला काच की बूड़ीवालान धी वाली का रास्ता, बांकीवालो की हवेली	
8.	दि० जैन मंदिर गुमानीरामजी का		धी वाली का रास्ता, पद्मावती जैन कन्या विद्यालय के पास	
9.	दि० जैन मंदिर लाडीजी चैत्यालय सोनियों का (4)		हृदियों का रास्ता, वारोगाजी की हवेली के पास दारोगाजी के मन्दिर के पीछे, सुन्दर बालजी सोनी के मकान में, मसालाल रामलाल सोनी द्वारा निर्मित	
10.	दि० जैन मंदिर शातिनाथ स्वामी, दारोगाजी		हृदियों का रास्ता, ऊँचा कुआ के पास	सुन्दर चित्ति चित्र हैं।

क्र.सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
	चैत्यालय दारोगाजी	(5)	हल्दियों का रास्ता, दारोगाजी की पुरानी हवेली	
11.	पाश्र्वनाथ दि० जैन मंदिर बास गोघान		हल्दियों का रास्ता, गोधो का चौक, ऊचा कुभा	प्राचीन प्रतिमा है।
12.	दि० जैन मंदिर ईश्वरलालजी गोघा		हल्दियों का रास्ता, गोधो का चौक ऊचा कुभा	
	चैत्यालय ऋषभजी गोघा	(6)	गोधो का चौक, ऊचा कुभा	
13.	दि० जैन मंदिर श्री चन्द्र प्रभ जिनालय प० लूणकरराजी		ठाकुर पचेवर का रास्ता	यहाँ प्राचीन शास्त्र मंडार, सचित्र प्रतियाँ, अवा माता की प्राचीन प्रतिमा, व्यवस्थित सरस्वती मंडार, विजययज्ञ, पुराना रेकार्ड है।
14.	दि० जैन मंदिर (आदिनाथजी) बखशीजी का		बखशीजी का चौक, रामगज बाजार	
	चैत्यालय बखशीजी का	(7)	बखशी कस्तूरचंदजी की हवेली, बखशीजी का चौक, रामगज बाजार	
	चैत्यालय बिन्दायक्यो का	(8)	कमला नेहरू स्कूल के पास	
15.	दि० जैन मंदिर मुशरफान		मुशरफ कॉलोनी, मनीरामजी की कोठी का रास्ता	सहस्रफणी पाश्र्वनाथ प्रतिमा है।
16.	दि० जैन मंदिर बैदान चैत्यालय छाबडो का	(9)	मनीरामजी की कोठी के सामने मनीरामजी की कोठी का रास्ता, चादूलालजी का मकान	बड़े यज्ञ हैं।
	चैत्यालय देहलीवालो का	(10)	हल्दियों का रास्ता, दूसरा चौराहा कूटवाली हवेली	
	चैत्यालय गंगवालो का	(10A)	तेरहपथी बड़े मंदिर के पीछे	
	चैत्यालय रसोबडेवाले बजो का	(11)	हल्दियों का रास्ता, महिमियो का दरवाजा	
	चैत्यालय जौहरियो का	(12)	हल्दियों का रास्ता, लाल कटलेके पास, गली में पहले मकान में	44 यज्ञ हैं
17.	दि० जैन मंदिर चाकसू (इसमें एक चैत्यालय भी है)		हल्दियों का रास्ता, चाकसू का चौक (बीस पथी पचासती मंदिर)	चौक में सामने प्रवेश द्वार पर कलापूर्ण सुन्दर कुराई की कारीगरी।
18.	दि० जैन मन्दिर बूचरान (लुहाडियान) चैत्यालय दलजी चौधरी, छाबडा व कोडीवालो का	(13)	हल्दियों का रास्ता, चाकसू का चौक धी वालो का रास्ता दायी की गली, कोडीवालो का मकान	प्राचीन प्रतिमा, चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ हैं।
	चै-यालय वैदो का	(14)	धी वालो का रास्ता, दायी की गली	
	चैत्यालय ठोनियो का	(15)	धी वालो का रास्ता, दायी की गली	

सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चं. सं.	पता	विशेष
	चैत्यालय ढोलाको का	(16)	जोरास्टर वाली के सामने	(मुकदमेवाजी के कागज ताने लगे हैं)
	चैत्यालय सेठियो का	(17)	वाल मुकदजी बज की हवेली के सामने	पाण्डेनाथ की नीले रंग के पागाल की प्रतिमा है।
	चैत्यालय तूगेवालो का	(18)	कुन्दीगरो के मेरु का रास्ता, तूंगावालो की हवेली	
	चैत्यालय संघणजी का	(19)	कुन्दीगरो के मेरु का रास्ता, कठिहारो के कुए के पास	
19	दि० जैन मंदिर जीऊबाई		शिवजी राम मवन के सामने	सुन्दर वेदी है।
20	दि० जैन मंदिर भूराजी		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, दूसरा चौराहा	
21.	दि० जैन मंदिर चौबीस महाराज (लाला श्रीचंद टोंग्या)		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, दूसरे चौराहे के तुक्कड़ पर	यहाँ एकसी घोवोम तीर्थंकरों की 24 विशाल प्रतिमाएँ हैं।
	चैत्यालय गोदीकों का	(20)	मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, सुबोधजी गोदीका का मकान	
22	दि० जैन मंदिर मारूजी		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, मारूजी का चौक	यह मारूजी भोसवाल का बनवाया हुआ तेरहपथी दिगम्बर जैन मन्दिर है।
23	दि० जैन मंदिर बड़ा तेरहपंथी		हल्दियों का रास्ता (तेरहपंथी पंचायती बड़ा मंदिर)	यहाँ 2 विमाल शास्त्र मंडार हैं, पच्चीकारी का सुन्दर कार्य है, सचित्र भक्तामरस्तोत्र का पोथा है। यहाँ पं० टोडरमलजी की शास्त्र समा होती थी।
<b>चौकड़ी तोपखाना हजूरौ</b>				
24	दि० जैन मंदिर रामगंज, हूँडियों (पाटनियो) का		जीरामाता का खुर्रा, सूरजपोल बाजार जयपुर	यहा सं० 1350 की प्राचीन प्रतिमा है।
<b>चौकड़ी गंगापोल</b>				
	चैत्यालय राव कृपारामजी	(21)	श्राभेर रोड, कच्चा बंधा, रावकृपारामजी का घेर	रावकृपाराम महाराजा जयसिंह के पचरत्नों में से एक थे।
	चैत्यालय राव कृपारामजी	(22)	श्राभेर रोड, कच्चा बंधा, रावकृपारामजी का घेर	(यहाँ चांदी के रथ में विराजमान सूर्य प्रतिमा भी है)

क्र. सं.	नाम मंदिर, चैत्यालय	चं. सं.	पता	विशेष
	चैत्यालय घमानेवालो का	(60)	नमक की मढी, कालख वालो का चीक	
56.	दि० जैन मंदिर आमली का		नमक की मढी, सुन्दर वा वास	
	चैत्यालय डिग्गीवालो का	(61)	टिक्कीवालो का रास्ता, डिग्गीवालो का मकान	
57.	दि० जैन मंदिर डूगरसीदास		टिक्कीवालो का रास्ता	
	चैत्यालय बाजूलालजी गोधा	(62)	टिक्कडमल का रास्ता	
58.	दि० जैन मंदिर जोबनेर		भालारिण्यो का रास्ता	समवसरण रचना ।
	चैत्यालय हरकारो का	(63)	मंदिर जोबनेर मे ही है	

### चौकड़ी पुरानी बस्ती

59. दि० जैन मंदिर बेगस्थान  
चादपोल बाजार, उणियारा रावजी का रास्ता
60. दि० जैन मंदिर कासलीवाल  
बैनाडान  
ठा० हरिसिंहजी लाडखानी के सामने उणियारा रावजी का रास्ता
61. दि० जैन मंदिर घिराई  
जयलाल भुशी का रास्ता, पाचवाँ चौराहा, रामसुखजी काला के सामने

### चौकड़ी हवाली शहर (जयपुर शहर के बाहर)

62. दि० जैन नसिया खजाचीजी
63. पचायत श्री दि० जैन मंदिर  
बगरुवालान  
ससारचन्द्र रोड, चादपोल बाहर रेलवे स्टेशन, जयपुर सदर थाना के पास सहस्रकूट चैत्यालय ।
64. दि० जैन नसिया तेरह पथियान  
चैत्यालय ठोलियो का (64)  
रेलवे स्टेशन, जी पी ओ. के सामने ठोलिया विल्डिंग, एम आई रोड पाचबस्ती, जयपुर

बन्जीलाल ठोलिया चैरि-  
टैविल ट्रस्ट द्वारा सचा-  
लित सन् 1935 मे स्था-  
पित । यहाँ 22 प्रतिमाएँ  
2½" से 1" तक

दि० जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय हिन्द होटल वालो का चैत्यालय बूचरो का (65) चैत्यालय ठोलियो का (66)	गोखले मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर बूचरा विलिटिंग, भगवानदास रोड अनूपचंदजी ठोलिया का प्लाट, चितरजन मार्ग, सी-स्कीम	
चैत्यालाल मीठालालजी सेठी (67)	मेठी भवन, कमानी हाउस के पास, सी-स्कीम, महावीर मार्ग, जयपुर	
दि० जैन मंदिर नसियां दीवान उदयलाल	सवाई मानसिंह ग्रंथनाल के सामने, राम बाग रोड, जयपुर	मानसतन ।
दि० जैन नसिया भट्टारकजी	नारायणसिंह चौराहा, राम बाग रोड, जयपुर	भामाङ्गिण एव धार्मिक नमारोह म्यन, बेदी में पच्चीवारी, भट्टारको की चरण छवियां ।
पार्श्वनाथ दि० जैन चैत्यालय बापूनगर सीमधर जिनालय, टोडरमल स्मारक भवन	गणेश मार्ग, बापू नगर, जयपुर बापू नगर, जयपुर	भगवान सीमंधर स्वामी की प्रतिमा ।
दि० जैन मंदिर दुर्गापुरा चैत्यालय बगवाडा वालो का (68) चैत्यालय सेठियो का (69)	दुर्गापुरा गगवाल पार्क पच्चार वालो का प्लाट, फतहटीवा, जयपुर	
दि० जैन मंदिर मुल्तान दि० जैन समाज	श्रादेश नगर, जयपुर	नव्य जिनालय, कलापूर्ण विना स्तंभ की वेदी, 2500वां निर्वाण स्मृति स्तंभ, कांच की जडाई के सुन्दर भाव चित्र ।
दि० जैन मंदिर मोहनबाड़ी	सूरजपोल दरवाजे बाहर, गलता रोड, जयपुर	
दि० जैन मंदिर जनता कॉलोनी दि० जैन मंदिर सेठी कॉलोनी	जनता कॉलोनी, सर्किल के पास जैन मंदिर मार्ग, सेठी कॉलोनी, आगरा रोड	
दि० जैन मंदिर शास्त्री नगर	शास्त्री नगर, सर्किल के पास	
दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ मधुवन चैत्यालय मधुवन (70) चैत्यालय तोतूकों का (71)	मधुवन, टोक फाटक मधुवन, किसान मार्ग	
दि० जैन मंदिर लाल कोठी	ऐबरेस्ट कॉलोनी, लाल कोठी, जयपुर	

क्र. सं.	नाम मंदिर, चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
78.	दि० जैन मंदिर बोहराजी बिहारी वाला, पुराना घाट (अधीनस्थ, मंदिर पाटोदी)		ग्यासजी के बाग के सामने, पुराना घाट	
79.	दि० जैन मंदिर चिरमोल्हों का		घाट की गुणी से उतरते ही पुराना घाट	
80.	दि० जैन नसिया सगही हीरालालजी दूनी वाले		खानिया (पुराना घाट), आगरा रोड	
81.	ट्रस्ट प्राइवेट दि० जैन मन्दिर मुरलीधरजी राणा की नसियां (दर्शनीय)		खानिया, पुराना घाट	छत में सोने की महीन कलम के चित्र, समवसरण, नालकी, आचार्य सागरजी की छत्री, विशाल नरि जयपुर के निकट पर अतिशय क्षेत्र, वान महावीर के फुट ऊंची प्रतिमा, फुट का तावे का सिद्धि दायक यंत्र, टूक, खड्गासन च तलघर में
82.	दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री पार्श्वनाथ चूलगिरि		खानियां, पुराना घाट, चूलगिरि	
83.	दि० जैन नसियां सगही हुकमचंदजी (अधीनस्थ, मंदिर संगहीजी, जयपुर)		बास बदनपुरा, टंकी के नीचे	
84.	दि० जैन नसियां बालमुकदजी बज		बास बदनपुरा, टंकी के नीचे	छत में तथा खंभ सोने की छपाई का भव मंदिर
85.	दि० जैन मंदिर नसियां दीवान नंदलाल (भालरे वाली) (अधीनस्थ, मंदिर पार्श्वनाथजी, जयपुर)		बास बदनपुरा, टंकी के नीचे	
86.	दि० जैन नसियां श्योजी गोधा (अधीनस्थ, मंदिर लक्ष्कर)		महारानीजी की छत्रियों के सामने, आमेर रोड, जयपुर	अच्छा पिकनिक धार्मिक एवं सामा समारोह-स्थल
87.	दि० जैन मंदिर नसियां विजैराम पाड्या (अधीनस्थ, मंदिर पाटोदी)		फकीर के तकिये के पास, आमेर रोड	
88.	दि० जैन मंदिर जवाहर नगर		सेक्टर 7, जवाहर नगर, जयपुर	

सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	पिणेप
	चैत्यालय बैराठियो का दि० जैन मंदिर महावीर स्वामी नेहरू नगर, बस्ती सीतारामपुरा	(72)	श्रीतम मार्गं, सी-स्क्रीम, जयपुर भोटवाड़ा रोड, जयपुर	
1).	दि० जैन मंदिर अम्बावाडी चैत्यालय अम्बावाडी	(73)	महावीर मार्गं, अम्बावाडी, जयपुर अम्बावाडी, जयपुर	
1.	दि० जैन मंदिर भोटवाडा		भोटवाडा, जयपुर	
2.	पाश्र्वनाथ दि० जैन मंदिर भोटवाडा		भोटवाडा, जयपुर	
3.	दि० जैन महावीर जिनालय		विजयपथ, तिलक नगर, जयपुर	
14.	दि० जैन मंदिर मालवीय नगर		सेक्टर न० 2/379, मालवीय नगर, जयपुर	
95.	दि० जैन मंदिर मालवीय नगर चैत्यालय मालवीय नगर	(74)	सेक्टर न० 3 (निर्माणाधीन) मालवीय नगर, जयपुर	
96.	दि० जैन मंदिर मालवीय नगर		सेक्टर न० 7, मालवीय नगर, जयपुर	
97.	दि० जैन मंदिर महावीर नगर		महावीर नगर, दुर्गापुरा के पास	
98.	दि० जैन मंदिर ज्योति नगर, जनकपुरी		ज्योति नगर, इमली के फाटक के पास	
99.	दि० जैन मंदिर कीर्तिनगर		वसुन्धरा कॉलोनी, टोक रोड, जयपुर	
100.	दि० जैन मंदिर जग्गा की बावड़ी (अधीनस्थ, मंदिर चाकसू)		घाट के बालाजी के पास, पुराना घाट, जयपुर	पहाडियो के बीच रान्ता, पाश्र्वनाथ की मव्य प्रतिमा ।
<b>आमेर</b>				
101.	दि० जैन मंदिर सांवलजाी (नेमिनाथजी)		अधीनस्थ, श्रीमहावीरजी क्षेत्र	प्राचीन मंदिर, मट्टारकजी की गद्दी जयपुर से पहले यहाँ थी । आमेर गद्दी के मट्टारकजी ही जयपुर तथा श्रीमहावीरजी मे रहे । 12वीं शताब्दी की प्राचीन प्रतिमा ।
102.	दि० जैन मंदिर चन्द्रप्रभजी		अधीनस्थ, श्रीमहावीरजी क्षेत्र	संधी रायचन्द्र छावड़ा ने वनवाया ।
103.	दि० जैन मंदिर सघीजी (पहाड़ी पर)		नसिया लुहाडियो की	सं० 1559 की निर्मित ।
104.	दि० जैन मंदिर बघीचन्दजी		अधीनस्थ, मंदिर बघीचंदजी, जयपुर	
105.	दि० जैन मंदिर मुशीजी का			

क्र. सं.	नाम मंदिर, चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
106.	दि० जैन मंदिर नेमिनाथजी, बाहरली आमेर		अधीनस्थ, मंदिर कालाडेर, महावीर स्वामी, जयपुर	नेमिनाथ की केश युक्त प्राचीन प्रतिमा ।
107.	दि० जैन मंदिर संकट हरण पाश्र्वनाथजी		अधीनस्थ, फागीवाला ट्रस्ट	विशाल प्रतिमा ।
108.	दि० जैन नसियां कीर्ति-स्तम्भ		अधीनस्थ, श्रीमहावीरजी क्षेत्र	मट्टारक नामावर कीर्ति-स्तम्भ एवं रको की चरण द

### सांगानेर

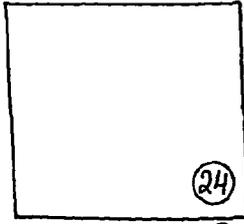
109.	दि० जैन मंदिर संगहीजी		अधीनस्थ, श्रीमहावीरजी क्षेत्र	दर्शनीय मंदिर, कलापूर्ण मंदिर, ! प्रतिमाएँ ।
110.	दि० जैन मंदिर अढाईपेडी		अधीनस्थ, मंदिर गोघान (नागौरी चौक)	
111.	दि० जैन मंदिर बधीचदजी		अधीनस्थ, मंदिर बधीचदजी, जयपुर	
112.	दि० जैन मंदिर पाटनियों का		अधीनस्थ, मंदिर तेरहपथी बड़ा, जयपुर	
113.	दि० जैन मंदिर गोदीको का		अधीनस्थ, मंदिर तेरहपथी बड़ा, जयपुर	मनोज्ञ तीन शिखर मे महीन कुराई का सुन्दर तीन शिखर
114.	दि० जैन मंदिर ठोलियों का		अधीनस्थ, मंदिर ठोलियान, जयपुर	
115.	दि० जैन मंदिर लुहाडियों का		अधीनस्थ, लुहाडियान	
116.	दि० जैन नसिया सगहीजी		अधीनस्थ, श्रीमहावीरजी क्षेत्र	

### अन्य मंदिर

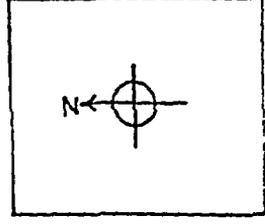
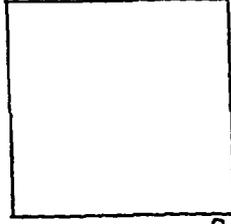
1.	दि० जैन मंदिर श्योपुर		अधीनस्थ, मंदिर गोघान, जयपुर	
2.	दि० जैन मंदिर जगतपुरा		अधीनस्थ, मंदिर बधीचन्दजी, जयपुर	
3.	दि० जैन मंदिर सागानेर		सागानेर पुलिस चौकी के सामने बस्ती मे	
4.	दि० जैन मंदिर शांतिनाथ खोह		खानिया से 3 कि. मी.	
5.	दि० जैन मंदिर बगराणा		खानिया से 3 कि. मी.	
6.	दि० जैन मंदिर कानीखोह		बध की घाटी से आगे	
7.	दि० जैन मंदिर चावड का मंड		रामगढ रोड पर	
8.	दि० जैन मंदिर सायपुरा		रामगढ रोड पर	
9.	दि० जैन मंदिर साईवाड		रामगढ रोड पर	
10.	दि० जैन मंदिर रामगढ		रामगढ रोड पर	
11.	दि० जैन मंदिर कूकस		जयपुर देहली रोड पर	

# मानचित्र चौकड़ी लोपखाना हज़ूरी

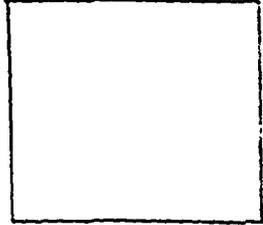
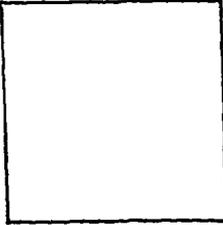
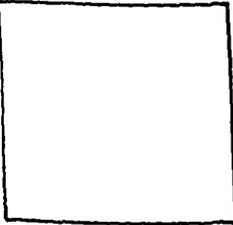
सूख जाल बाजार



24



जीन माता का खुर्ची

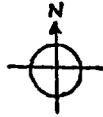


घाट

घाट करवाजा बाजार

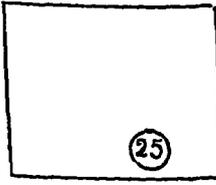
घाट

# मानचित्र चौकड़ी रामचन्द्र जी मंदिर चैत्यालय



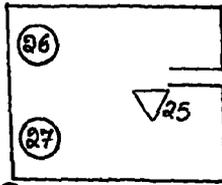
मोती कटला बाजार

बाजार



25

पानों का

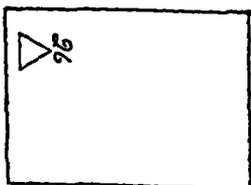


26

27

25

डाकघर



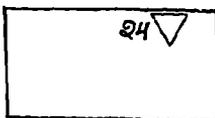
26

खवानस जी का रास्ता

सिख इयोकी



रेशीवा

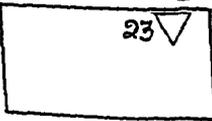


24

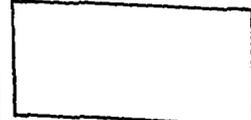
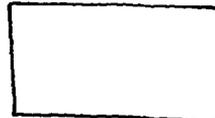
पंचवार का रास्ता



भट्टो की गली



23



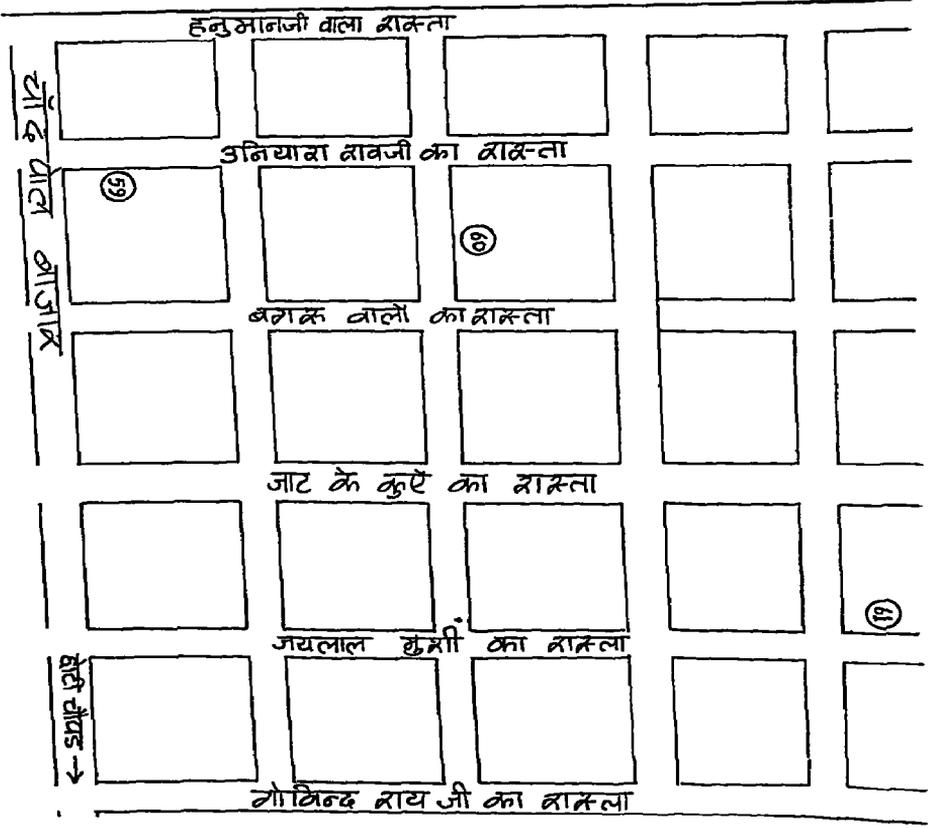
घाट

रामराज बाजार

मानचित्र चौकड़ी पुरानी बस्ती

○ मंदिर

△ चैत्यालय

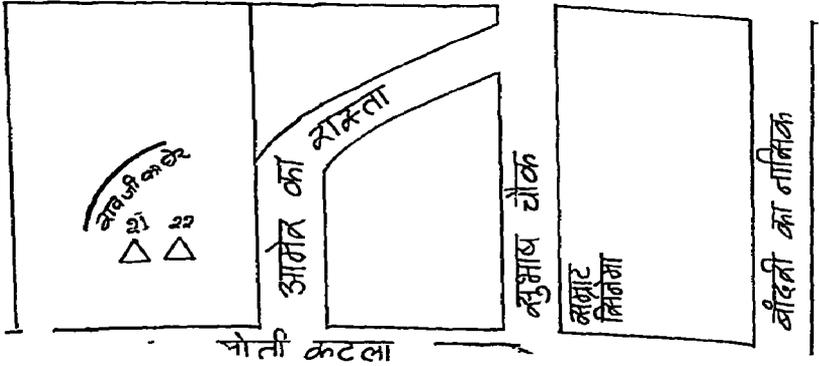


मानचित्र चौकड़ी रीमायोल



○ मंदिर

△ चैत्यालय



# मानचित्र चौकडी घाट ढकवाजा एव विश्वेश्वरजी



○ मन्दिर

△ चैत्यालय

घाट गेट बाजार - चौकडी घाट ढकवाजा

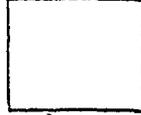
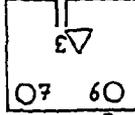
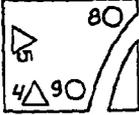


चौकी

बन्दान

का बाग

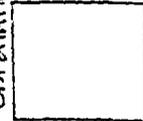
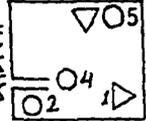
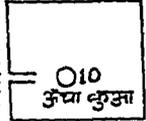
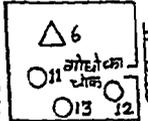
का बास्ता



पूडी

वालो कामहल्ला

बाजार



बाजार

बास्ता

बास्ता

का बास्ता

का बास्ता

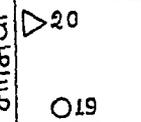
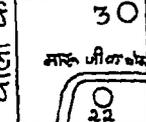
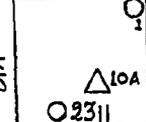
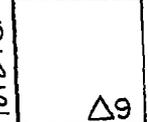
ठाकुर

पचेवर

का बास्ता

का बास्ता

बाजार



बाजार

का

वालो का

मोमिया

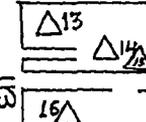
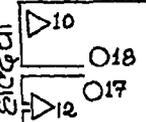
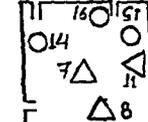
के भेवल

मनी

बामजी

की कोठी

का बास्ता



दिलिया

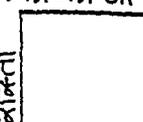
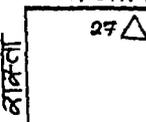
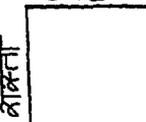
घी

मोली

कुडी

जौहरी

बाजार - चौकडी विश्वेश्वरजी



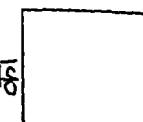
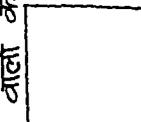
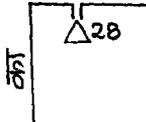
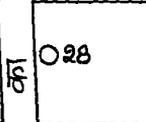
हनुमान

का

बास्ता

बास्ता

बाजार



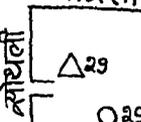
विद्या

धरजी

का

बास्ता

बाजार



स्वाई मानसिह हारि वे

त्रियोलिया

गोपालजी

जडिया

सोथली

तेलीपाई

बापू

मान चित्र चौकडी मोदीद्वाना

△ चैत्यालय

○ मंदिर

दि. जैन मंदिर

चौदपेल बाजार

बगडोडा बाजार

रेगेलिया बाजार

दोटी चौपड

N



गोधो का नामता

नामता

नाथा दामोदर जी

की नामता

प्र चैन सुभवे

याम माता

नामता

लाल जी मण्ड

का नामता

नोदीकी

का नामता

नामता

आचार्यो

का नामता

योगको

का नामता

अजायब

घर का नामता

नामता

सखी जी का नामता

संगी

का नामता

सखी जी का नामता

शिवजी लाल दीवान का नामता

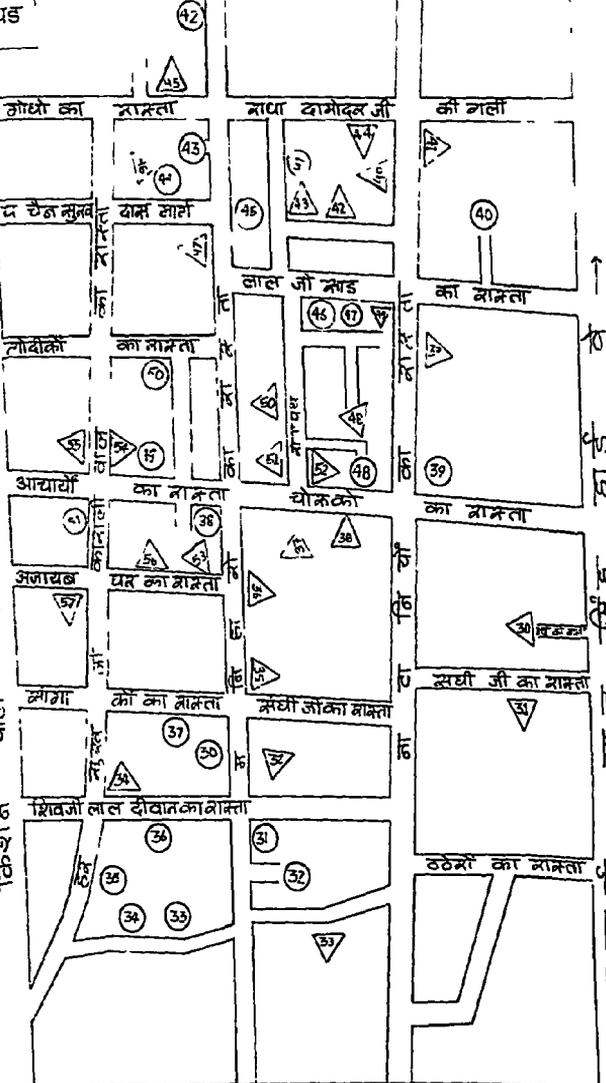
ठठरी का नामता

मे हक

बाजार

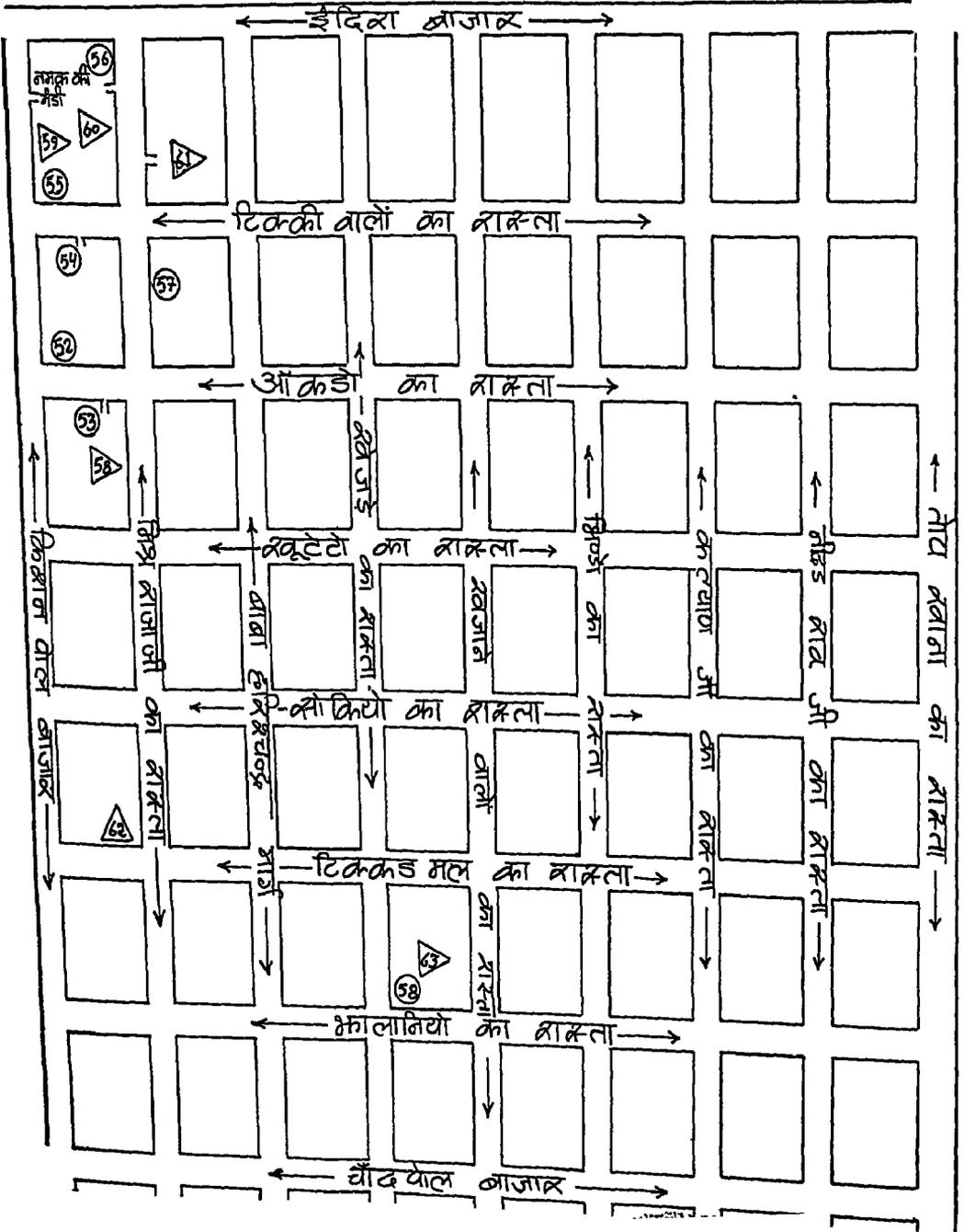
बाजार चौक

बाजार चौक



# मानचित्र-चौकड़ी तोपखाना देस

○ मंदिर  $\Delta$  घंट्यालय



# जिनेन्द्र वंदना

अद्य मे सफलं जन्म नेत्रे च सफले मम ।  
त्वामद्राक्षं यतो देव हेतुमक्षयसंपदः ॥ 1 ॥

हे देव ! आज मैंने अक्षय सम्पत्ति के हेतुभूत आपके दर्शन किये । इससे मेरा जन्म सफल हो गया और दोनो नेत्र सफल हो गये ।

अद्य संसार-गंभीर-पारावारः सुदुस्तरः ।  
सुतरोऽयं क्षणेनैव जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ 2 ॥

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दर्शन करने से तैरने के लिये अत्यन्त कठिन यह गम्भीर संसार रूपी समुद्र मेरे लिये क्षणमात्र में सुतर हो गया ।

अद्य मे क्षालितं गात्रं नेत्रे च विमले कृते ।  
स्नातोऽहं धर्म-तीर्थेषु जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ 3 ॥

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दर्शन करने से मेरा शरीर धुल गया, नेत्र निर्मल हो गये और मैंने धर्मतीर्थों में स्नान कर लिया ।

अद्य मे सफलं जन्म प्रशस्तं सर्वमङ्गलम् ।  
संसारार्णव-तीर्णोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ 4 ॥

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दर्शन करने से मेरा जन्म सफल हो गया, मुझे प्रशस्त सर्व मंगलो की प्राप्ति हो गयी और मैं संसार रूपी समुद्र से तैरकर पार हो गया ।

अद्य कर्माष्टक-ज्वालं विधूतं सकषायकम् ।  
दुर्गतेर्विनिवृत्तोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ 5 ॥

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दर्शन करने से मैंने कषाय के साथ आठ कर्मों को जला कर दूर कर दिया और मैं दुर्गति से पार हो गया ।

अद्य सौम्या ग्रहाः सर्वे शुभाश्चैकादश स्थिताः ।  
नष्टानि विघ्नजालानि जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ 6 ॥

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दर्शन से मेरे एकादश स्थान में स्थित सब ग्रह सौम्य और शुभ हो गये तथा विघ्न-जाल नष्ट हो गये ।

अद्य नष्टो महाबन्धः कर्मणां दुःखदायकः ।  
सुख-सङ्गं समापन्नो जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ 7 ॥

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दर्शन करने से दुःख देने वाला कर्मों का महाबन्ध नष्ट हो गया और मैं सुखकर सगति को प्राप्त हो गया ।

अद्य कर्माष्टकं नष्टं दुःखोत्पादक-कारकम् ।  
सुखाम्बोधि-निमग्नोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ 8 ॥

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दर्शन करने से दुःख को उत्पन्न करने वाले आठ कर्म नष्ट हो गये तथा मैं सुख सागर में निमग्न हो गया ।

अद्य मिथ्यान्धकारस्य हन्ता ज्ञान-दिवाकरः ।  
उदितो मच्छरीरेऽस्मिन् जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ 9 ॥

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दर्शन करने से मेरे शरीर में मिथ्यात्व रूपी अन्धकार का नाश करने वाला ज्ञान रूपी सूर्य उदित हुआ है ।

अद्याहं सुकृतीभूतो निर्धूताशेषकल्मषः ।  
भुवनत्रय-पूज्योऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ 10 ॥

हे जिनेन्द्र ! आज आपके दर्शन करने से समस्त कल्मष को धोकर मैं सुकृती और तीन लोक में पूज्य हो गया हूँ ।

(गुणानन्दिकृत अष्टाष्टक स्तोत्र से)

# अथ जयपुर सम्बन्धी जिन चैत्य-चैत्यालयों की वंदना

(स्वरूपचंद विलाला)



## दोहा

जयपुर नगर मभारि जे ध्वजावंध जिनघाम ।  
सीस नमाय कर जोरि करि, करूं सदा परनाम ॥

## चौपई

अष्टादश जिनवर को घाम, विजयराम कृत अतिअभिराम ।  
सोन्या को मंदिर है तही, नला माहि त्रय देवल यही ॥  
बकसी कृपाराम कृत जान, मुसरफ खिन्दूका को मान ।  
पंडित लूणकरण को लसै, वास तणोगौघा जहां वसे ॥  
दरोगा स्वरूपचंद को जानि, लाडी को तहां ही पहचानि ।  
रामगज का सुभ अभिराम, गुमानीराम को है सुभ नाम ॥  
फागी को मंदिर जु अनूप, गोघा को है अधिक सरूप ।  
दिवाण बघीचंद को है सही, ठोल्या को मंदिर भी तही ॥  
तेरापंथ तणे जु महान, सवाई राम मारू को जान ।  
भूरा को अघहरता सही, सेठ अमीचंद को है तही ॥  
बाई जीऊ को जिनघाम, पंच चाटसू कृत अभिराम ।  
बूचरा को है जिन थान, काला डेहरा को जु महान ॥  
रस्तै चौडे जती को लसै, दरस करत सब पातिग नसै ।  
एक बीस जिन मंदिर यही, सांगावति बाजार जु सही ॥  
पापलिया को जिनग्रह महा, पहाड्या को जिन थानक जहाँ ।  
दीवान अमरचंद को है नयो, स्योजीराम दीवान जु ठयो ॥  
लसकर को है अधिक अनूप पाटोदी को अधिक सरूप ।  
तन सागर जु जती को जानि, मेघराज को है सुखदानि ॥  
बाई कियो चैत्यालय सही, खिन्दूका को अवरजु सही ।  
संगही मालावत को महा, सांगाका को है सुभ तहा ॥

घडू तणू है सुख को घाम, साहावडा को है अभिराम ।  
 काला को अधनासन हार, सिवाड तरणो जाणो सुखकार ॥  
 बाकलीवाल तरणो मन आणि, खोजा को जु अवर सुभ जाण ।  
 पंडित चम्पाराम जु तरणो, कासलीवाला को सुभ घणो ॥  
 चौघरयां को मंदिर है सही, अवर वगीची को सुभ कही ।  
 बघीचंद बज को अभिराम, इमली नीचे अवर सुठाम ॥  
 डूगा पाड्या को है सही, जोवनेर को भी है तही ।  
 षड् विशति ये जिनवर थान, अबावति बाजार महान ॥  
 कासलीवाला को जु महान, अवर धिनोही को अध हान ।  
 एही दो मदिर सुभ कहे, बसती पुराणी मे सरदहे ॥

### सोरठा

द्वय पंचास जू एह, सब जोडे तै होत है ।  
 सहरमाहि सब तेह बहू मनवचकाय सो ॥  
 नगर चोगिरदा जेह ताकी गिराती कहत हूँ ।  
 याकी लार गिणेह, मडल पूजादिक विषे ॥

### चौपई

हुकमचंद बज की है वहां नदलाल कृत है शुभ महा ।  
 हुकमचंद संगही की नवीन बंध दरवाजे नसियां तीन ॥  
 गोघा स्योजी राम की सही गुमानी राम पंडित की तही ।  
 धू दरवाजे नसियां दोइ आगे और सुणो भविलोय ॥  
 पंडित कन्ही राम की सही नसियां सूरजपोल प्रति कही ।  
 स्पोपोल दरवाजा पार भट्टारक की नसियां सार ॥

### दोहा

ए सब जोडया सप्त होय, नसिया अति अभिराम ।  
 नर नारी वदन करे अध हारक सुख घाम ॥  
 घाट माहि जिनघाम इक, खान्या में इक जाणि ।  
 एक जगा की वापिका, बंदो सब सुख खानि ॥

### चौपई

अंबावति का मदिर कहूं वदन करत करम सब दहूं ।  
 स्याम जिनेश्वर को परसिद्ध मन वछित फल देन समृद्ध ॥  
 दिवान रायचन्द्र कृतसार नसिया ऊंची सहर मभारि ।  
 दिवान रतनचद को सुभ लसै, जयचद कृत वदित अध नसै ॥

बाभि अंवावति मंदिर एक, कोरत थम नसिया शुभ टेक ।  
 अंवावति प्रति एहि सात, बंदन करुं जोरि जुग हाथ ॥  
 साहिवाड तरणो सुभ जानि, काणीखोरि जिनेसुर धान ।  
 चांवडि के मढ मदिर बण्यो खो मधि शाति जिनेश्वर तरणो ॥  
 रोडपुरा में मदिर एक, अब सांगावति घारि विवेक ।  
 बंदन करु जोरि जुग पानि महा भक्ति हिरदा मे ठानि ॥  
 संगही जू को है जु महान, भोत शिखर जुत अतिसै धान ।  
 दूजो गोदीका को सही, तीजो पाटणियों को कही ॥  
 चौथो गोधा को है सार पचम ठोल्या कृत सुखकार ।  
 छठो हरसुखराम जु कियो नगर बाह्य नसियां को ठयो ॥  
 एही सात जु मंदिर भये, सांगावति मनवचतन नए ।  
 जयपुर प्रति सब एकठा गिणै, एक असी मंदिर जिनवणै ॥  
 ए सब पूजै जयपुर पथ, उच्छव मंडल करत महंत ।

### दोहा

संवत अठारा सै सही और बाणवे जानि ।  
 फाल्गुन गयारसि शुक्ल जू परजंत ए जिन धान ॥  
 ए जिन चैत्यतरणी महा स्तुति पढि है त्रिकाल ।  
 मन बच काया शुद्ध करि पावै शिव सुखसार ॥  
 इति जयपुर संबंधी चैत्यवदना सम्पूर्ण ॥

घर मांही चैत्यालय सवै, तिनको बंदन मेरी अबै ॥

## अथ जयनगर चैत्यालय वंदना लिख्यते

### दोहा

संवत शत अष्टाजुदश बाणवै लो जिनधाम ।  
 ता पीछे अब जो भये तिनको कहू ज नाम ॥  
 संवत शत अष्टाजुदश त्रिनवति ताके मध्य ।  
 ऋषभदास निगोतिये मदिर रच्यो प्रसिद्ध ॥  
 फिर संवत उगणीस सत अवर जु नव के माहि ।  
 काष्ठासंघ पडित तरणो भयो जु बंदौ ताहि ॥  
 सौगणी लच्छीराम को चैत्यालय थो सार ।  
 धुजाबंध शामिल कियो बंदू सब सुखकार ॥

धुजाबध मंदिर भये सब चतु असी महान ।  
 बार बार वदन करू मन वच कम इक तान ॥  
 जयपुर नगर मभार अब चैत्यालय सुखकार ।  
 श्रावग के घर माहि जे तिनकी सख्या सार ॥  
 भिन्न भिन्न वरनन करू वदन कू चितलाय ।  
 तिन के बदन पूजतै परम पुन्य उपजाय ॥  
 कृपाराम राव की जानि होली जय सागर परमानि ।  
 तामे दो चैत्यालय सही मन वच वदन करिहू वही ॥  
 खानसामा की होली माहि चिमनलाल सघही घर थाहि ।  
 इक चैत्यालै ताके माहि बहू भाव भगति मन लाय ॥  
 मनालाल श्रीमाल रहत ता जागै चैतालय कहत ।  
 सोगाणी सुखलाल जु रहै चैत्यालय ता घर इक कहै ॥  
 मुसी दयाचंद गृह माहि चैत्यालय इक जाणै ताहि ।  
 तेरापथी छोसा तणा इक चैत्यालय ता मधि भणा ॥  
 पन्नालाल सौगाणी रहै चैत्यालय इक ता धरि कहै ।  
 नला माहि इम अष्ट जु कहे वदन करत पाप सब दहे ॥  
 मनालाल बकसी घर जानि सदाराम चौधरी थान ।  
 अमीचंद टोंग्या घर माहि चैत्यालय बहू शुभ ताहि ॥  
 भान गड्या के अधिक अनूप, वदन करत मिटे अध-तूप ।  
 ढोलाका के अधिक सरूप चैत्यालय इक अधिक अनूप ॥  
 निगोतिया की हवेली माहि बाह्य चोक चैत्यालय ताहि ।  
 हरचंद जू सेठी के घरा चैत्यालय इक वदन करा ॥  
 वैद बधीचंद ठोल्या कने चैत्यालय तहा अनुपम बनै ।  
 चुनीलाल पाटनी जान बजारि ऊपरि चैत्यालय मानि ॥  
 पन्नालाल बज के गृहसार चैत्यालय बहू सुखकार ।  
 बसंतराय टोंग्या के जानि बहू भाव भगति उर आन ॥  
 घासीराम छाबड़ा वही चैत्यालय इक बहू तही ।  
 भूरामल गोदीका घरा इक चैत्यालय वदन करा ॥  
 सहज राम ठोल्या के जानि नोहरा मे चैत्यालय ठानि ।  
 गुमानीराम लुहाड्या तणो फिर तूंगा हाला के भणो ॥  
 कूआ कठारा का के पासि, बलदेव संगही घर इक भास ।  
 नवल जी छाबडो सोन्या कने चैत्यालय इक ता घर गिणै ॥  
 नाथूलाल जु संगही तणो, दरोगा बिसन लाल घर भणो ।  
 राम लाल सोनी के सही दीवान रतन चंद होली मही ॥

अमोलिकजी गोदीका घरा, भाव भगति करि वदनकरा ।  
 चिमनलाल गगवाल कै जानि आरतराम साह कै मानि ॥  
 दीवान कन्हीराम के जु महान चतुर्भुज छावडा घर जानि ।  
 महाराम ठोल्या घर सही रिखवदास गोधा घर मही ॥  
 सुख जु राम गोधा कै एक मन्नालाल हासूका टेक ।  
 दिल सुख गोधा के गृह माहि चैत्यालय इक है सुखदाहि ॥  
 मनालाल तोतुका घरा चैत्यालय इक वदन करा ।  
 दीवान भागचद घर माहि चैत्यालय इक वदू ताहि ॥  
 सांगावति बाजार मभारि, चैत्यालय त्रयतीस मभारि ।  
 चैत्यालय जिन प्रतिमा सही नित प्रति नमू सीस घरि सही ॥  
 बस्ती पुराणी मे है सही स्योजी राम हलकारों तही, ।  
 ता घर चैत्यालय इक लसै वदित पाप सवैही नसै ॥  
 सोनीलाल साह घर सही, रुस्तमदार चैत्य जु महि ।  
 तनसुख पांड्या के घर माहि चैत्यालय इक जाणे ताहि ॥  
 सदासुख ठोल्या घर माहि चैत्यालय इक जाणे ताहि ।  
 घमाणा हाला हुकमजुचंद चैत्यालय ता घर सुखकद ॥  
 श्रीलाल उकील जु भडा कने ता घर चैत्यालय इक भनै ।  
 उकील चतुर्भुज को घर तही, चैत्यालय इक सुख की मही ॥  
 नेमीचद बक्सी घर महा, चैत्यालय इक जाणो तहा ।  
 गोधा सर्वसुख घर माहि, जाणो इक चैत्यालय ताहि ॥  
 पोल्याका कै जाणो सही, चैत्यालय इक वदू तही ।  
 चिमनलाल बज के घर माहि, एक जिनालय वंदू ताहि ॥  
 मनालाल बज ताही पास, एक जिनालय जाणो तास ।  
 पनालाल साह के घरा एक जिनालय वदन करा ॥  
 अमीचद गोधा घर माहि चैत्यालय इक बंदू ताहि ।  
 दिलसुख पडित कै इक जानि मयाचद गोदिका मानि ॥  
 सदासुख अजमेरा तणो, चैत्यालय बंदू अघ हणो ।  
 धरमदास संगही कै घरा, भाव भगति कर बंदन करा ॥  
 धासीराम खिन्दूका तणो बंदित नासै पातिग घणो ।  
 छाबडा अमरचंद घर जाणि, भबर्वा के चैत्यालय मानि ॥  
 दिल सुख पाटोदी के घरा मनवचतन करि बदन करां ।  
 विनायक्या अभैचंद घर सही मारिणक चंद दूणी हाला कही ॥  
 हीरालाल दूणी का घरा चैत्यालय इक बंदन करां, ।  
 मनालाल पाड्या घर माहि जीवराम जु बज कै ठांहि ॥

छाबंडा सदासुख घर सही, मांगीराम जु वज गृह कही ।  
 जीवनराम सेठी गृह मांहि भांवसा चिमनलाल गृह ठाहि ॥  
 स्योलाल गगवाल जु तणो तनसुख खिन्दूका को गिणो ।  
 गोगराज खिन्दूका घरा मालीराम साह सिर घरा ॥  
 सोनी चैनजी ताके एक वदन करिहू धारि विवेक ।  
 भोजराज बटवाल सुजानि, ता घर चैत्यालय एक मानि ॥  
 किशोरदास चौरूका तणो, दूजो भौसा को वहा गिणी ।  
 डेडा का सदासुख गृह मांहि चैत्यालय इक वदू ताहि ॥  
 बछराज टोडरको रहै, ताके घर चैत्यालय कहै ।  
 सपत राम दीवाण निवास, तामे चैत्यालय सुख रासि ॥  
 मोहन लाल खिन्दूका तणो, बदित पातिग सब ही हणो ।  
 बाजार अबावति का कै मांहि, चैत्यालय त्रयचालस, ताहि ॥  
 बारंबार नमू सिर नाय मन वच भाव सहित सुखदाय ।  
 सब चैत्यालय जयपुर मांहि, जोडदिये चौरासी ताहि ॥  
 भवि सब बंदन पूजन करै, पुन्य उपाय सवै अघ हरै ।  
 मन वच वदन करू त्रिकाल, बारबार सीस कर धार ॥

### छप्पय

जयपुर नगर मभारि और चौगिरद नगर कै ।  
 धुजाबघ जिन मदिर सब चड अस्सी फिरि कै ॥  
 चैत्यालय सब नगर मांहि चड अस्सी सारे ।  
 मन वच काय त्रिकाल बदि सब हम उर धारे ॥  
 संवत सत उगणीसदस पोष सुकल पचम सुवर ।  
 सरूपचंद बदन करत, हाथ जोरि कर सीस घर ॥

इति जयपुर नगर मध्ये चैत्यालय वदना सपूर्ण ॥

कवि स्वरूपचंद की यह एक ऐतिहासिक रचना है । कवि ने स. 1892 मे जयपुर में मदिरो की तथा सं. 1910 मे चैत्यालयो की वन्दना की । तदनुसार स. 1892 तक 81 मदिर थे । तीन बाद में बने और उनकी संख्या 84 हो गई । कवि ने चैत्यालयो की संख्या भी 84 ही गिनाई है ।

- सम्पादक

# परिचय दिगम्बर जैन मंदिर

## जयपुर

### चौकड़ी घाट दरवाजा

#### 1. श्री दिगम्बर जैन मंदिर ठोलियान

यह मंदिर चौकड़ी घाट दरवाजा मे घी वालो के रास्ते मे स्थित है। इसका निर्माण कब और किसने कराया इसका कोई उल्लेख उपलब्ध नहीं है किन्तु मंदिर की सीढियों के ऊपरवाली कलापूर्ण छत्री का निर्माण स. 1826 में होने का उल्लेख अवश्य मिलता है जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि मंदिर सं. 1826 से पूर्व का निमित्त है।

मंदिर मे मूलनायक प्रतिभा भगवान शान्तिनाथ की श्वेत पापाण की संवत् 1861 की प्रतिष्ठित विराजमान है। मूलवेदी के तीनों ओर 16 वेदिया है जिनमे कुल 227 प्रतिमाएँ एवं 83 यंत्र विराजमान है। प्रतिमाओं मे विल्लौरकी चार ( 3 प्रतिमाएँ 10" से 15" की तथा एक छोटी 4" की) एक हरे मरगज की, दो विशाल मूर्तिया लाल पापाण की तथा एक पद्मावती देवी की (पाषाण) विशेष आकर्षक प्रतिमा है। यंत्रों में घटाकरण, गणघरवल्लय, धर्मचक्र, कर्मप्रकृति, सत्तरसय, सर्पविषहरण आदि प्रमुख है।

मंदिर में विशाल हस्तलिखित ग्रंथों का शास्त्र भंडार है जिसमे 512 ग्रंथ एवं 143 गुटके हैं। लगभग 200 ग्रंथ 200 वर्ष पुराने है। सबसे प्राचीन प्रति संवत् 1416 की लिपिबद्ध द्रव्य सग्रह की ब्रह्मादेव की टीका है। पूजापाठों का एक ऐसा गुटका भी है जिसमें 475 पूजाएं हैं तथा 47 मडलों के सुन्दर रंगीन चित्र हैं। ग्रंथों के सुन्दर कलापूर्ण पुट्टे भी हैं। भंडार पूर्ण व्यवस्थित है तथा इसकी सूची ग्रंथ-सूची भाग 3 मे प्रकाशित हो चुकी है।

मंदिर कलापूर्ण एवं विशाल है। बाहर के चौक मे कमरे बने हैं जिनमे महावीर स्कूल का नगर विभाग चलता है। बाहर के चौक में सीढियां चढकर मंदिर में प्रवेश होता है। पूरा मंदिर संगमरमर का बना है। चौक के तिवारो की दीवारो मे स्वाध्याय के ग्रंथ आदि विराजमान करने की कलापूर्ण खिड़किया बनी हुई हैं जिनके प्रवेश द्वार बारीक कारीगरी के नमूने हैं, मुडरे भी संगमरमर की हैं और उन पर बेलबूटे कुरे हुए हैं जिसके नीचे संगमरमर पत्थर की ही लटूरियाँ लटक रही हैं। इस कलापूर्ण वैभव की रक्षाहित ही चौक पर दुछते का निर्माण कराया गया है।



## कलाकृतियाँ

मन्दिर अत्यधिक कलापूर्ण है। समवसरण के ऊपर विशाल गुम्बज है जिसमें भावचित्रों पर सोने की चित्रकारी का काम अत्याधिक कलाविज्ञ करीगरो द्वारा किया गया है। गुम्बज के नीचे के खम्भे मकराने के कुराईदार हैं उन पर तथा छत में सोने की जड़ाई का कलापूर्ण कार्य है। यहाँ ही अकृत्रिम चैत्यालय तथा समवसरण की रचना बहुत ही कलापूर्ण एवं दर्शनीय है। खिलौनों के रूप में सुन्दर देवगृह आदि आकर्षक हैं। इसके अतिरिक्त हाथी पालकी तथा समवसरण आदि भी हैं। मन्दिर के एक भाग में अढाई द्वीप तथा दूसरे में कर्म प्रकृति, ससारवृक्ष, पट्ट लेश्या आदि के भाव-चित्र बने हैं जो कांच से मढ़े हैं। मन्दिर काफी ऊँचा बना हुआ है।

पंचायती मन्दिरों में से एक होने के कारण यहाँ एक विशाल रथ भी था जो अब लूणवा क्षेत्र को दे दिया गया है। इस मन्दिर में प्रतिष्ठा महोत्सव का पूरा सामान यथा बड़ा डेरा, तम्बू, छोलदारिया, कनातें, दरियाँ आदि भी हैं। यहाँ का सामान शुद्धाम्नाय वाले मन्दिर के उत्सव आदि में ही दिया जाता है।

## शास्त्र भण्डार

पंचायती मन्दिर तथा जयपुर के विद्वानों की साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र होने के कारण यहाँ का शास्त्र भण्डार अधिक महत्त्वपूर्ण है। यहाँ संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी एवं ढूँढारी भाषा के ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। यहाँ 1278 हस्तलिखित ग्रंथ हैं जिनमें 162 गुटके हैं। यहाँ 15वीं से 19वीं शताब्दी तक के ग्रंथों की प्रतियों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है। सबसे प्राचीन प्रति वड्ढमाण काव्य की है जो सं. 1481 की लिखी हुई है। भण्डार में मुख्य रूप से आमेर एवं सागानेर से आये हुए ग्रंथ हैं क्योंकि दोनों ही स्थानों पर बघीचन्दजी के मन्दिर हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण प्रतियों में स्वयंभू का हरिवंशपुराण, प्रभाचन्द की आत्मानुशासन टीका, महाकवि वीर कृत जम्बूस्वामी चरित्र, कवि सघारू का प्रद्युम्न चरित, नन्द का यशोधर चरित्र, मल्ल कवि कृत प्रबोध चन्द्रोदय नाटक, सुखदेव की वरिण्क् प्रिया, बशीधर की दस्तूर मालिका तथा पूज्यपाद की सर्वार्थसिद्धि उल्लेखनीय हैं। पं. टोडरमलजी की मूल पाण्डुलिपियों<sup>1</sup> के अतिरिक्त प्रदर्शनी में रखने योग्य कांच की रेतघड़ी, ग्रंथ लेखन सामग्रों के पुट्टे, कपड़े के ग्रंथ रखने के बड़े थैले (सन्दूकनुमा) आदि भी हैं। शास्त्र भण्डार की सूची ग्रंथ-सूची भाग 3 में छप चुकी है।

धार्मिक प्रचार-प्रसार की दृष्टि से रात्रि को शास्त्र सभा होती है जिसमें पं. सतोषकुमारजी भाभररी प्रवचन करते हैं। रात्रि पाठशाला की व्यवस्था भी है जिसमें धार्मिक कक्षाएं चलती हैं। मन्दिर की ओर से चतुर्विध दान का भी प्रावधान है।

यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है जिसके अध्यक्ष श्री नानूलालजी साह आबूजी वाले तथा मंत्री श्री पदमचन्द साह है।

<sup>1</sup> मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं आत्मानुशासन भाषा

मंदिर वीस पथ आम्नाय का है तथा इसकी व्यवस्था पजीकृत विधानानुसार चुनी हुई प्रबध समिति द्वारा की जाती है। इस समिति के अन्तर्गत दो मंदिरों की और व्यवस्था है जिसमें एक जयपुर में लाडीजी का मंदिर तथा दूसरा सागानेर में ठोलियों का मंदिर है।

इस मंदिर के सामने पूर्व की ओर एक धर्मशाला है जिसको भव्य रूप देने में सेठ वनजीलालजी ठोलिया व उनके वंशजों ने प्रमुख भूमिका निभाई है। वर्तमान में इसकी व्यवस्था सेठ वनजीलालजी ठोलिया चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से की जा रही है।

मंदिर में गत 4 दशकों से बाणीभूषण प० मिलापचंदजी शास्त्री भाद्रपद भास में प्रवचन करते हैं जिसमें सैकड़ों श्रोता धर्मलाभ लेते हैं।

वर्तमान में मंदिर के अध्यक्ष श्री मुन्नीलालजी ठोलिया तथा मंत्री श्री धनकुमारजी रारा हैं।

## 2. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर दीवान बधीचन्दजी साह

यह मन्दिर जयपुर की चौकड़ी घाट दरवाजा में घी वालो के रास्ते में स्थित है। यह गुमान पथ आम्नाय का पंचायती मंदिर है जो तेरहपंथ आम्नाय से भी अधिक शुद्धाम्नायी है। प. टोडरमलजी के पुत्र गुमानीराम ने यह पंथ चलाया था जो भट्टारकी द्वारा प्रचलित शिथिलाचार का कट्टर विरोधी है। इस मंदिर का निर्माण सदाराम साह के पुत्र दीवान रतनचन्द साह के भाई बधीचन्द ने कराया था। रतनचंद साह सवत् 1813 से सवत् 1815 तक दीवान पद पर रहे। संभव है इसी समय के पूर्व इस मन्दिर का निर्माण हुआ हो। वैसे निर्माणकाल के सम्बन्ध में कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है किन्तु काफी समय तक यह मंदिर पं. टोडरमलजी एवं गुमानीरामजी की साहित्यिक प्रवृत्तियों का प्रमुख केन्द्र स्थल रहा है। प. टोडरमलजी ने यही बैठकर गोम्मटसार, आत्मानुशासन जैसे महान ग्रंथों की भाषा टीका एवं मोक्षमार्ग प्रकाशक जैसे महान आध्यात्मिक ग्रंथों की रचना की थी। इस दृष्टि से इसका निर्माण स० 1800 से पूर्व ही हो जाना चाहिये। यद्यपि दीवान बधीचन्दजी साह के वंशजों में टोडरमलजी साह के पुत्रादि हैं किन्तु उनके पास भी निर्माण तिथि का कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

यहाँ मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो समवसरण में विराजमान है। मन्दिर में कुल 80 प्रतिमाएँ हैं तथा 33 यंत्र हैं जो समवसरण सहित 10 वेदियों में विराजमान हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा श्वेत पाषाण की तेईसवें तीर्थंकर श्री पाश्र्वनाथजी की है जो सं० 1291 की प्रतिष्ठित है। पाषाण की दो अन्य विशाल प्रतिमाएँ भी हैं जो सं० 1883 की प्रतिष्ठित हैं। कुछ धातु की छोटी प्रतिमाएँ हैं जिन्हें नीचे तलघर में विराजमान कर रखा है। यंत्रों में स. 1461 में प्रतिष्ठित गणधरवलय यंत्र के अतिरिक्त नवग्रह यंत्र, याग मण्डल यंत्र एवं धर्मचक्र यंत्र उल्लेखनीय हैं। मन्दिर का क्षेत्रफल 625 वर्ग गज है, अचल सम्पत्ति में दूकानें तथा एक मकान है। गत दश वर्षों में दुद्यता बना है तथा अन्य नवीन कार्य व जीर्णोद्धार हुआ है।

## कलाकृतियाँ

मन्दिर अत्यधिक कलापूर्ण है। समवसरण के ऊपर विज्ञान गुम्बज है जिसमें भावचित्रों पर सोने की चित्रकारी का काम अत्याधिक कलाविज्ञ करीगरो द्वारा किया गया है। गुम्बज के नीचे के खम्भे मकराने के कुराईदार हैं उन पर तथा छत में सोने की जड़ाई का कलापूर्ण कार्य है। यहाँ ही अशुभ्रिम चैत्यालय तथा समवसरण की रचना बहुत ही कलापूर्ण एवं दर्शनीय है। खिलीनो के रूप में सुन्दर देवगृह आदि आकर्षक हैं। इसके अतिरिक्त हाथी पालकी तथा समवसरण आदि भी हैं। मन्दिर के एक भाग में अढ़ाई द्वीप तथा दूसरे में कर्म प्रकृति, ससारवृक्ष, पद्म लेश्या आदि के भाव-चित्र बने हैं जो कांच से भड़े हैं। मन्दिर काफी ऊँचा बना हुआ है।

पंचायती मन्दिरों में से एक होने के कारण यहाँ एक विशाल रथ भी था जो अब लूणवा क्षेत्र को दे दिया गया है। इस मन्दिर में प्रतिष्ठा महोत्सव का पूरा सामान यथा बड़ा डेरा, तम्बू, छोलदारिया, कनातें, दरियाँ आदि भी हैं। यहाँ का सामान शुद्धाम्नाय वाले मन्दिर के उत्सव आदि में ही दिया जाता है।

## शास्त्र भण्डार

पंचायती मन्दिर तथा जयपुर के विद्वानों की साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र होने के कारण यहाँ का शास्त्र भण्डार अधिक महत्त्वपूर्ण है। यहाँ सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी एवं ढूँढारी भाषा के ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। यहाँ 1278 हस्तलिखित ग्रंथ हैं जिनमें 162 गुठके हैं। यहाँ 15वीं से 19वीं शताब्दी तक के ग्रंथों की प्रतियों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है। सबसे प्राचीन प्रति बड़बढ़माण काव्य की है जो स. 1481 की लिखी हुई है। भण्डार में मुख्य रूप से आमेर एवं सागानेर से आये हुए ग्रंथ हैं क्योंकि दोनों ही स्थानों पर बघीचन्दजी के मन्दिर हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण प्रतियों में स्वयंभू का हरिवंशपुराण, प्रभाचन्द की आत्मानुशासन टीका, महाकवि वीर कृत जम्बूस्वामी चरित्र, कवि सधारू का प्रद्युम्न चरित, नन्द का यशोधर चरित्र, मल्ल कवि कृत प्रबोध चन्द्रोदय नाटक, सुखदेव की वणिक् प्रिया, बंशीधर की दस्तूर मालिका तथा पूज्यपाद की सर्वार्थसिद्धि उल्लेखनीय है। पं. टोडरमलजी की मूल पाण्डुलिपियों<sup>1</sup> के अतिरिक्त प्रदर्शनी में रखने योग्य कांच की रेतघड़ी, ग्रंथ लेखन सामग्रों के पुट्टे, कपड़े के ग्रंथ रखने के बड़े थैले (सन्दूकनुमा) आदि भी हैं। शास्त्र भण्डार की सूची ग्रंथ-सूची भाग 3 में छप चुकी है।

धार्मिक प्रचार-प्रसार की दृष्टि से रात्रि को शास्त्र सभा होती है जिसमें पं. सतोषकुमारजी भाँभरी प्रवचन करते हैं। रात्रि पाठशाला की व्यवस्था भी है जिसमें धार्मिक कक्षाएं चलती हैं। मन्दिर की ओर से चतुर्विध दान का भी प्रावधान है।

यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है जिसके अध्यक्ष श्री नानूलालजी साह आबूजी वाले तथा मंत्री श्री पदमचन्द साह हैं।

<sup>1</sup> मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं आत्मानुशासन भाषा

### 3. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर नया बैराठियों का

यह मन्दिर मोतीसिंह भोमिया के रास्ते में पीपली महादेव के चौराहे पर स्थित है। यह मन्दिर बालाबख्श अग्रवाल बैराठ वालों ने काष्ठा सघी पडितों की ओर से सं. 1909 में बनवाया। स्वरूपचद बिलाला कृत जयपुर चैत्य वन्दना में भी इसका निर्माण काल सम्वत् 1909 ही निम्न प्रकार दिया है।

सम्वत् उगनीससत् अवर जु नव के मांहि ।

काष्ठा संघ पडित तनों भयो जु वन्दू ताहि ॥

यहाँ मूलनायक प्रतिमा प्रथम तीर्थंकर भगवान् आदिनाथ की संवत् 1909 की प्रतिष्ठित है। प्रतिमा समवशरण में विराजमान है जिसकी प्रतिष्ठा काष्ठा सघ के भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति की परम्परा में भ. महेन्द्रकीर्ति ने कराई थी। मन्दिर में कुल 82 प्रतिमाएँ तथा 5 यंत्र हैं। प्राचीन प्रतिमा सुपाश्वनाथजी की श्याम पाषाण की है जो संवत् 1501 की प्रतिष्ठित है।

मन्दिर में समवशरण है अतः गुमान पथ का होना चाहिये किन्तु ऐसा नहीं है क्योंकि क्षेत्रपाल की प्रतिमा भी है। मन्दिर में दोनों आम्नाय प्रचलित हैं।

मन्दिर में 118 हस्तलिखित ग्रंथ एवं गुटके हैं जिनकी सूची भाग 4 में प्रकाशित हो चुकी है। भण्डार में संवत् 1775 की सचित्र स्वर्णाक्षरी प्रतिमाएँ हैं, जिसमें ऋषिमंडल स्तोत्र, जिनपंजर स्तोत्र, ऋषि मंडल पूजा, निर्वाणकाण्ड, अष्टाह्निका जयमाल प्रमुख हैं। प्रतिमाओं में बेलबूटे आदि अत्यधिक सुन्दर हैं। प्रतिमाएँ प्रदर्शन योग्य हैं। भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति वीरनदि कृत चन्द्रप्रभ चरित्र की है जो विक्रम संवत् 1524 भादवा बुदी 7 की लिखी हुई है। इसके अतिरिक्त कपड़े पर भी मण्डल एवं चित्र हैं।

मन्दिर का क्षेत्रफल लगभग 200 वर्ग गज का है जिसमें नीचे दूकानें तथा ऊपर मन्दिर बना हुआ है।

मन्दिर का प्रबन्ध चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है। वर्तमान में श्री दौलतमलजी अजमेरा अध्यक्ष एवं श्री प्रेमचंदजी सौगानी मंत्री हैं।

### 4. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर गोधान

यह मन्दिर धीवालो के रास्ते में, नागौरियों के चौक में स्थित है। इस मन्दिर के निर्माणकर्त्ता व निर्माणकाल के बारे में कोई पुस्तक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। किंवदन्ती है कि गोधा गोत्रीय परिवार ने इसका निर्माण कराया था इसलिए यह गोधों का मन्दिर कहलाता है। “भट्टारक संप्रदाय” के लेख सं. 276 के अनुसार इसका निर्माण सं. 1868 के पूर्व हो चुका था। संवत् 1868, ज्येष्ठ शु. 4 भ. सुखेन्द्र कीर्ति की आम्नाय में जयपुर के नेमिनाथ चैत्यालय गोधों के मन्दिर में वृहदाराधनाकथाकोश की प्रति लिखी गई।

इस मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान् श्री नेमिनाथजी की श्याम पाषाण की है जो अति मनोज्ञ है। मन्दिर में कुल 308 प्रतिमाएँ एवं 127 यंत्र हैं। यंत्रों में सामान्य यंत्रों के अतिरिक्त घटाकरण, ऋषि मंडल एवं क्रमयंत्र (मातृका यंत्र) आदि प्रमुख हैं।

यह विशाल मंदिर संगमरमर के स्तम्भों पर आधारित है, अत्यन्त कलापूर्ण है। अन्दर के चौक में निज वेदी की ओर प्रवेश करने के 3 द्वार हैं जिनमें श्वेत पाषाण में बहुत ही सुन्दर पच्चीकारी का काम है। पक्षियों के आकार अत्यन्त आकर्षक बनाये गये हैं। रंगीन पत्थर की कुराई एवं उसमें मंगल द्रव्य नियोजन बहुत ही बारीकी के साथ चित्ताकर्षक ढंग से किया गया है जो देखते ही बनता है। इस कुराई की कलात्मकता अत्यन्त भव्य व दुर्लभ है। अन्दर निज वेदी में गुम्बज के नीचे सोने की छपाई का सचित्र कार्य है। श्वेत संगमरमर पर बना सम्भेद शिखर का भाव-चित्र भी अत्यन्त मनोज्ञ है। इसके अतिरिक्त कलापूर्ण कृतियों में बड़ा सुनहरी, रथ पालकी, समवर्णरथ तथा हाथी आदि सुरक्षित है तथा ये सब वस्तुएँ उत्सव विधान आदि में काम आती हैं।

मन्दिर में विशाल शास्त्र भण्डार है जिसमें 642 हस्तलिखित ग्रंथ, 107 गुटके तथा 2800 मुद्रित पुस्तकें हैं। ग्रंथ भण्डार पूर्ण व्यवस्थित एवं सुरक्षित है। हस्तलिखित ग्रंथों एवं गुटकों की सूची, ग्रंथ सूची भाग 4 में प्रकाशित हो चुकी है। अठ्ठावन ग्रंथ 17वीं से 19वीं शताब्दी के लिखे हुए हैं। सबसे प्राचीन प्रति, व्रत कथा-कोप की है जो संवत् 1586 की लिखी हुई है। भण्डार में हिन्दी के प्राचीन कवियों के पदों के संग्रह के अतिरिक्त डूंगर कवि की होलिका चौवई (सं. 1629) एवं हरचन्द गंगवाल का पच-कल्याणक प्रतिष्ठा पाठ (सं. 1830) आदि अलभ्य रचनाएँ उपलब्ध हैं। स्व. श्री राजमलजी संधी (गोध्रा) इस शास्त्र भण्डार का कार्य अत्यन्त निष्ठा व रुचिपूर्वक देखते थे। मंदिर में सायकाल के समय निर्धारित शास्त्र सभा चलती है। प्रचार-प्रसार की दृष्टि से पुस्तक प्रकाशन एवं रात्रि पाठशाला की योजनाएँ भी विचाराधीन हैं। समय-समय पर उत्सव विधानादि तथा रथ यात्रा आदि का आयोजन भी होता रहता है।

मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है। मंदिर का क्षेत्रफल 8460 वर्गफीट है जिसमें जिनालय भाग के अलावा नीचे, गोदाम व दुकानें तथा मंदिर के स्वामित्व में तीन मकान हैं।

इसी मंदिर के अधीन सांगानेर का प्रसिद्ध अढाई पैड़ी का मंदिर तथा सांगानेर से 3 कि.मी. दूर श्योपुर ग्राम का जैन मंदिर है।

यह मंदिर सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत पजीकृत है तथा विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा मुख्य मंदिर व अधीनस्थ मंदिरों का प्रबन्ध किया जाता है। यह मंदिर नागौरियों के मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। क्योंकि पुराने समय में नागौर से आये जैन परिवार इसके इर्द-गिर्द बसे हुए हैं इसलिए मंदिरजी का चौक, नागौरियों का चौक कहलाता है। वर्तमान में श्री मोहनलाल अग्रवाल अध्यक्ष एवं श्री मोहनलाल जैन मंत्री हैं।

मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा श्री पाश्र्वनाथ भगवान की है जो सवत् 1678 की प्रतिष्ठित है। यहाँ धातु तथा पापाण की कुल 62 प्रतिमाएँ एवं 11 यंत्र है। इसके अतिरिक्त पाषाण मे शिखरजी के भाव उकेरे हुए है तथा क्षेत्रपाल पद्मावती की प्रतिमाएँ भी हैं। यह मन्दिर बीस पथ आम्नाय का है। मन्दिर का क्षेत्रफल 1600 वर्ग फीट है तथा इसके नीचे नोहरा और दुकानें हैं।

मन्दिर की प्रबन्ध व्यवस्था विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा की जाती है। वर्तमान मे श्री देवेन्द्र मोहनजी कासलीवाल अध्यक्ष एवं श्री सुबोधकुमारजी पांड्या मंत्री हैं।

## 9. श्री दिगम्बर जैन मंदिर लाडीजी

यह मंदिर हल्दियों के रास्ते में ऊंचा कुआ के आगे जैन मन्दिर दारोगाजी के पास स्थित है। यह एक छोटा-सा मंदिर ऊपर सीढिया चढकर है। यह मंदिर कब और किसने बनाया इसका कोई प्रामाणिक उल्लेख नहीं है। इतना अवश्य है कि यह सवत् 1892 के पूर्व का है।

यह मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा इस मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। इस मंदिर मे 22 मूर्तियाँ तथा 7 यंत्र हैं। यहाँ की पचायत ने इस मंदिर की चल-अचल संपत्ति को सवत् 2006 में मंदिरजी ठोलियान के सुपुर्द कर दिया तभी से इसकी व्यवस्था ठोलियो के मंदिर की प्रबन्ध समिति द्वारा की जाती है।

## 10. श्री दिगम्बर जैन मंदिर शान्तिनाथ स्वामी (मंदिर दारोगाजी)

हल्दियों के रास्ते में ऊंचा कुआ के समीप यह विशाल जिनालय प्रथम मंजिल पर है। इसका क्षेत्रफल लगभग 11,300 वर्ग फीट तथा नीचे काफी विशाल तलधर है। मंदिरजी के सड़क से 6 प्रवेशद्वार तथा 5 जीने हैं। इसका निर्माण संवत् 1886 से 1888 में दारोगा स्वरूपचन्दजी पाटनी (खिन्दूका) ने कराया जिसकी पुष्टि मंदिरजी के मुख्य प्रवेशद्वार के सामने बने चार सगमरमरी कलापूर्ण स्तम्भो मे से दो पर लगे निम्नलिखित शिलालेख से स्पष्ट होती है :-

“मंदिर ठाकरजी श्री शान्तिनाथ स्वामी को बराय विराजमान की माह सुदी 5 संवत् 1888 में सेवग दारोगा स्वरूपचन्द खिन्दूका”

मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान शान्तिनाथ की सं० 1641 की मनोज्ञ एव कलापूर्ण है। संगमरमर की वेदी चारों ओर संगमरमर के बारीक कुराई के काम से युक्त एव 25 स्वर्ण कलशों से मडित है। यहाँ 75 प्रतिमाएँ तथा 11 यंत्र हैं। मुख्य वेदी के पृष्ठ भाग में 5 अत्यन्त ही कलापूर्ण सगमरमरी वेदियाँ बनी हुई हैं।

मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा यहाँ के क्षेत्रपाल के मस्तक पर जिन प्रतिमा विराजमान है जो एक त्रिणेपता है। मंदिरजी के प्रवेश-द्वार पर सम्मेद शिखरजी की रचना

प्रत्यक्ष कलापूर्ण रूप में दर्जित है। विशाल चौक के तीन ओर 2-2 दर के विद्यालय तिहारों हैं। निज मंदिर के बाहरी एवं भीतरी भाग में श्वेत संगमरमर पर तरासे गये मन्दिर एवं कलापूर्ण विभिन्न प्रकार के बेलबूटे, पक्षी, पशु इन्द्रादि बने हैं। दाहिने हाथ वाले चैत्यालय की मन्दिर संगमरमरी वेदी के साथ-साथ बाहर एवं भीतर की दीवारों पर बारीक कलम के विभिन्न रंगों से युक्त भित्ति चित्र हैं जिनमें पाड़ुक गिला, पंचकल्याणक तीर्थक्षेत्र, जयपुर नगर, हाथी-घोड़े विभिन्न प्रकार के बेलबूटे बने हैं तथा रंग पुराने हो जाने पर भी नवीनता का आभास कराते हैं। निज मंदिर के प्रवेश हेतु बने मन्दिर कलात्मक द्वारों पर बारह भावना के पद लिखे होने के साथ-साथ मंदिरजी के चौक, तिहारों एवं बाहरी दीवारों पर अनेकों नीति एवं व्यवहार के उपदेशात्मक दोहे विभिन्न रंगों में लिखे हैं।

मन्दिरजी की विशालता के कारण कन्या पाठशाला में विद्याध्ययन करने वाली बालिकाओं ने अनेकों बार जैन नाटकों का मंचन यहाँ किया तथा परम श्रद्धेय आचार्य श्री विद्यानन्दजी, बह्यचारी मूलशंकरजी, चुनीभाईजी देसाई तथा अनेकों त्यागी, वृत्तिप्यों, विद्वानों ने अपने-अपने सार-गभित प्रवचनों के माध्यम से श्रोताओं के मन को झकझोरने के साथ-साथ उनमें त्याग व ध्यान मनन की लौ पैदा कर भक्ति-मार्ग पर अग्रसर होने का मार्ग प्रशस्त कराया है।

मंदिर के तहत दो मकान हैं जिसमें से एक पर घमंशाला प्रस्तावित है तथा कुछ दुकानें हैं। साथ ही बगराणा ग्राम के जिनमंदिरजी का प्रबन्ध भी इसी मंदिरजी के माध्यम से हो रहा है। बापू नगर जैन मंदिर में विराजमान भगवान पाश्र्वनाथ की प्रतिमा भी मन्दिर स्थापना के समय इस ही मंदिरजी से गई हुई है। विशाल जामियाना (तम्बू के आकार का) पद्मपुरा अतिशय क्षेत्र के प्रथम पंचकल्याणक के समय वहाँ मेंट किया गया था।

मन्दिर का प्रबन्ध पंजीकृत विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है। वर्तमान में अध्यक्ष श्री जोरावमलजी पाटनी एवं मंत्री श्री दिलीपचन्दजी पाटनी हैं।

## 11. श्री पाश्र्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर बास गोधान

यह मंदिर हल्दियों का रास्ता, गोधों का चौक में स्थित है। इसके संस्थापक स्व० श्री टोडरमलजी पुत्र श्री किशनरामजी गोधा थे। मन्दिरजी की स्थापना माघ सुदी पंचमी (वसंत पंचमी) सं० 1787 के आस-पास हुई थी। स्व० टोडरमलजी (संस्थापक, मन्दिरजी) ने अपने मकान में से कुछ जमीन देकर उक्त मन्दिर बनवाया था। उन्होंने अपने गोधा भाइयों के परिवारों का सहयोग मन्दिरजी की सेवा-पूजा में लिया, सभी से यह मन्दिर बास गोधान के नाम से जाना जाता है। टोडरमलजी के वंशजों में वर्तमान में प्रेमचन्द गोधा (लवाणवाले) हैं।

मन्दिरजी में मूलनायक 1008 श्री पाश्र्वनाथ स्वामी की प्राचीन व मनोज प्रतिमा है, जिसकी प्रतिष्ठा संवत् 1619 की वैशाख सुदी 15 को मठारक श्री चुमतिकीर्तिजी

मन्दिर मे मूलनायक प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ भगवान की है जो संवत् 1678 की प्रतिष्ठित है। यहाँ घातु तथा पाषाण की कुल 62 प्रतिमाएँ एवं 11 यंत्र है। इसके अतिरिक्त पाषाण में शिखरजी के भाव उकेरे हुए है तथा क्षेत्रपाल पद्मावती की प्रतिमाएँ भी हैं। यह मन्दिर बीस पथ आम्नाय का है। मन्दिर का क्षेत्रफल 1600 वर्ग फीट है तथा इसके नीचे नोहरा और दुकानें है।

मन्दिर की प्रबन्ध व्यवस्था विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा की जाती है। वर्तमान मे श्री देवेन्द्र मोहनजी कासलीवाल अध्यक्ष एवं श्री सुबोधकुमारजी पांड्या मंत्री हैं।

## 9. श्री दिगम्बर जैन मंदिर लाडीजी

यह मंदिर हल्दियों के रास्ते मे ऊंचा कुआ के आगे जैन मन्दिर दारोगाजी के पास स्थित है। यह एक छोटा-सा मंदिर ऊपर सीढियां चढकर है। यह मंदिर कब और किसने बनाया इसका कोई प्रामाणिक उल्लेख नहीं है। इतना अवश्य है कि यह संवत् 1892 के पूर्व का है।

यह मंदिर बीस पथ आम्नाय का है तथा इस में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। इस मंदिर मे 22 मूर्तियाँ तथा 7 यंत्र हैं। यहाँ की पंचायत ने इस मंदिर की चल-अचल संपत्ति को संवत् 2006 मे मंदिरजी ठोलियान के सुपुर्द कर दिया तभी से इसकी व्यवस्था ठोलियों के मंदिर की प्रबन्ध समिति द्वारा की जाती है।

## 10. श्री दिगम्बर जैन मंदिर शान्तिनाथ स्वामी (मंदिर दारोगाजी)

हल्दियों के रास्ते में ऊंचा कुआ के समीप यह विशाल जिनालय प्रथम मंजिल पर है। इसका क्षेत्रफल लगभग 11,300 वर्ग फीट तथा नीचे काफी विशाल तलघर है। मंदिरजी के सड़क से 6 प्रवेशद्वार तथा 5 जीने हैं। इसका निर्माण संवत् 1886 से 1888 में दारोगा स्वरूपचन्द्रजी पाटनी (खिन्दूका) ने कराया जिसकी पुष्टि मंदिरजी के मुख्य प्रवेशद्वार के सामने बने चार संगमरमरी कलापूर्ण स्तम्भो मे से दो पर लगे निम्नलिखित शिलालेख से स्पष्ट होती है :-

“मंदिर ठाकरजी श्री शान्तिनाथ स्वामी को बगाय विराजमान की माह सुदी 5 संवत् 1888 मे सेवग दारोगा स्वरूपचन्द्र खिन्दूका”

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान शान्तिनाथ की सं० 1641 की मनोज्ञ एवं कलापूर्ण है। संगमरमर की वेदी चारों ओर संगमरमर के बारीक कुराई के काम से युक्त एवं 25 स्वर्ण कलशों से मडित है। यहाँ 75 प्रतिमाएँ तथा 11 यंत्र हैं। मुख्य वेदी के पृष्ठ भाग में 5 अत्यन्त ही कलापूर्ण संगमरमरी वेदियाँ बनी हुई हैं।

मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा यहाँ के क्षेत्रपाल के मस्तक पर जिन प्रतिमा विराजमान है जो एक विशेषता है। मंदिरजी के प्रवेश-द्वार पर सम्मेल शिखरजी की रचना

अत्यन्त कलापूर्ण रूप से दण्डित है। विशाल चौक के तीन ओर 2-2 दर के विशाल तिवारे हैं। निज मंदिर के बाहरी एवं भीतरी भाग में श्वेत संगमरमर पर तराजे गये सुन्दर एवं कलापूर्ण विभिन्न प्रकार के वेलवूटे, पक्षी, पशु इन्द्रादि बने हैं। दाहिने हाथ वाले चैत्यालय की सुन्दर संगमरमरी वेदी के साथ-साथ बाहर एवं भीतर की दीवारों पर बारीक कलम के विभिन्न रंगों से युक्त भित्ति चित्र हैं जिनमें पांडुक शिला, पंचकल्याणक तीर्थक्षेत्र, जयपुर नगर, हाथी-घोड़े विभिन्न प्रकार के वेलवूटे बने हैं तथा रंग पुराने हो जाने पर भी नवीनता का आभास कराते हैं। निज मंदिर के प्रवेश हेतु बने सुन्दर कलात्मक द्वारों पर बारह भावना के पद लिखे होने के साथ-साथ मंदिरजी के चौक, तिवारों एवं बाहरी दीवारों पर अनेकों नीति एवं व्यवहार के उपदेशात्मक दोहे विभिन्न रंगों में लिखे हैं।

मन्दिरजी की विशालता के कारण कन्या पाठशाला में विद्याध्ययन करने वाली बालिकाओं ने अनेकों बार जैन नाटकों का मंचन यहाँ किया तथा परम श्रद्धेय आचार्य श्री विद्यानन्दजी, ब्रह्मचारी मूलशंकरजी, चुन्नीभाईजी देसाई तथा अनेकों त्यागी, व्रतियों, विद्वानों ने अपने-अपने सार-गर्भित प्रवचनों के माध्यम से श्रोताओं के मन को झकझोरने के साथ-साथ उनमें त्याग व ध्यान मनन की लौ पैदा कर भक्ति-मार्ग पर अग्रसर होने का मार्ग प्रशस्त कराया है।

मंदिर के तहत दो मकान हैं जिसमें से एक पर घर्मशाला प्रस्तावित है तथा कुछ दुकानें हैं। साथ ही बगराणा ग्राम के जिनमंदिरजी का प्रबन्ध भी इसी मंदिरजी के माध्यम से हो रहा है। बापू नगर जैन मंदिर में विराजमान भगवान् पार्श्वनाथ की प्रतिमा भी मन्दिर स्थापना के समय इस ही मंदिरजी से गई हुई है। विशाल शामियाना (तम्बू के आकार का) पद्मपुरा अतिशय क्षेत्र के प्रथम पंचकल्याणक के समय वहाँ भेंट किया गया था।

मन्दिर का प्रबन्ध पंजीकृत विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है। वर्त्तमान में अध्यक्ष श्री जोरावमलजी पाटनी एवं मंत्री श्री दिलीपचन्दजी पाटनी हैं।

## 11. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर बास गोधान

यह मंदिर हृत्दियों का रास्ता, गोघो का चौक में स्थित है। इसके संस्थापक स्व० श्री टोडरमलजी पुत्र श्री किशनरामजी गोधा थे। मन्दिरजी की स्थापना माघ सुदी पचमी (बसंत पचमी) सं० 1787 के आस-पास हुई थी। स्व० टोडरमलजी (संस्थापक, मन्दिरजी) ने अपने मकान में से कुछ जमीन देकर उक्त मन्दिर बनवाया था। उन्होंने अपने गोधा भाइयों के परिवारों का सहयोग मन्दिरजी की सेवा-पूजा में लिया, तभी से यह मन्दिर बास गोधान के नाम से जाना जाता है। टोडरमलजी के वंशजों में वर्त्तमान में प्रेमचन्द गोधा (लवाणवाले) हैं।

मन्दिरजी में मूलनायक 1008 श्री पार्श्वनाथ स्वामी की प्राचीन व मनोज्ञ प्रतिमा है, जिसकी प्रतिष्ठा संवत् 1619 की वैशाख सुदी 15 को भट्टारक श्री सुमतिकीर्तिजी

मन्दिर मे मूलनायक प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ भगवान की है जो संवत् 1678 की प्रतिष्ठित है। यहाँ घातु तथा पापाण की कुल 62 प्रतिमाएँ एवं 11 यंत्र हैं। इसके अतिरिक्त पाषाण मे शिखरजी के भाव उकेरे हुए हैं तथा क्षेत्रपाल पद्मावती की प्रतिमाएँ भी हैं। यह मन्दिर बीस पंथ आम्नाय का है। मन्दिर का क्षेत्रफल 1600 वर्ग फीट है तथा इसके नीचे नोहरा और दुकाने हैं।

मन्दिर की प्रबन्ध व्यवस्था विधानानुसार चुनो हुई प्रबन्ध समिति द्वारा की जाती है। वर्तमान मे श्री देवेन्द्र मोहनजी कासलीवाल अध्यक्ष एवं श्री सुबोधकुमारजी पाड्या मंत्री हैं।

## 9. श्री दिगम्बर जैन मंदिर लाडीजी

यह मंदिर हल्दियों के रास्ते मे ऊंचा कुआ के आगे जैन मन्दिर दारोगाजी के पास स्थित है। यह एक छोटा-सा मंदिर ऊपर सीढिया चढ़कर है। यह मंदिर कब और किसने बनाया इसका कोई प्रामाणिक उल्लेख नहीं है। इतना अवश्य है कि यह संवत् 1892 के पूर्व का है।

यह मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा इस मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। इस मंदिर मे 22 मूर्तियाँ तथा 7 यंत्र हैं। यहाँ की पचायत ने इस मंदिर की चल-अचल संपत्ति को संवत् 2006 में मंदिरजी ठोलियान के सुपुर्द कर दिया तभी से इसकी व्यवस्था ठोलियों के मंदिर की प्रबन्ध समिति द्वारा की जाती है।

## 10. श्री दिगम्बर जैन मंदिर शान्तिनाथ स्वामी (मंदिर दारोगाजी)

हल्दियों के रास्ते में ऊंचा कुआ के समीप यह विशाल जिनालय प्रथम मंजिल पर है। इसका क्षेत्रफल लगभग 11,300 वर्ग फीट तथा नीचे काफी विशाल तलघर है। मंदिरजी के सड़क से 6 प्रवेशद्वार तथा 5 जीने हैं। इसका निर्माण संवत् 1886 से 1888 में दारोगा स्वरूपचन्दजी पाटनी (खिन्दूका) ने कराया जिसकी पृष्ठ मंदिरजी के मुख्य प्रवेशद्वार के सामने बने चार संगमरमरी कलापूर्ण स्तम्भों मे से दो पर लगे निम्नलिखित शिलालेख से स्पष्ट होती है.-

“मंदिर ठाकरजी श्री शान्तिनाथ स्वामी को बर्याय विराजमान की माह सुदी 5 संवत् 1888 में सेवग दरोगा स्वरूपचन्द खिन्दूका”

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान शान्तिनाथ की सं० 1641 की मनोज्ञ एवं कलापूर्ण है। संगमरमर की वेदी चारों ओर संगमरमर के बारीक कुराई के काम से युक्त एवं 25 स्वर्ण कलशों से मडित है। यहाँ 75 प्रतिमाएँ तथा 11 यंत्र हैं। मुख्य वेदी के पृष्ठ भाग मे 5 अत्यन्त ही कलापूर्ण संगमरमरी वेदियाँ बनी हुई हैं।

मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा यहाँ के क्षेत्रपाल के मस्तक पर जिन प्रतिमा विराजमान है जो एक विशेषता है। मंदिरजी के प्रवेश-द्वार पर सम्मैद शिखरजी की रचना

अत्यन्त कलापूर्ण रूप से दर्शित है। विशाल चौक के तीन ओर 2-2 दर के विद्याल तिवारे है। निज मंदिर के बाहरी एवं भीतरी भाग में श्वेत संगमरमर पर तराशे गये सुन्दर एवं कलापूर्ण विभिन्न प्रकार के बेलबूटे, पक्षी, पशु इन्द्रादि बने हैं। दाहिने हाथ वाले चैत्यालय की सुन्दर संगमरमरी वेदी के साथ-साथ बाहर एवं भीतर की दीवारों पर वारीक कलम के विभिन्न रंगों से युक्त भित्ति चित्र हैं जिनमें पांडुक शिला, पचकल्याणक तीर्थक्षेत्र, जयपुर नगर, हाथी-घोड़े विभिन्न प्रकार के बेलबूटे बने हैं तथा रंग पुराने हो जाने पर भी नवीनता का आभास कराते हैं। निज मंदिर के प्रवेश हेतु बने सुन्दर कलात्मक द्वारों पर बारह भावना के पद लिखे होने के साथ-साथ मंदिरजी के चौक, तिवारों एवं बाहरी दीवारों पर अनेकों नीति एवं व्यवहार के उपदेशात्मक दोहे विभिन्न रंगों में लिखे हैं।

मन्दिरजी की विशालता के कारण कन्या पाठशाला में विद्याध्ययन करने वाली बालिकाओं ने अनेकों बार जैन नाटको का मचन यहाँ किया तथा परम श्रद्धेय आचार्य श्री विद्यानन्दजी, ब्रह्मचारी मूलशंकरजी, चुन्नीभाईजी देसाई तथा अनेकों त्यागी, व्रतियों, विद्वानों ने अपने-अपने सार-गर्भित प्रवचनों के माध्यम से श्रोताओं के मन को झकझोरने के साथ-साथ उनमें त्याग व ध्यान मनन की लौ पैदा कर भक्ति-मार्ग पर अग्रसर होने का मार्ग प्रशस्त कराया है।

मंदिर के तहत दो मकान हैं जिसमें से एक पर घर्मशाला प्रस्तावित है तथा कुछ दुकानें हैं। साथ ही बगराणा ग्राम के जिनमंदिरजी का प्रबन्ध भी इसी मंदिरजी के माध्यम से हो रहा है। बापू नगर जैन मंदिर में विराजमान भगवान् पार्श्वनाथ की प्रतिमा भी मन्दिर स्थापना के समय इस ही मंदिरजी से गई हुई है। विशाल शामियाना (तम्बू के आकार का) पद्मपुरा अतिशय क्षेत्र के प्रथम पचकल्याणक के समय वहाँ भेंट किया गया था।

मन्दिर का प्रबन्ध पंजीकृत विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है। वर्तमान में अध्यक्ष श्री जोरावमलजी पाटनी एवं मंत्री श्री दिलीपचन्दजी पाटनी हैं।

## 11. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर बास गोधान

यह मंदिर हृदयों का रास्ता, गोधो का चौक में स्थित है। इसके संस्थापक स्व० श्री टोडरमलजी पुत्र श्री किशनरामजी गोधा थे। मन्दिरजी की स्थापना माघ सुदी पचमी (बसंत पचमी) सं० 1787 के आस-पास हुई थी। स्व० टोडरमलजी (संस्थापक, मन्दिरजी) ने अपने मकान में से कुछ जमीन देकर उक्त मन्दिर बनवाया था। उन्होंने अपने गोधा भाइयों के परिवारों का सहयोग मन्दिरजी की सेवा-पूजा में लिया, तभी से यह मन्दिर बास गोधान के नाम से जाना जाता है। टोडरमलजी के वंशजों में वर्तमान में प्रेमचन्द गोधा (लवाणवाले) हैं।

मन्दिरजी में मूलनायक 1008 श्री पार्श्वनाथ स्वामी की प्राचीन व मनोज्ञ प्रतिमा है, जिसकी प्रतिष्ठा संवत् 1619 की वैशाख सुदी 15 को भट्टारक श्री सुमतिकीर्तिजी

द्वारा की गई थी। एक मूर्ति भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की वैशाख नुदी 2 की प्रतिष्ठित है जिस पर सं० 15 अंकित होना बताया जाता है।

मन्दिरजी में कुल 74 प्रतिमाएँ एव 33 यंत्र हैं। बीस पथ आम्नाय से पूजा होती है। इसका प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है। वर्तमान में श्री देवेन्द्रकुमारजी गोधा अध्यक्ष एव श्री प्रेमचन्दजी लवाणवाले मंत्री हैं।

## 12. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर ईश्वरलालजी गोधा

यह मन्दिर हल्दियों के रास्ते में ऊंचे कुए के पास स्थित है। यह मन्दिर पहिले चैत्यालयों की गणना में ही था किन्तु अब ऊँचा शिखर बन जाने के कारण इसे मन्दिर माना जाने लगा है। यह जिनालय स्व० ईश्वरलालजी गोधा के निजी मकान में ही बनवाया हुआ है। उन्होंने कब बनवाया यह निश्चित तिथि ज्ञात नहीं है। सं० 2002 में श्री जोखीराम बैजनाथ सरावगी कलकत्ता वाले ने इस पर शिखर बनवाया था।

इस मन्दिर में 72 प्रतिमाएँ तथा 18 यंत्र हैं। मूल नायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है। घातु की 5 मेरु भी है। सभी प्रतिमाएँ एक ही वेदी में हैं। मन्दिर तेरहपंथ आम्नाय का है। वर्तमान में इसका प्रबन्ध श्री प्रदीपकुमारजी गोधा देखते हैं।

## 13. दि० जैन मंदिर श्री चन्द्रप्रभ जिनालय पं० लूणकरणजी

यह मंदिर ठाकुर पंचेवर के रास्ते में स्थित है। इसका निर्माण महाराजा सवाई जयसिंह के शासन काल में दीवान केशवदास के पुत्र दीवान ताराचन्द बिलाला ने सं० 1773 से 1790 के बीच करवाया। दीवान ताराचन्द की वंशावली उपलब्ध नहीं है किन्तु मंदिर की संवत् 1829 की बही में यह उल्लेख अवश्य मिलता है — “दसकत ताराचन्द बिलाला जामण, परण, मरण त्योंहार देहरे करणो”। इनका जन्म सं० 1765 में हुआ था। मन्दिर में पं० लूणकरणजी कब और कहाँ से आये इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता किन्तु सचित्र ग्रंथ यशोधर चरित्र की सं० 1788 की प्रति से ज्ञात होता है कि धानसिंह के पुत्र रामचंद ने इस ग्रंथ की प्रति पं० लूणकरणजी को भेंट की। इस ग्रंथ में पं० लूणकरण, उनके गुरु खीवसी तथा रामचंद का चित्र भी है। पं० खीवसी भ० सुरेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एवं भ० देवेन्द्र कीर्ति के शिष्य थे।

पंडित लूणकरण अपने समय के संस्कृत के प्रकांड विद्वान्, यंत्र, मंत्र, तंत्र, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि के महान् ज्ञाता रहे हैं तथा इनके शिष्य पं० सरूपचंद, ऋषभचंद, सदासुख आदि भी यंत्र-मंत्र के पूर्णतया जानकार थे तथा ग्रंथ भी लिखा करते थे। यह राजकीय सम्मानित पंडित थे। राज्य से सवाई माधोपुर व खडार में जमीन ठाकुरजी की सेवा-पूजा हेतु जागीर में दी गई थी। साभर से प्रतिवर्ष 500 मण नमक आता था। चबूतरा राहदारी, टकसाल में बनने वाले रुपयो व म्होरो की लागबाग आया करती थी, वच्ची की रहन रखकर या खरीदकर चेला बनाते थे। गृहस्थियों के घर भी भोजन करते थे। पं० लूणकरणजी का स्वर्गवास आश्विन शुक्ल। संवत् 1855 को हुआ। पंडितों के

स्वर्गवास पर अन्य पंडितों के यहाँ से कड़ी खीचड़ी आती थी। टीका होता था। इनकी शिष्य परंपरा सवत् 1934 तक रही। इसके बाद किसी भी पंडित की स्थापना नहीं हुई।

इस जिनालय में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की श्वेतपापाण की सवत् 1545 की प्रतिष्ठित है जो अति मनोज्ञ एवं आकर्षक है। यहाँ 175 प्रतिमाएँ तथा 70 यंत्र हैं। देवियों में सबसे प्राचीन प्रतिमा अम्बिका माता की संवत् 1451 की प्रतिष्ठित है। ज्वालामालिनी व पद्मावती देवी तथा सर्वांग यक्ष की मनोज्ञ मूर्तियाँ हैं। तीर्थंकर प्रतिमाओं में सबसे प्राचीन घातुकी चौबीसी है जो संवत् 1443 में वैशाख सुदी 12 की प्रतिष्ठित है। मन्दिरजी में विराजमान पद्मावती, ज्वालामालिनी तथा अम्बिका देवी एवं 3 क्षेत्रपालों की लोको में अधिक मान्यता है। प्रत्येक शुक्रवार को दर्शनार्थियों की भीड़ रहती है। चांदी का सर्प-सर्पिणी का जोड़ा भी है। मन्त्र, यंत्र साधना स्थल होने के कारण मंदिर में 1465 खानों का विजय यत्र व अनेक प्रकार के और भी दुर्लभ यत्र हैं।

यहाँ का शास्त्र भण्डार विशाल है जो सचित्र ग्रंथ व अनेक प्रकार की पूजाओं के मण्डल चित्र, तथा रावण, गरुडशजी, हनुमानजी, त्रिपुर भैरवी देवी, सूर्य प्रताप यंत्र, मृत्युञ्जय यत्र, भट्टारक पट्टावली की प्राचीन प्रति व गुटकों के संग्रह के लिये प्रसिद्ध है। भण्डार में लगभग 850 हस्तलिखित ग्रंथ एवं 250 गुटके हैं जिनकी सूची जैन ग्रंथ भण्डारों की सूची भाग 3 में प्रकाशित हो चुकी है। सचित्र यशोधर चरित्र यहाँ का मुख्य ग्रंथ है जिसको दोहरे कांच के फ्रेम में मंडवा कर शीशम की लकड़ी में दो स्टेण्डों में पच्ची कराकर सुरक्षित करा दिया है। भैरव, पद्मावती कल्प की सचित्र प्रति भी है जो दुहरे कांच के फ्रेम में जड़वा ली गई है।

पुराने रिकांडे की दृष्टि से यहाँ का भण्डार महत्वपूर्ण है। पुरानी बहियों में पंडितों को गृहस्थां से तथा मन्दिर में विधान पूजा आदि कराने से आनेवाली भेंट, तथा पहरावणी व यहाँ से अन्य पंडितों को दिये जाने वाली भेंट आदि का इन्द्राज है। इन्हीं बहियों में विभिन्न मन्दिरों का शिलान्यास, चंवरी में मूलनायक प्रतिमा वेदी प्रतिष्ठा कराकर विराजमान कराना, कलशारोहण, गृहस्थियों को यंत्र-मन्त्र तथा श्रौषधिया बताना, ग्रंथों का लिखाना, घरों पर शास्त्र पढना तथा दीवान भट्टारक आदि की भेंट का भी विवरण उपलब्ध है।

मन्दिर में भाद्रपद मास में विधान पूजा, महावीर निर्वाणोत्सव, श्रुतपंचमी महोत्सव, भगवान चन्द्रप्रभ का जन्म निर्वाणोत्सव मनाया जाता है।

गत 20 वर्षों में काफी विकास कार्य पूरे हुए हैं जिनमें कूप का निर्माण तथा जीर्णोद्धार, बिहारी में कमरा, बाहर की दुकानों के बरामदे आदि मुख्य हैं।

मन्दिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा प्रबन्ध चुनी हुई प्रबन्धकारिणी समिति द्वारा किया जाता है। मन्दिर में नित्य शास्त्र प्रवचन नहीं होता किन्तु नित्य रात्रि को 9 बजे तक शास्त्र भण्डार की देख-रेख तथा स्वाध्याय हेतु पुस्तकों का आदान-प्रदान होता है। वर्तमान में श्री राजकुमारजी मुंशीमहल वाले अध्यक्ष एवं श्री मुन्नालालजी बाणायत वाले मंत्री हैं।

## 14. श्री दि. जैन मन्दिर (आदिनाथ स्वामी) बखशीजी का

यह मन्दिर रामगज बाजार मे बखशीजी के चौक मे स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण कब और किसने कराया इसका कोई पुस्तक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। स्वरूपचन्द बिलाला कृत जयपुर की जैन मन्दिर वन्दना मे इसे कृपाराम बखशी का बताया गया है। यह निश्चित है कि मन्दिर का निर्माण सम्वत् 1892 के पूर्व का है।

मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा आदिनाथ भगवान की है जो काफी प्राचीन है किन्तु उस पर कोई लेख तथा सबत् आदि कुछ भी नहीं है। इस मन्दिर मे धातु तथा पाषाण की कुल 158 प्रतिमाएँ तथा 22 यंत्र हैं। एक प्रतिमा कमल की पाँच पांखुडी मे भी विराजमान हैं।

मन्दिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा पद्मावती देवी एव क्षेत्रपाल की यक्ष की प्रतिमाएँ भी हैं।

यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है। मन्दिर सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत पजीकृत है। मन्दिर के बराबर मकान, दुकान तथा सभा भवन है। मन्दिर के प्रागण मे झाड़शाही एव कलदार चादी के सिक्के भी जड़े है। साधु-साध्वियों के ठहरने का अच्छा स्थान है। उल्लेखनीय है कि यहा आचार्य धर्मसागरजी महाराज ससंघ सन् 1969 ई० मे चातुर्मास कर चुके हैं।

मन्दिर कलापूर्ण है और कितने ही भित्ति चित्र भी है जिनमे गिरनार तथा सम्भेदशिखरजी का दृश्याकन सुन्दर है मन्दिर दुच्छता है, दुच्छते मे भी संसार वृक्ष तथा मुनियों पर उपसर्ग के चित्र हैं। मन्दिर मे एक हाथी व समवसरण भी है जो उत्सव आदि मे काम आता है।

लूणकरणजी के मन्दिर में उपलब्ध पुरानी बहियों मे इस मन्दिर का और पडितों तथा बखशीजी का काफी सम्पर्क रहा है ऐसा भी उल्लेख मिलता है।

मन्दिर का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है। वर्तमान मे श्री अशोककुमारजी बखशी अध्यक्ष एव श्री लक्ष्मीनारायणजी बखशी मंत्री हैं।

## 15. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मुशरफान

यह मन्दिर हल्दियों के रास्ते मे मुशरफ कॉलोनी मे स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण मुशरफ एवं बिन्दायक्या परिवार ने कराया। मन्दिर का निर्माण कब हुआ इसका पक्का प्रमाण तो कोई उपलब्ध नहीं है फिर भी स्वरूप चन्द बिलाला की चैत्य वन्दना के अनुसार यह मन्दिर सवत् 1892 से पूर्व का है।

मन्दिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की श्वेत पाषाण की है। मूल वेदी के अतिरिक्त दो वेदियाँ और है। यहाँ कुल 102 प्रतिमायें तथा 15 यंत्र हैं। प्रतिमाएँ अधिकांश संवत् 1826 व 1861 की हैं। सबसे पुरानी प्रतिमा सवत् 149 व 794 की बतलायी जाती है।

यहाँ एक प्रतिमा श्वेत पाषाण की सवत् 1727 की प्रतिष्ठित 1008 फनवाले पार्श्वनाथ की है जो अत्यन्त मनोज्ञ है। यह मूर्ति 109 8 से.मी. × 71 से.मी. श्रवगाहना की पद्मासन मुद्रा में है। पार्श्वनाथ भगवान के सिर पर 1008 सर्प-फनों की आकृति 17 से.मी. मोटाई व 61 से.मी. चौड़ाई के आकार पर बनी हुई है। आचार्य श्री विमलसागरजी ने अपने जयपुर प्रवास के समय इस मूर्ति की मनोहारी छवि देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए और उन्होंने इसे दुर्लभता से मिलने वाली प्रतिमाओं में से एक बताया।

मन्दिर मे मुख्य वेदी के पीछे दीवार पर श्वेत पाषाण मे पचकल्याणक व सम्भेद शिखर के अश तराश कर अंकित है। मन्दिर की मुख्य वेदी के शिखर पर स्वर्ण का नक्काशीदार काम किया हुआ है। 1008 सर्पफणों वाली पार्श्वनाथ जिन चैत्यालय की दीवारो पर बहुत ही सुन्दर स्वर्ण चित्रकारी है। मन्दिर में अन्दर व बाहर फर्श पर श्वेत पाषाण प्रयोग मे लिया गया है। सीढ़ियाँ भी श्वेत पाषाण की है जिनमे सुन्दर लहरियादार धारियाँ हैं।

मन्दिर मे पालकी, हाथी तथा समवसरण है जिन पर सोने का काम चित्रित है।

शास्त्र भण्डार में करीब 150 ग्रन्थों का संग्रह है।

मन्दिर तेरह पंथ आमनाय का है। मन्दिर में पाणिग्रहण मे उपयोग आने वाला सामान तथा सुन्दर वेदी उपलब्ध है। मन्दिर का क्षेत्रफल 4900 वर्ग फीट है तथा मंदिर के पास तीन भवन व दुकानें हैं।

यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति, जिसका नाम "श्री दिगम्बर जैन पचायत मन्दिरजी मुशरफान है", द्वारा होता है। संस्था सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत भी पंजीकृत है।

वर्तमान मे मन्दिर के अध्यक्ष श्री कमलचद मुशरफ एवं मंत्री श्री राजेन्द्र कुमार पाटनी हैं।

## 16. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बैदान

यह मन्दिर मनीरामजी की कोठी का रास्ता, रामगज बाजार में स्थित है। इसे कठमाणा निवासी खेमकरण के पुत्र कनीराम ने, जो सम्बत् 1807 से 1820 तक दीवान रहे, सम्बत् 1807 में बनवाया था। इन्होंने कठमाणा मे भी मन्दिर बनवाया था। मंदिर के बराबर जयपुर में आज भी कठमाणा वालों की हवेली है।

मन्दिर मे मूलनायक प्रतिमा महावीर स्वामी की है। यहाँ कुल 95 प्रतिमाएँ और 30 यत्र हैं। यहाँ बड़े आकार के यन्त्र भी है जो अधिकाश ताम्बे के हैं। मन्दिर बीस पंथ आमनाय का है।

मन्दिर के नीचे हवेली तथा दुकाने है।

मन्दिर का प्रबन्ध श्री सुरेशचन्द बैद कठमाणा वाले करते हैं।

## 14. श्री द्वि. जैन मन्दिर (आदिनाथ स्वामी) बख्शीजी का

यह मन्दिर रामगज बाजार में बख्शीजी के चौक में स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण कब और किसने कराया इसका कोई पुराना प्रमाण उपलब्ध नहीं है। स्वरूपचन्द्र बिलाला कृत जयपुर की जैन मन्दिर वन्दना में इसे हृषिकेश दख्शी का बनाया गया है। यह निश्चित है कि मन्दिर का निर्माण संवत् 1892 के पूर्व का है।

मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा आदिनाथ भगवान की है जो काफी प्राचीन है किन्तु उस पर कोई लेख तथा संवत् आदि कुछ भी नहीं है। इस मन्दिर में घातु तथा पाषाण की कुल 158 प्रतिमाएँ तथा 22 यंत्र हैं। एक प्रतिमा कमल की पाँच पांखुड़ी में भी विराजमान है।

मन्दिर बीस पंच आन्नाय का है तथा पद्मावती देवी एक क्षेत्रपाल की यज्ञ की प्रतिमाएँ भी है।

यहाँ का प्रबंध विधानानुसार चुनी हुई प्रबंध समिति द्वारा किया जाता है। मन्दिर सार्वजनिक श्रद्धा के अन्तर्गत पंजीकृत है। मन्दिर के वरानर मकान, दुकान तथा सभा भवन हैं। मन्दिर के प्रांगण में झाड़शाही एवं कलदार चादी के सिक्के भी जड़े हैं। साधु-साध्वियों के ठहरने का मन्त्रालय स्थान है। उल्लेखनीय है कि यहाँ आचार्य धर्मसागरजी महाराज संवत् 1969 ई० में चातुर्नास कर चुके हैं।

मन्दिर कलापूर्ण है और कितने ही भित्ति चित्र भी हैं जिनमें गिरनार तथा सम्भेदशिखरजी का दृश्यांकन सुन्दर है मन्दिर दुष्टता है, दुष्टते में भी संसार वृक्ष तथा भुक्तियों पर उपसर्ग के चित्र हैं। मन्दिर में एक हाथी व तनवसरण भी है जो उत्सव आदि में काम आता है।

लूणकरणीजी के मन्दिर में उपलब्ध पुरानी बहियों में इस मन्दिर का और पंडितों तथा बख्शीजी का काफी सन्पर्क रहा है ऐसा भी उल्लेख मिलता है।

मन्दिर का प्रबंध विधानानुसार चुनी हुई प्रबंध समिति द्वारा किया जाता है। वर्तमान में श्री अशोककुमारजी बख्शी अध्यक्ष एवं श्री लक्ष्मीनारायणजी बख्शी मंत्री हैं।

## 15. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मुशरफान

यह मन्दिर हल्द्वियों के रास्ते में मुशरफ कॉलोनी में स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण मुशरफ एवं दिन्दायक्या परिवार ने कराया। मन्दिर का निर्माण कब हुआ इसका पक्का प्रमाण तो कोई उपलब्ध नहीं है फिर भी स्वरूपचन्द्र बिलाला की जैतप वन्दना के अनुसार यह मन्दिर संवत् 1892 से पूर्व का है।

मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की श्वेत पाषाण की है। मूल वेदी के अतिरिक्त दो वेदियाँ और हैं। यहाँ कुल 102 प्रतिमाएँ तथा 15 यंत्र हैं। प्रतिमाएँ अद्विकान्त संवत् 1826 व 1861 की हैं। सबसे पुरानी प्रतिमा संवत् 149 व 794 की दत्तायी जाती है।

यहाँ एक प्रतिमा श्वेत पाषाण की सवत् 1727 की प्रतिष्ठित 1008 फनवाले पार्श्वनाथ की है जो अत्यन्त मनोज्ञ है। यह मूर्ति 109 8 से.मी. × 71 से.मी. अवगाहना की पद्मासन मुद्रा में है। पार्श्वनाथ भगवान के सिर पर 1008 सर्प-फनो की आकृति 17 से.मी. मोटाई व 61 से.मी. चौड़ाई के आकार पर बनी हुई है। आचार्य श्री विमलसागरजी ने अपने जयपुर प्रवास के समय इस मूर्ति की मनोहारी छवि देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए और उन्होंने इसे दुर्लभता से मिलने वाली प्रतिमाओं में से एक बताया।

मन्दिर में मुख्य वेदी के पीछे दीवार पर श्वेत पाषाण में पचकल्याणक व सम्मैद शिखर के अंश तराश कर अंकित है। मन्दिर की मुख्य वेदी के शिखर पर स्वर्ण का नक्काशीदार काम किया हुआ है। 1008 सर्पफणों वाली पार्श्वनाथ जिन चैत्यालय की दीवारों पर बहुत ही सुन्दर स्वर्ण चित्रकारी है। मन्दिर में अन्दर व बाहर फर्श पर श्वेत पाषाण प्रयोग में लिया गया है। सीढ़ियाँ भी श्वेत पाषाण की हैं जिनमें सुन्दर लहरियादार धारियाँ हैं।

मन्दिर में पालकी, हाथी तथा समवसरण हैं जिन पर सोने का काम चित्रित है।

शास्त्र भण्डार में करीब 150 ग्रन्थों का संग्रह है।

मन्दिर तेरह पथ आम्नाय का है। मन्दिर में पाणिग्रहण में उपयोग आने वाला सामान तथा सुन्दर वेदी उपलब्ध है। मन्दिर का क्षेत्रफल 4900 वर्ग फीट है तथा मन्दिर के पास तीन भवन व दुकाने हैं।

यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति, जिसका नाम "श्री दिगम्बर जैन पंचायत मन्दिरजी मुशरफान है", द्वारा होता है। संस्था सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत भी पंजीकृत है।

वर्तमान में मन्दिर के अध्यक्ष श्री कमलचंद मुशरफ एवं मंत्री श्री राजेन्द्र कुमार पाटनी हैं।

## 16. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बैदान

यह मन्दिर मनीरामजी की कोठी का रास्ता, रामगंज बाजार में स्थित है। इसे कठमाणा निवासी खेमकरण के पुत्र कनीराम ने, जो सम्वत् 1807 से 1820 तक दीवान रहे, सम्वत् 1807 में बनवाया था। इन्होंने कठमाणा में भी मन्दिर बनवाया था। मन्दिर के बराबर जयपुर में आज भी कठमाणा वालों की हवेली है।

मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा महावीर स्वामी की है। यहाँ कुल 95 प्रतिमाएँ और 30 यत्र हैं। यहाँ बड़े आकार के यन्त्र भी हैं जो अधिकांश ताम्बे के हैं। मन्दिर बीस पंथ आम्नाय का है।

मन्दिर के नीचे हवेली तथा दुकानें हैं।

मन्दिर का प्रबन्ध श्री सुरेशचन्द्र बैद कठमाणा वाले करते हैं।

## 17. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चाकसू

यह मन्दिर चाकसू का चौक, जौहरी बाजार में स्थित है। इस बीस पंथी पंचायती मन्दिर का निर्माण जयपुर बसने के साथ ही सन् 1782 में हुआ था। इसे चाकसू से आये राव कृपारामजी ने, जो महाराजा जयसिंह के नवरत्नों में से एक थे, बनवाया था। राव कृपारामजी की हवेली आमेर रोड पर कच्चे बन्वे के पास है जो रावजी का घर कहलाता है। वहाँ अब भी दो चैत्यालय है। कहते हैं उन्होंने 120 सूर्य मन्दिर बनवाये थे, गलता की पहाड़ी पर सूर्य मन्दिर भी उन्हीं ने बनवाया था।

इस मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। यहाँ 10 वेदियाँ हैं जिनमें 195 मूर्तियाँ तथा 15 यंत्र हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा स० 1185 की प्रतिष्ठित है जो भगवान अरहनाथजी की है। यन्त्रों में एक यंत्र पीतल का गोल 14" के आकार का स० 1783 का बांसखोह ग्राम का प्रतिष्ठित है उसमें प्रतिष्ठा कारक हृदयराम लुहाड़िया के नाम के बाद लिखा है।

“मंदिर चाटसू पंचा को करायो यंत्र सोलहकारण को प्रतिष्ठा कारिता। राजा सवाई जयसिंह विजय राज्ये श्री रस्तु शुभंभूयात्।”

इससे ज्ञात होता है कि यह मन्दिर स० 1783 के पूर्व का ही है। यहाँ पद्मावतीजी की मूर्ति तथा घातु के बड़े पंच मेरु भी हैं।

मन्दिर कलापूर्ण है, चौक में निज मन्दिर के तीनों द्वारों पर मकराने की कुराई का ऐसा सुन्दर काम है जो अन्यत्र नहीं। यहाँ एक बड़ा सुन्दर रथ भी है जो चारों रथों के मेले स० 1941 में निकला था। अब रथ जीर्ण-शीर्ण दशा में है।

यहाँ शास्त्र भण्डार भी है जिसमें करीब 250 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं जो सूची कृत है। यहाँ “सम्मेदशिखर महात्म्य” की ऐतिहासिक रचना है जिसमें संघी रायचन्द छाबड़ा (दीवान) का स० 1863 का शिखर यात्रा का वर्णन है। मकराने पर पाचो पाण्डवों के भाव अंकित है जो सुरक्षित हैं।

बीस पंथी पंचायती मन्दिर होने के कारण श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी भी इस मन्दिर से काफी जुड़ा हुआ है। महावीर क्षेत्र पर भट्टारकजी की नियुक्ति के सम्बन्ध में जब तक यहाँ से तथा पाटोदी के मन्दिर के पंचों की ओर से लिखा नहीं जाता था, नहीं होती थी। तत्कालीन जयपुर रियासत द्वारा इन दोनों पंचायती मन्दिरों के पंचों के कहने पर भट्टारकजी को दुशाला भेंट किया जाता था और उनके द्वारा सुझाये गये व्यक्ति को ही भट्टारक नियुक्त किया जाता था। दोनों मन्दिरों के पंचों के कहने पर ही श्री महावीरजी क्षेत्र पर कोर्ट ऑफ वार्ड्स का प्रबन्ध हुआ था तथा हटाया गया और वहाँ का प्रबन्ध जयपुर पंचायत को संभलाया गया।

मन्दिर का क्षेत्रफल 4000 वर्ग फीट है। इसके नीचे दुकान है।

मंदिर के पास ही मंदिर की एक हवेली है जो भट्टारकजी की विहारी के नाम से जानी जाती है। बिहारी का प्रबन्ध आजकल महावीर क्षेत्र के अन्तर्गत है।

पाणिग्रहण संस्कार हेतु आवश्यक सामान के 2 सेट उपलब्ध है।

यहाँ की पुरानी बहियां आदि के अनुसार सागानेर का सधीजी का मंदिर भी इसी मन्दिर के अन्तर्गत था। वहाँ के आय एवं व्यय का इन्द्राज यहाँ की बहियों में मिलता है। मेले तथा अन्य अवसरों पर सामग्री आदि का खर्च यहाँ से होता था तथा आय भी यहाँ जमा होती थी।

यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है। संस्था सार्वजनिक प्रत्यास के अन्तर्गत पजीकृत है। वर्तमान में श्री केवलचन्द ठोलिया अध्यक्ष एवं श्री नाथूलाल गोदीका मन्त्री हैं।

## 18. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बूचरों (लुहाड़ियों) का

यह मन्दिर जौहरी बाजार, चाकसू का चौक, जयपुर में स्थित है। इसे कब और किसने बनवाया इसका कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। बूचरों (लुहाड़ियों) का होने से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मन्दिर के आस-पास रहने वाले लुहाड़िया परिवार वालों ने बनवाया होगा।

अनुमान है कि चाकसू के मन्दिर के साथ ही स० 1784 के आस-पास इसका निर्माण हुआ है।

इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की सवत् 1658 की प्रतिष्ठित है। यहाँ 24 तीर्थंकरों की 24 प्रतिमाएँ फेरी में विराजमान हैं। यहाँ 110 प्रतिमाएँ एवं 22 यंत्र हैं। एक श्वेत पापाण की प्रतिमा पर सं० 117 अंकित बताया जाता है। पश्चिम की ओर पूर्वाभिमुखी निज वेदी है जो सुन्दर है। तिवारे में श्रीजी विराजमान है। यहाँ धरणेन्द्र की धातु की खड्गासन की प्रतिमा है तथा पद्मावती एवं क्षेत्रपाल की भी प्रतिमाएँ हैं।

यहाँ के शास्त्र भण्डार में 40-50 ग्रंथ होंगे। मन्दिर कलापूर्ण है। मन्दिर में दक्षिण की ओर दीवार पर मकराने के स्वर्णजडित सुन्दर अनेक भाव बने हैं, जिनमें सम्भेद शिखर, गिरनार, गंध कुटी पुरुषाकार तीन लोक चित्र प्रमुख हैं। वे सभी कांच में बड़े हुए हैं।

मन्दिर बीस पथ आम्नाय का है।

यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है। मन्त्री श्री राजमलजी बूचरा है।

## 19. श्री दिगम्बर जैन मंदिर जीऊबाई

यह मन्दिर मोतीसिंह भोमिया के रास्ते में शिवजीराम भवन के सामने स्थित है ।

इस मन्दिर की निर्माणकर्त्री जीऊबाई कौन थी, कहां की थी और उन्होंने इस मन्दिर का निर्माण कब कराया इसका कोई प्रमाणिक उल्लेख नहीं मिलता । इतना अवश्य है कि इसका निर्माण सवत् 1892 के पूर्व हो चुका था ।

इसमें मूलनायक प्रतिमा वासुपूज्य भगवान की है तथा यहाँ कुल 24 प्रतिमाएँ एव 10 यत्र है । मन्दिर की वेदी कला पूर्ण है एवं एक अत्यन्त आकर्षक काच की जड़ी हुई है ।

मंदिर का क्षेत्रफल 2500 वर्ग फीट है । मन्दिर के नीचे दूकान और बराबर में हवेली भी है । यहाँ करीब 30 हस्तलिखित ग्रंथ है ।

यह मन्दिर तेरहपंथ आम्नाय का है तथा विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा यहाँ की व्यवस्था की जाती है । वर्तमान में डा. गोपीचन्दजी पाटनी अध्यक्ष एवं श्री नानूलालजी गोधा मंत्री हैं ।

## 20. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर भूराजी का

यह मन्दिर मोतीसिंह भोमिया के रास्ते में चौबीस महाराज के मन्दिर के पास स्थित है ।

इस मन्दिर के निर्माणकर्ता श्री भूराजी कौन और कहां के थे कोई जानकारी नहीं है । स्वरूपचंद बिलाला की मन्दिर सूची के अनुसार इसका निर्माण सं० 1892 के पूर्व हो गया था ।

इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो सं० 1861 की प्रतिष्ठित है । इसमें कुल 28 प्रतिमाएँ एव 2 यत्र हैं ।

मंदिर का क्षेत्रफल करीब 600 वर्ग फीट है तथा इसके नीचे दूकानें हैं ।

यह मन्दिर तेरहपंथ आम्नाय का है । यहाँ के शास्त्र भण्डार में करीब 50 ग्रंथ हैं । वर्तमान में यहाँ का प्रबन्ध श्री कपूरचन्दजी पापड़ीवाल करते हैं ।

## 21. श्री दिगम्बर जैन मंदिर चौबीस महाराज (लाला अमीचंद टोंग्या)

यह मन्दिर मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, जौहरी बाजार में स्थित है लाला अमीचंद टोंग्या दिल्ली वाले ने बनवाया था । इसका निर्माण सं० 1883 तक हुआ । सवत् 1883 में इसमें प्रतिमाएँ विराजमान हुईं । 5 प्रतिमा नेमिनाथ भगवान की है । मन्दिर निर्माणकर्ता के सम्बन्ध में 4 शिलालेख हैं :-

“श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चौबीस महाराज का लाला अमीचद टोंग्या ने बनवाया सवत् 1883 । सवत् 1883 माह सुदी 5 सेवक अमीचन्दजी टोंग्या वासी दिल्ली ।”

इस मन्दिर मे कुल 102 प्रतिमाएँ हैं जिनमे अधिकतर पापाण की है जो सभी स० 1883 की प्रतिष्ठित हैं । संवत् 1883 माह सुदी 5 को बाडी ग्राम मे प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ था जिसमे सैकड़ों की सख्या मे विशाल प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा हुई थी । यह प्रतिष्ठा महोत्सव लाला अमीचद टोंग्या दिल्ली निवासी ने ही करवाया था । लाला अमीचद टोंग्या दिल्ली निवासी ने जयपुर मे मन्दिर बनवाया और प्रतिष्ठा बाडी ग्राम (घोलपुर) में करवाई । इसका कारण अज्ञात है । सवत् 1883 की यह प्रतिष्ठा ग्वालियर के भट्टारक महेन्द्र भूषण के उपदेश से लाला अमीचदजी ने करवायी थी । इसका विस्तृत लेख जयपुर के दीवान अमरचदजी के मन्दिर मे विराजमान चन्द्रप्रभ की विशाल प्रतिमा पर निम्न प्रकार है :-

‘सवत् 1883 माघ शुक्ला पचमी 5 गुरी मूल सघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुदाचार्यान्वये भट्टारक जिनेन्द्र भूषण देवा पट्ट-ग्वालियर का भट्टारक महेन्द्र भूषणस्योपदेशात् दिल्ली का वासी खण्डेलवाल श्रावक गोत्र टोंग्या बूलचन्दस्य पुत्र संगही अमीचद्रेन तस्य पुत्राश्चत्वार चुन्नीलाल, दिलवालीसिघ जवाहरमल मन्नालाल पौत्राश्च सदासुख नेमीदास शिरोमणिदास मनोहरदास एते सह बाडी नगरे प्रतिष्ठा कारिता जयपुर का वासी दीवान अमरचन्द्र नित्य प्रणमति श्रीरस्तु शुभमस्तु ।”

उक्त लेख से पता चलता है कि लाला अमीचन्द्र के पिता का नाम श्री बूलचंद था । अमीचद के 4 पुत्र थे— चुन्नीलाल, दिलवालीसिह, जवाहरमल एवं मन्नालाल तथा चार ही पौत्र थे, जिनके नाम सदासुख, नेमीदास, शिरोमणिदास एव मनोहरदास थे । इन सभी के सहयोग से बाडी नगर मे प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ था ।

इस मन्दिर में नीचे तलघर है जिसमें श्वेत पाषाण की एक ही आकार की विशाल 24 तीर्थंकरों की 24 प्रतिमाएँ हैं । इसीकारण यह मन्दिर चौबीस महाराज के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है । इस चौबीसी के रास्ते चलते लोग दर्शन करते है और श्रद्धा से मस्तक झुकाते हैं । बाहर से आये हुये यात्रियों एव दर्शनार्थियों के लिये यह चौबीसी आकर्षण का केन्द्र है । यह मन्दिर जयपुर के दर्शनीय मंदिरों में से एक है । (पद्मावती देवी की पाषाण की मूर्ति तथा एक बाहुबलि भगवान की मनोज्ञ प्रतिमा भी है ।)

इस मन्दिर का क्षेत्रफल लगभग 2400 वर्ग फुट है । इस मन्दिर मे प्रत्येक अष्टमी और चतुर्दशी का तलघर मे सार्जों से पूजन होती है । उत्सव विधान आदि भी होते है । यहाँ लकड़ी की पालकी है तथा लकड़ी के तीन हाथी हैं । सम्मैद शिखर के भाव पत्थर पर अंकित हैं ।

मन्दिर बीस पथ आमनाय का है तथा यहाँ की व्यवस्था विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होती है जिसके अध्यक्ष श्री सूरजमलजी टोंग्या एवं मन्त्री श्री लालचन्दजी सोगारणी हैं ।

## 22. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर मारूजी

यह मन्दिर मारूजी का चौक, मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, जीहरी बाजार में स्थित है। इस दिगम्बर जैन मन्दिर का निर्माण सवाईराम मारू ओसवाल ने सवत् 1861 में फाल्गुण शुक्ला पचमी को कराया। मन्दिर के बाहर निर्माण सवधी निम्न शिलालेख भी लगा है।

“श्री जैन दिगम्बर मन्दिर मारूजी का तेरापथी” मिति फागुण शु 5 वि.स. 1861 ॐ श्री मूलसधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुदकुदाचार्यान्वये दिगम्बर जैन धर्मी सवाई राम दुलीचद मारू ओसवाल वसे जीहरी ने मिति फागुण शु. 5 वि. स. 1861 को जयपुर में मन्दिरजी का निर्माण करा कर प्रतिष्ठा कराई। इस मन्दिर में सदैव दिगम्बर जैन धर्म तेरापथ शुद्धाम्नाय की प्रवृत्ति रहेगी और प्रबन्ध भी दिगम्बर जैन पच करेगे तथा दिगम्बर तेरापथ आम्नाय के विरुद्ध कोई भी प्रवृत्ति नहीं कर सकेगा”

इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की सवत् 1883 की है। मन्दिर सफेद सगमरमर का बना हुआ है। यहाँ 62 मूर्तियाँ एव 13 यत्र है।

यहाँ करीब 200 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं जो सुरक्षित रखे हैं। मन्दिर के बाहर एक कुआ भी बनवाया हुआ है।

मन्दिर का प्रबन्ध चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा क्रिया जाता है। वर्त्तमान में श्री देशभूषण सौगारी अध्यक्ष एव श्री विनयकुमार बंद मंत्री है।

## 23. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बड़ा तेरहपथी, जयपुर

जयपुर नगर चौकड़ी घाट दरवाजा में, मनीरामजी की कोठी के रास्ते में, दड़ के पास दिगम्बर जैन तेरहपथ आम्नायानुयायियों ने विक्रम सवत् 1792 की आषाढ़ शुक्ला 3 को श्री शातिनाथ जिन चैत्यालय की स्थापना की थी कि जो अब काफी समय से दिगम्बर जैन मन्दिर बड़ा, तेरहपथियान के नाम से विख्यात है। जयपुर के दिगम्बर जैन तेरहपथ आम्नायानुयायियों की इस मन्दिर में पंचायत है जिसमें लगभग 150 परिवार के सदस्य पंजीकृत हैं तथा शहर के अन्य तेरहपथी मन्दिर व चैत्यालयादि आम्नाय के लिहाज से इस पंचायत के अधीन हैं।

मन्दिर दो चौक का है। प्रथम चौक से सगमरमरी सीढियाँ चढ़कर कलापूरण छत्री से आगे एक सभागार एव छत्री से लगे प्रवेश द्वार के माध्यम से मन्दिर की प्रथम मंजिल पर पहुँचते हैं जहाँ चौक के तीनों ओर दो-दो गह के विशाल तिबारे हैं। सुदृढ संगमरमरी खम्भों पर अत्यंत ही बारीक कुराई का काम है तथा पूर्व के तिबारे में स्वर्ण के मनमोहक बारीक कलमी काम के अतिरिक्त संगमरमर पर कई रंगों के पत्थरों को फूल-पत्तियों व पक्षियों के आकार को तराश कर अत्यन्त ही कलापूरण तरीके की पच्चीकारी की गई है, जो जयपुर के अन्य किसी मन्दिर में उपलब्ध नहीं है। इसके अलावा सम्भेद

शिखर, गिरनार, सुमेरुपर्वत, सीता की अग्नि परीक्षा, पाण्डवों की तपस्या, लव व कुश का परिवच्य आदि के भित्तिचित्र भी या तो सगमरमर पर उत्कीर्ण हैं या विभिन्न रंगों के माध्यम से स्वर्णमयी स्याही का जहाँ भी आवश्यक उपयोग चित्रकार के द्वारा समझा गया, किया जाकर उसमें पूर्णता, मोहकता एवं आकर्षण पैदा करने में कोई कोर कसर उठा नहीं रखी है।

चौक से कुछ ऊपर चढ़कर निज मन्दिर है। मुख्यवेदी सगमरमर की सुन्दर आकार की बनी हुई है जिसकी छत व द्रगल के भाग पूर्णतया सोने की वारीक कलमी चित्रकारी से मंडित व शोभायमान है। वेदी में मूलनायक शातिनाथ भगवान की प्रतिमा जो सवत् 1548 की प्रतिष्ठित है विराजमान है। इसके तीनों ओर कई वेदियाँ एवं दो चैत्यालय भी बने हुए हैं जिनमें भी अति सुन्दर व प्राचीन जिन मूर्तियाँ विराजमान हैं। मन्दिरजी में कुल 366 प्रतिमाएँ व 40 यत्र हैं। मन्दिर के चौक पर सुन्दर दुछती है। मन्दिर इतना कलापूर्ण है कि दिन-प्रतिदिन न केवल भारतवर्ष के ही अपितु विदेशी पर्यटक भी इसके अवलोकन हेतु पधारते हैं तथा मुक्तकठ से इसकी सुन्दर एवं वारीक स्वर्णमयी कारीगरी एवं चित्रकारी की प्रशंसा करते अघाते नहीं है।

इस मन्दिरजी में दो शास्त्र भण्डार हैं, एक बाबा दुलीचंद का तथा दूसरा वड़े मन्दिर का। इन भण्डारों के ग्रंथों की सूची महावीर क्षेत्र से प्रकाशित ग्रंथ सूची भाग 2 तथा 4 में प्रकाशित हो चुकी है। जयपुर के प्रमुख एवं प्रसिद्ध साहित्यकार महापंडित टोडरमलजी, पंडित जयचन्दजी छाबड़ा, पंडित सदासुखजी कासलीवाल आदि ने इस ही मन्दिरजी को कर्मस्थली बनाकर अपने अनेकों ग्रंथों की रचनाएँ की थी तथा भारतवर्ष के जैन पंडितों के समक्ष जब कोई शंका उपस्थित होती थी तो उसके निराकरण हेतु या तो वे यहाँ पधारते थे या पत्र-व्यवहार के माध्यम से अपनी शंका का समाधान करते थे।

### बाबा दुलीचंद भण्डार

बाबा दुलीचन्दजी महाराष्ट्र के पूना जिले में फल्टन ग्राम के निवासी थे। वे हस्तलिखित ग्रंथों के साथ यात्रा करते हुए जयपुर पधारते और ग्रंथों की सुरक्षा की दृष्टि से जयपुर को उचित पाकर अपने समस्त ग्रंथ यहाँ विराजमान कर दिये। भण्डार में बाबाजी के स्वयं के लिखे हुए भी ग्रंथ हैं। आपने सारे भारत की तीन बार यात्रा की जिसका वर्णन जैन यात्रा दर्पण में किया है। ग्रंथों की सुरक्षा की दृष्टि से आपने मन्दिरजी के शास्त्र भण्डार के द्वार पर शिलालेख भी लगा दिया कि भण्डार से बाहर ग्रंथ ले जाने वाला पाप का भागी होगा। भण्डार पूर्ण व्यवस्थित है तथा सुरक्षा की दृष्टि से कई एक ग्रंथों पर 3-3, 4-4 वेष्टन लगाये हुए हैं। इस भण्डार में 850 ग्रंथ हैं।

यहाँ आचार्य विद्यानदि की आप्तमीमासा की सुन्दर प्रति है। सबसे प्राचीन प्रति क्रियाकलाप की है जो स. 1534 में मांडलगढ में मुलतान गयासुद्दीन के राज्य में लिखी गयी थी। तत्त्वार्थ सूत्र की स्वर्णक्षिरी प्रति, त्रिलोक सार की सुन्दर सचित्र प्रति बारीक अक्षरों में दर्शनीय है। यहाँ श्री पद्मालाल जी सघी का साहित्य भी संग्रहीत है। भण्डार में पदों का भी अच्छा संग्रह है जिनमें माणकचंद, हीराचंद, दौलतराम, भागचन्द,

“महाराजाधिराज श्री सवाई प्रतापसिंहजी का राज में बाकलीवाला को देवरो स. 1856 मे ।”

यहाँ मूलनायक प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ की श्वेत पाषाण की स. 1826 की प्रतिष्ठित है। यहाँ 3 वेदियों मे कुल 67 प्रतिमाएँ एव 6 यंत्र है। यहाँ की गुम्बज मे सुन्दर चित्रकारी है।

इस मन्दिर की अचल सम्पत्ति मे मकान तथा दुकाने हैं। यह मन्दिर बीस पथ आम्नाय का है। यहाँ की व्यवस्था बाकलीवाल परिवार के वंशज ही सम्भालते हैं। मंत्री श्री ताराचन्द बाकलीवाल हैं।

विशेष प्रचलित किंवदन्ती के अनुसार माली के व्यग कसने पर एक वृद्धा महिला ने जो बाकलीवाल परिवार की थी, मन्दिर बनवाया तथा साथ ही कुआ भी बनवाया।

### 35. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी (खोजान)

यह मन्दिर हरसुखजी कासलीवाल के रास्ते मे स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण करीब 150 वर्ष पूर्व श्री शिवजीराम जैन (खोजा) द्वारा कराया गया था। ऐसा कहा जाता है कि श्री शिवजीरामजी जयपुर राज्य की जनानी ड्योढी मे हाकिम थे।

मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा 1008 श्री आदिनाथ स्वामी की है। इसके अतिरिक्त 34 (10 पाषाण व 24 पीतल) प्रतिमाएँ और 7 यंत्र हैं। इसके अलावा पंच मेरुजी के दो सैट है। मन्दिर की गुम्बज विशाल व दर्शनीय है। विशालता के साथ-साथ सुन्दर चित्राङ्कण भी दर्शनीय है।

यह मन्दिर बीस पन्थ आम्नाय का है और प्रबन्ध चुनी हुई प्रबन्धकारिणी समिति द्वारा किया जाता है जिसका गठन पजीकृत विधानानुसार किया जाता है। यह समिति सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत देवस्थान विभाग से भी रजिस्टर्ड है। वर्तमान मे अध्यक्ष श्री जयकुमार छाबड़ा एवं मंत्री श्री भागचन्द छाबड़ा हैं।

मन्दिर की अचल सम्पत्ति मे 2 चौक की हवेली आदिनाथ भवन के नाम से है जिसमे इस समय 3 दूकाने हैं। हवेली व दूकानें किराये पर हैं। इसके अतिरिक्त पूर्ववर्ती द्वार व्यासों के चौक मे निकलता है।

### 36. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर गढमलजी बैनाडा

यह मन्दिर दीवान शिवजीलाल का रास्ता, जयपुर मे स्थित है। मन्दिर का निर्माण गढमलजी बैनाडा ने करवाया था। व्यास के पर्व के अनुसार इसका निर्माण

सं. 1805 में हुआ — “महाराजाधिराज श्री सवाई ईश्वरीसिंहजी का राज में गढमल को देवरो बण्यो स. 1805 का साल में” । इस मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा आदिनाथजी की है तथा मूल वेदी के अतिरिक्त तीन वेदियाँ और है जिनमें 133 प्रतिमाएँ तथा 17 यज्ञ है । इसमें क्षेत्रपाल की दो मूर्तियाँ हैं जो काले-गोरे भैरु के नाम से प्रसिद्ध है ।

मन्दिर में कलाकृति में चौक में सामने के तिवारे में मकराने के पत्थर में सम्भेद शिखर, कैलाश पर्वत, षट्लेश्या, गघकुटी एव पुरुषाकार तीन लोक के भावचित्र उभरे हुए हैं जो दर्शनीय हैं । बाहर के द्वार पर मंगल द्रव्य, पटलेश्यावृक्ष एवं संसार वृक्ष हैं । यहाँ भैरव की 2 मूर्तियाँ निज मन्दिर के द्वार पर बनी है, कालेपापाण की कुत्ते पर सवारी एव लाल पाषाण की हाथी पर सवारी । लाल पाषाण के भैरव की बगल में निम्न लेख है :- “श्री अजितनाथजी का मन्दिर की चीज वस्तु ज्यो कोई भी मांगी देलो वा ले जायेगो वो पच परमेष्ठीजी से विमुख मिति पौष सुदी 2 संवत् 1895 ।”

यहाँ के क्षेत्रपाल के चमत्कार के बारे में बताया जाता है कि करीब 30-35 वर्ष पूर्व मूर्तियों की चोरी हो गई थी । पुलिस में रिपोर्ट भी की गई किन्तु कुछ नहीं हुआ । आखिर एक दिन एक महानुभाव क्षेत्रपालजी के सम्मुख लकड़ी लेकर अड़ गये और कहने लगे “तुम यहाँ के क्षेत्रपाल हो अतएव यहाँ की रक्षा क्यों नहीं की ? या तो मूर्तियाँ आ जानी चाहिये नहीं तो तुम्हारी मूर्ति उखाड़ कर फेंक दूंगा ।” कहते हैं कि रात को उस व्यक्ति को स्वप्न में क्षेत्रपालजी ने बताया कि मूर्तियाँ जादूगणजी के नोहरे (महावीर पार्क) में कुएँ में पड़ी हैं निकाल लो । दूसरे ही दिन पुलिस के समक्ष मूर्तियाँ निकलवायी गई । सभी मूर्तियाँ मन्दिर में विराजमान हुईं ।

इस मन्दिर का क्षेत्रफल 4067 वर्गफुट है तथा मन्दिर के नीचे दूकानें हैं । यहाँ शास्त्र भण्डार में करीब 50 ग्रन्थ हैं ।

यह बीस पंथ आम्नाय का मन्दिर है । इसका प्रबन्ध चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है । वर्तमान में श्री महावीरकुमार संघी मंत्री है ।

### 37. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सांगाकों का, जयपुर

यह मन्दिर जयपुर के किशनपोल बाजार में सांगाकों के रास्ते में स्थित है । सरकारी रुक्के (व्यास के पर्व) के आघार पर इसका निर्माण संवत् 1788 में हुआ । जैसाकि निम्न प्रकार उल्लेख है :-

“महाराजाधिराज सवाई जयसिंहजी का राज में सांगाका को संवत् 1788 में हुआ” ।

यह मन्दिर पाटनी गोत्र वाले सांगाका परिवार की ओर से बनाया हुआ बताया जाता है ।

मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो संवत् 1826 की प्रतिष्ठित है। यहाँ पीतल की बड़ी पचमेरु तथा पापाण की पद्मावती देवी की प्रतिमा भी है।

मन्दिर विशाल एव कलापूर्ण है। मन्दिर में ऊँची सीढियाँ चढ़कर चौक में प्रवेश करना पड़ता है। चौक में बायी ओर के तिवारे में सुन्दर महीन कारीगरी के भित्तिचित्र बने हुए हैं जिनमें षटलेश्या, सीता की अग्नि परीक्षा, गधकुटी, समवसरण रचना, भगवान का बिहार, सम्भेदशिखर, पच कल्याणक, सोलह स्वप्न, तीन लोक का नक्शा आदि हैं, जिनमें कलाकार की कुशलता झलकती है। कुछ हाथ की कलम के सुन्दर मढ़े हुए चित्र भी हैं जिनमें सेठ सुदर्शन, नमिनाथ जन्म कल्याणक तथा चौबीस तीर्थकरो का सामूहिक चित्र उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त काष्ठ का कलापूर्ण समवसरण भी है जिसमें महीन कलम के कलापूर्ण चित्र हैं। मन्दिर में एक सगमरमर की वेदी पर कुराई का वारीक काम है।

यहाँ हस्तलिखित ग्रंथ एव गुटके भी हैं जो प्रतिदिन स्वाध्याय के हैं। प्रचार-प्रसार की दृष्टि से मन्दिर के शिखर पर ध्वनि प्रसारक यत्र लगे हैं जिनसे भाद्रपद मास तथा अन्य उत्सव विधानों के अवसर पर स्तोत्र एव भजनों के रिकार्डिंग चलते हैं।

मन्दिर बीस पथ आम्नाय का है। मन्दिर का क्षेत्रफल 5000 वर्गफीट है तथा मन्दिर के नीचे गोदाम एव दूकाने हैं। यहाँ का प्रबंध विधानानुसार चुनी हुई प्रबंध समिति द्वारा किया जाता है। संस्था देवस्थान विभाग, राजस्थान के सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत भी पजीकृत है। वर्त्तमान में यहाँ के अध्यक्ष श्री ताराचन्द पाटनी बम्बई वाले एवं मंत्री श्री रामचरण साह हैं।

### 38. श्री दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्रप्रभजी (खिन्दूकान)

यह मन्दिर मणहारो के रास्ते में महावीर पार्क के पास स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण पच खिन्दूकान द्वारा कराया गया है। व्यास के पर्व के अनुसार यह संवत् 1804 में बना था। पर्व की विगत निम्न प्रकार हैं :-

“महाराजाधिराज सवाई ईसरीसहजी का राज में पच खिन्दूका को संवत् 1804”

खिन्दूका, पाटनी एवं मुशरफ एक ही गोत्र है और इनका आगमन सागानेर के निकटवर्ती नेवटा ग्राम से हुआ है जहाँ एक प्राचीन मन्दिर है।

जयपुर के खिन्दूकान के मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा चन्द्रप्रभ भगवान की है। यहाँ 266 प्रतिमाएँ एव 44 यंत्र हैं। इसके अतिरिक्त धातु की पचमेरु चरण चौकी, पद्मावती देवी तथा एक पीतल की पातडी है जिस पर “उदय बाबाजी” का चित्र है। यहाँ भगवान अजितनाथ की श्याम पाषाण की विशाल पद्मासन मनोज्ञ प्रतिमा भी है।

मन्दिर कलापूर्ण है। बाहर छत्री है एवं अन्दर वेदी पर बड़ा विशाल गुम्बज है। श्वेत पाषाण पर सम्मेल शिखर, चम्पापुर, पावापुर काशी (वनारस) के सुन्दर सुनहरी उत्कीर्ण रंगीन मनोहारी भाव हैं। यह काच के चौखट में पूर्णतया सुरक्षित है।

मन्दिर का क्षेत्रफल 6682 वर्गफीट है। मन्दिर के नीचे 9 दूकाने तथा बराबर में एक हवेली है। एक धर्मशाला भवन "धर्मशाला मन्दिर खिन्दूकान" के नाम से है। वर्तमान में श्री महावीर दिगम्बर जैन वालिका विद्यालय को यह भवन शिक्षा हेतु दिया हुआ है। यह भवन कमेटी द्वारा विवाह आदि के अवसरों पर समारोह हेतु आवंटित किया जाता है।

मन्दिर में करीब 15 प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ हैं। धर्म प्रचार-प्रसार हेतु भाद्रपद मास में शास्त्र सभा चलती है। मन्दिर में समय-समय पर उत्सव विधि-विधान होते रहते हैं। माह सुदी दशमी को भगवान अजितनाथ का जन्म तप कल्याणक महोत्सव मनाया जाता है। रेकार्डिंग द्वारा भी पूजा-पाठ, स्तोत्र आदि का प्रचार किया जाता है।

यह मन्दिर वीस पंथ आम्नाय का है तथा पंजीकृत विधान के अनुसार चुनी हुई कार्यकारिणी समिति द्वारा प्रबन्ध होता है। वर्तमान में श्री भंवरलाल चौधरी अध्यक्ष एवं श्री प्रवीण चंद पाटनी मंत्री हैं।

### 39. श्री दिगम्बर जैन मंदिर बाईजी कुशलमतिजी

यह मंदिर सवाई मानसिंह हाईवे में रास्ता चौरूकान के प्रथम चौराहे पर स्थित है। इसका निर्माण अजमेर पट्ट के भट्टारक भुवनकीर्ति की शिष्या बाईजी कुशलमतिजी ने कराया था। मंदिर का निर्माण कब हुआ यह तो ज्ञात नहीं किन्तु इतना अवश्य है कि इसका निर्माण सन् 1892 से पूर्व हो चुका था। मूलवेदी में श्री आदिनाथ भगवान की सं. 1287 की प्रतिष्ठित मूर्ति को भाद्रवा बुदि 8 सं. 1891 को विराजमान किया गया था। इसके पश्चात् सन् 1936 से 1963 तक विकास कार्य होते रहे तथा आगे भी निम्न प्रकार वेदियों का निर्माण एवं उनमें मूर्तियाँ विराजमान होती रही :-

दूसरी मंजिल की अन्य वेदी में खिन्दूकों के मंदिर से भगवान नेमिनाथ की प्रतिमा लाकर विराजमान की गई।

इस मंदिर की एक विशेषता यह है कि इसमें तीसरी मंजिल में भी 3 वेदियाँ हैं।

1. प्रथम वेदी श्री कस्तूरचंदजी सेठी ने बनवाई जिसमें श्रीमती राधा किशनजी टकसाली ने भाद्रवा सुदी 6 सं. 2008 को भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान की।
2. दूसरी वेदी का निर्माण श्री भूरामलजी सेठी ने करवा कर फागुण सुदी 4 सं. 2008 में ही सघोजी के मंदिर से भगवान सभवाण की प्रतिमा लाकर विराजमान की।
3. तीसरी वेदी का निर्माण श्री सरदारमलजी सेठी ने कराया और माह सुदी 2 सं. 2019 में प्रतिमा विराजमान की।

## शास्त्र भण्डार

इस मन्दिर का भट्टारकीय शास्त्र भण्डार काफी समृद्ध है और यहाँ अनेक दुर्लभ एवं अद्वितीय शास्त्र और यन्त्रादि हैं। भण्डार में 2257 ग्रंथ तथा 308 गुटके हैं। यहाँ भक्तामर स्तोत्र एवं तत्वार्थ सूत्र की ताडपत्रीय रजताक्षरी एव स्वर्णाक्षरी प्रतियाँ भी हैं। कपड़े पर जम्बू द्वीप, अढाई द्वीप, तेरह द्वीप, विजय यत्र, विजय यत्र सचित्र, एव अन्य यंत्रों का उल्लेखनीय संग्रह है। भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति महाकवि पुष्पदंत के “जसहर चरित” की है, जो सं. 1407 में चन्द्रपुर दुर्ग में लिखी गयी थी। इसके अतिरिक्त 15वीं, 16वीं एव 18वीं शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों की भी अनेक प्रतियाँ हैं। भण्डार व्यवस्थित है एव सूची बनी हुई है। यह सूची महावीरजी क्षेत्र से प्रकाशित ग्रंथ सूची भाग 4 में प्रकाशित हो चुकी है।

## भट्टारक गद्दी

आमेर की भट्टारक गद्दी जयपुर में संवत् 1792 के पश्चात् इसी मंदिर में आयी और निम्न भट्टारको का पदस्थापन (पट्टाभिषेक) इसी पचायती मंदिर में विधिपूर्वक हुआ :-

1. भट्टारक क्षेमेन्द्र कीर्ति (संवत् 1815)
2. भट्टारक सुरेन्द्र कीर्ति (संवत् 1822)
3. भट्टारक सुखेन्द्र कीर्ति (संवत् 1852)
4. भट्टारक नरेन्द्र कीर्ति (संवत् 1880)
5. भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति (संवत् 1883)
6. भट्टारक महेन्द्र कीर्ति (संवत् 1938)
7. भट्टारक चन्द्र कीर्ति (संवत् 1974)

ये भट्टारक जैनियों के धर्मगुरु थे और इनके आगमन पर तत्कालीन जयपुर राज्य से लवाजमा लगता था तथा पट्टाभिषेक के समय दुशाला आदि भेंट आती थी। यहाँ भट्टारकीय विशाल शास्त्र भण्डार भी है। यह मंदिर भट्टारकों की गतिविधियों का केन्द्र रहा है, अतः ऐतिहासिक सामग्री की दृष्टि से यहाँ का भण्डार अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भट्टारको-पंडितों की चिट्ठी-पत्री, उनके चातुर्मास के विवरण, चारों रथों के मेले का विवरण, धार्मिक, सामाजिक एवं पचायती विवादों की पत्रावलियाँ, भट्टारको के पट्टाभिषेक का विवरण आदि उपलब्ध हैं।

बीस पथ आम्नाय के सभी मंदिरों में जो पंडित या पांडया थे, उन सबकी भेंट इस मन्दिर में आती थी। उनकी नियुक्ति भी इसी मंदिर से होती थी।

## वैय्यावृत्य

इस मंदिर में सदैव कोई न कोई मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका, ब्रह्मचारी या ब्रह्मचारिणी विराजते हैं। उनके वैय्यावृत्य के लिये औषधियाँ तथा चौको की व्यवस्था रहती है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर वैय्यावृत्य भवन में औषधालय भी चलता है।

## विशेष

मंदिरजी में प्रतिवर्ष भादवा की समाप्ति पर सोलहकारणजी के कलशाभिषेक प्रारम्भ करने से पूर्व तथा महावीर स्वामी के निर्वाण के लड्डू चढाने से पूर्व जोधराज पाटोदी के वंश के प्रतिनिधि द्वारा भेंट दी जाती है। इसके अतिरिक्त जब मंदिरजी से रथयात्रा निकाली जाती है तब भी पाटोदी के वंश के प्रतिनिधि भेंट चढाते हैं। तत्कालीन जयपुर राज्य की ओर से रथयात्रा के समय भी भेंट आती थी।

मंदिर की चल संपत्ति में ढूकाने तथा मकान हैं। मंदिर के बाहर चौक में एक ओर मकानात में साधुसंत एवं त्यागियों के ठहरने की व्यवस्था है। सदैव 1-2 चाँके निर्बाध रूप से चलते हैं। हमेशा 1-2 क्षुल्लिकाजी का निवास बना ही रहता है।

मई सन् 1981 में क्षुल्लिक सिद्ध सागरजी लाडनू वालो के सान्निध्य में क्षुल्लिका जिनमती माताजी की प्रेरणा से यहाँ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का आयोजन हुआ था। यह प्रतिष्ठा महोत्सव महावीर दि. जैन हाई स्कूल, सी-स्कीम के प्रांगण में सम्पन्न हुआ था। मई 1989 में लघु पंचकल्याणक महोत्सव भी हुआ था। आये दिन उत्सव विधानादि होते रहते हैं।

इस मंदिर तथा इसके अधीनस्थ दि. जैन मंदिर पुराना घाट एवं नसियाँ विजेराम पाण्डया, आमर रोड की व्यवस्था भी विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा की जाती है।

यहाँ विवाह सस्कार के लिये वेदियों के सैट भी उपलब्ध है।

वर्तमान में यहाँ के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कुमार निर्भीक एवं मंत्री श्री महावीर कुमार रारा हैं।

## 44. श्री दिगम्बर जैन मंदिर लशकर

यह मन्दिर चौकड़ी मोदीखाना में पं चैनसुखदास मार्ग में स्थित है। कहते हैं इस मन्दिर का निर्माण ठीक पाटोदी के मंदिर के निर्माण के बाद ही हुआ। ब्यास के पंचों के अनुसार यह ठीक ही है—“लस्करी देवरो सवत् 17—में बण्यो दरबार के लार जाय।” निर्माण के सम्बन्ध में किवदन्ती है कि पाटोदी के मन्दिर की सीढ़ियाँ कुछ ऊँची होने के कारण किसी महिला से कुछ कहा-सुनी हो गई और इसी आधार पर उस महिला ने उक्त मन्दिर के निर्माण का कार्य चालू किया। इस बात की पुष्टि इससे होती है कि यह मंदिर पाटोदी के मन्दिर से हर क्षेत्र में सवा गज लम्बा, सवा गज चौड़ा तथा सवा गज ऊँचा बनाया गया। मन्दिर के निर्माण के सम्बन्ध में यह भी कहा जाता है कि साह गोत्र के किसी सज्जन ने, जो लशकर के रहने वाले थे और जयपुर में किसी सरकारी पद पर नियुक्त थे, इसका निर्माण कराया और इस कारण यह लशकर का मंदिर कहलाने लगा। इस बात की पुष्टि इससे भी होती है कि इस मन्दिर में सं. 1815 से रिकार्ड उपलब्ध है उसमें लशकर शहर के मन्दिर व इस मंदिर से आपस में सामग्री (पहुँचारा) आदि के विवरण का उल्लेख है।

दूसरी किंवदन्ती यह भी है कि यहाँ का चैत्यालय फौज के साथ जाया करता था। इसका कारण यह है कि इस मंदिर के बनाने वाले प्रबन्धकर्ता सरकारी अर्च्छे ओहदे पर थे। वे जब फौज के साथ जाते थे तो अपनी धार्मिक नित्य क्रियाओं की पूर्ति हेतु चैत्यालय अपने साथ ले जाते थे जो अब भी एक छोटे से बक्से में है। इससे भी उपरोक्त तथ्यों पर कोई विपरीत असर नहीं पड़ता।

इस मंदिर के निर्माण में साह गोत्रीय परिवार का प्रमुख सहयोग रहा और निर्माण से आज तक इसका प्रबन्ध और सारी गतिविधियों की देखरेख साह गोत्रीय परिवार के हाथ में रहती चली आ रही है।

भाद्रपद मास में पहिले इस चौकड़ी (मोदीखाना) में रहने वाले सभी साह परिवारों की ओर से बारी-बारी से आरती होती थी जिसमें सब चौकड़ी वाले सज्जन शामिल होते थे किन्तु समयाभाव के कारण अब यह कार्यक्रम बंद हो गया है। मन्दिर का निर्माण साहो द्वारा ही कराया गया, इसकी पुष्टि निम्न बातों से बताई जाती है -

(1) आश्विन कृष्णा प्रतिपदा को चौक में श्रीजी विराजमान करके साहो द्वारा ही महाध्वंज्य घुमाया जाता है तथा इसका सामान साहों के यहाँ से आता है।

(2) श्रीजी पर किये जाने वाले दूध-दही के कलशों को भरकर साह गोत्र वाले ही कलश करने वालों को सौपते हैं।

(3) विधानानुसार मंदिर के मुख्य भण्डार की चाबियाँ साह गोत्र वाले प्रमुख व्यक्ति के पास ही रहती हैं, जैसे - जमनालालजी दुलीचन्दजी साह आदि।

(4) गत 40 वर्षों से चाबी गेदीलालजी साह के पास है।

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की श्याम पाषाण की है। मूल वेदी के अतिरिक्त 13 वेदियाँ और हैं जिनमें कुल 233 प्रतिमाएँ एवं 69 यत्र हैं। पाषाण की अनेक विशाल प्रतिमाएँ हैं। प्रतिमाओं में एक समवसरण की रचना सप्त घातु की भिन्न-भिन्न भागों में विराजमान है। मन्दिर में एक साहों का चैत्यालय अलग से है।

मन्दिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा भट्टारकों की गद्दी से मुख्य पण्डितों का हमेशा इस मन्दिर में सम्पर्क रहा है। पंडित कैसरी सिंह इस मंदिर के प्रधान पंडित थे, जिन्होंने स. 1826 में वर्धमान पुराण की भाषा टीका यही पर की। पं. बखतराम साह ने "मिथ्यात्व खडन" की स. 1821 में और "बुद्धि विलास" की स. 1827 में इसी मंदिर में बैठकर रचना की। बुद्धि विलास में जयपुर का ऐतिहासिक वर्णन है जिसका प्रकाशन प्राच्याविद्या संस्थान, जोधपुर से हो चका है।

इस मंदिर में 828 हस्तालिखित ग्रंथों एवं गुटकों का अर्च्छा संग्रह है जिसकी सूची महावीर क्षेत्र से प्रकाशित हो चुकी है। भंडार में प्रमाण तत्वालोकालंकार टीका (रत्न प्रभाचार्य) आत्म प्रबोध (कुमार कवि) रत्नकरण्ड श्रावकाचार टीका (प्रभाचन्द) शातिनाथ पुराण (अशग) के नाम उल्लेखनीय हैं। भट्टारक ज्ञान भूषण की आदीश्वर फाग की स. 1587 की सुन्दर प्रति भी यहाँ सुरक्षित है। भण्डार में संस्कृत प्राकृत भाषा के

काफी ग्रंथ उपलब्ध है। यहाँ संवत् 1815 मे ही वहीखाते आदि का रेकाड गुरक्षित है जिसमें लेखा-जोखा तथा अन्य कार्यों का विवरण मिलता है।

मंदिर कलापूर्ण एवं विशाल है। चौक में चारो तरफ सखियां बनी हुई है। रायावाला पत्थर के लट्टू व बदनवार बनी है। छत की दीवारों में अन्दर की ओर मे कुराई का अच्छा कार्य है। मूल वेदी के सामने वाले द्वार की किवाड़ जोड़ी मे पीतल की कटाई से कई भाव प्रदर्शित किये गये है। ऊपर दीवारो पर भित्ति चित्र हैं जिनमें प्रमुख पाण्डुक शिला व पंचकल्याणक का है, कुछ मे मडे हुए चित्र भी है। सुकुमाल मुनि, सुकौशल मुनि बाहुबली, भरत तथा 16 स्वप्नों, तीर्थ क्षेत्रों तथा कुछ मुनियों के चित्र हैं।

मंदिर का क्षेत्रफल लगभग एक हजार वर्ग फीट है, नीचे दूकानें तथा पास मे बिहारी है। आमेर रोड पर इसी मंदिर के अधीनस्थ शिवजी गोधा की नसियां है।

धार्मिक प्रचार-प्रसार की दृष्टि से शास्त्र प्रवचन एवं रात्रि पाठयाला चलती है। अष्टाह्निका तथा भाद्रपद मास में उत्सव विधानादि होते रहते है तथा स्तोत्र पाठो के टेप रिकार्डिंग चलते रहते हैं।

मंदिर का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है। विधान सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत पंजीकृत है। मन्दिर के वर्तमान मे अध्यक्ष श्री गेंदीलाल साह तथा मंत्री श्री ताराचंद साह हैं।

इस मन्दिर से बाहर की कॉलोनियों में भी मन्दिरों के लिये मूर्तियां समय-समय पर दी गई हैं। साह परिवारों की पुरानी वशावली भी इसी मंदिर मे बैठकर श्री चिरंजीलालजी साह, श्री कपूरचन्दजी साह एवं श्री गेंदीलालजी साह ने मिलकर लिखी है जो प्रकाशित हो चुकी है।

## 45. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जती तन सागरजी

यह मन्दिर चौकड़ी मोदीखाना में मणहारों के रास्ते में स्थित है। यह मन्दिर जतीजी के नाम से प्रसिद्ध है। इसे दिगम्बर जैन जती तन सागरजी ने बनवाया। निर्माण काल के सम्बन्ध मे कुछ स्थिति स्पष्ट नहीं है।

1. व्यास के पर्व के अनुसार - "जतीतन सागरजी मनसागरजी बर्रायो सं. 1834 में।"
2. मंदिर लूणकरणजी पांड्या की बही के अनुसार - "माह सुदी 6 सं 1883 - तनसागरजी जती नवीन हवेली बर्राई तै ठे श्रीजी विराजमान किया।"
3. स्वरूपचंद बिलाला की जयपुर चैत्य बंदनानुसार सं. 1892 के पूर्व बने मंदिरों की गणना में उल्लेख है जबकि सं. 1943 की एवं बाबा हुलीचंद की हस्तलिखित सूचियों मे "जतीजी को चैताली" एवं तनसागर मनसागर जती का चैत्यालय लिखा है।

एक हस्तलिखित सूची में यह भी लिखा है - चैतालो तनसागर जती को मंदिर चराबर लागै"

वास्तव में ठीक ही है कि बिना शिखर (गुंबज) तथा फेरी के यह चैत्यालय ही लगता है किन्तु मंदिरों की गणना में है। जतीतन सागरजी का बग वृक्ष निम्नप्रकार है-

सर्वप्रथम जती कृपा सागर, जिनका निघन सवन 1829 मे हुआ। उनके पश्चात् जनी तनसागर, मनसागर, जती गणेशसागर, जती रतनसागर तथा अंतिम चंद्रसागर हुए।

इसमें मूलनायक प्रतिमा महावीर स्वामी की धातु की संवत् 1861 की है। कुल 10 प्रतिमाएँ एवं 1 यंत्र है। अधिकतर प्रतिमाएँ सं. 1852 की प्रतिष्ठित हैं।

यह मंदिर कलापूर्ण है - काच की जड़ाई के मुन्दर भित्ति चित्र हैं जिनमें पंचकल्याणक, समवसरण, सम्मोदशिखर तथा पुरुषाकार तीन लोक का चित्र प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है। कहीं-कहीं से काच ढड़ने लग गये हैं। यह मंदिर दीवसपथ आम्नाय का है तथा इसकी व्यवस्था श्री त्रिलोकचंद सौगानी करते हैं।

## 46. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर दीवान अमरचन्दजी

(छोटे दीवानजी का मन्दिर)

यह मन्दिर लालजी सांड के रास्ते में स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण दीवान शिवजीलालजी के पुत्र दीवान श्री अमरचन्दजी पाटनी ने सं. 1876 मार्गशीर्ष में भाद्रपद सं. 1882 तक कराया है जिसका मन्दिर के द्वार पर शिलालेख है। यह मंदिर छोटे दीवानजी के नाम से प्रसिद्ध है। दीवान शिवजीलाल ने मणहारो के रास्ते में स्थित मन्दिर बनवाया जो बड़े दीवानजी के मन्दिर के नाम से विख्यात है जिसमें सं. 1852 की प्रतिष्ठित मूर्तियाँ हैं तथा उनके पुत्र श्री अमरचन्दजी ने यह मन्दिर बनवाया जिसमें सं. 1883 की मूर्ति प्रतिष्ठित है। दीवान अमरचन्दजी पाटनी के वंश में बड़ा परिवार है उसके प्रमुख अब श्री प्रकाशचन्दजी दीवान हैं।

मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान 1008 आदिनाथ की सं. 1852 की प्रतिष्ठित है। मन्दिर में कुल 38 प्रतिमाएँ एवं 5 यंत्र हैं। मन्दिर में दो वेदियाँ हैं, दूसरी वेदी में सबसे मनोज्ञ प्रतिमा श्री चन्द्रप्रभ की श्वेत पाषाण की विशालकाय पद्मासन है जिसकी प्रतिष्ठा वाडी ग्राम में सं. 1883 में हुई थी और दीवान अमरचन्दजी ने यहाँ लाकर विराजमान किया था। सबसे प्राचीन प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ की धातु की सं. 1122 की है।

यह मन्दिर गुमान पंथ आम्नाय का है। अनन्त चतुर्दशी को केवल जल के कलश होते हैं। माला आदि नहीं होती। षोडशकारण के कलश प्रतिपदा को होते हैं जो केवल कलशों (वर्तनों) में ही किये जाते हैं श्रीजी पर नहीं।

मन्दिर में हस्तलिखित 830 ग्रंथों का अच्छा संग्रह है जिसकी सूची महावीर क्षेत्र से प्रकाशित ग्रंथ सूची भाग 4 में छप चुकी है। भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति सं. 1553 में लिखित पूर्णचन्द्राचार्य के उपसर्ग हरस्तोत्र की है। अज्ञात कृतियों में तेजपाल का संभव

जिगणाह चरित्र अपभ्रंश तथा हरचन्द गगवाल कृत मुकुमाल चरित्र स. (1918) के नाम विशेषतया उल्लेखनीय है। ग्रंथों के संग्रह करने में स्वयं अमरचन्दजी ने रुचि ली है। अपने समकालीन विद्वानों की रचनाओं की प्रतियाँ रखी है।

**प्रचार-प्रसार** — यहाँ प्रारम्भ से ही सायकालीन शास्त्र सभा चलती है। मन्दिर की ओर से चारों प्रकार के दान की व्यवस्था का प्रावधान है। उत्सव विधानादि होते रहते हैं। समय-समय पर साधु-सतों के ठहरने एवं प्रवचन आदि की व्यवस्था रहती है।

मन्दिर कलापूर्ण एवं विशाल है। बड़ा चौक है तथा बारादरी के ऊपर खुली चादनी तथा निज मन्दिर के ऊपर बड़ा हॉल है जिस पर विशाल गुंबज है। ऊपर के हॉल में मुद्रित पुस्तकें तथा कलापूर्ण प्रदर्शनी योग्य चित्र लगे हुए हैं। मन्दिर का बाहरी दृश्य भी सुन्दर है। कलाकृतियों में सुन्दर पालकी, हाथी, 2 घोड़े, 1 छोटा रथ तथा समवसरण है जो सभी लकड़ी के हैं। प्रत्येक अष्टाङ्गिका की चतुर्दशी को मन्दिर के चौक में ही रथ यात्रा होती है। भाद्रपद में अढाई द्वीप का मण्डल विधान नियमित होता है। जयपुर के जैन दीवानों के हाथ की कलम के सुन्दर एवं आकर्षक चित्र भी हैं जो यदाकदा प्रदर्शनी में रखे जाते हैं। ये चित्र दीवान रामचन्द्र छावड़ा, दीवान बालचन्द्र छावड़ा, दीवान राव कृपारामजी पांड्या, दीवान शिवजीलाल पाटनी तथा उनके पुत्र दीवान अमरचन्दजी पाटनी के हैं।

मंदिर के नीचे 1 हवेली तथा 13 दूकानें हैं जो किराए पर हैं। सामने ही दीवानजी की धर्मशाला है जिसमें दिगम्बर जैन श्रौषधालय चलता है तथा यात्रियों के ठहरने की समुचित व्यवस्था है।

मंदिर का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है। मंदिर राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास के अतर्गत भी पंजीकृत है। वर्तमान में यहाँ के अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्द दीवान एवं मंत्री श्री भँवरलाल न्यायतीर्थ हैं।

नोट — पापल्यो के मंदिर के शास्त्र मण्डार में विराजमान गुणभद्राचार्य के जिनदत्त चरित्र की सन् 1864 की लेखक प्रशस्ति में लिखा है कि इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर में विराजमान की गयी है। अतः मंदिर का निर्माण काल खोज का विषय है।

## 47. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर भाँवसान, नया

यह मन्दिर सेवा पथ, लालजी साह के रास्ते में स्थित है। बाबा दुलीचंद के हाथ की सूची में इसके निर्माणकर्ता का नाम किशोरीलाल वड़जात्या लिखा है जो चौरु के थे। स 1943 की हस्तलिखित सूची में इसे "भौसा का चौक में नवो मंदिर" लिखा है। अतः मंदिर सौ वर्ष से प्राचीन अवश्य है। इसके अलावा और कोई उल्लेख उपलब्ध नहीं है।

गया है। वेदी के आगे तिबारे की छतों में चौसठ योगिनियो, तीन चौबीसी तथा अन्य देवी-देवताओं का चित्रांकन है।

दीवारों तथा खम्भों पर गुलाब के फूल-पत्तियो को इतने सुन्दर ढंग से उभारा गया है कि देखते ही बनता है। एक फूल का आकार दूसरे से मिलता नहीं है। वेदी के पीछे की ओर तिबारे की छत तथा दीवारो पर सुन्दर कुराई का कार्य दर्शनीय है। भगवान के पाचो कल्याणक भाव प्रदर्शित है।

गर्भ कल्याण में माता के 16 स्वप्न, जन्म कल्याण मे पाण्डुशिला पर इन्द्रो द्वारा अभिषेक, देवों द्वारा क्षीर सागर से कलश भरकर पहुचाना, दीक्षा कल्याण मे केशलुचन, वैराग्य के भाव, ज्ञान कल्याण मे समवसरण रचना, दिव्य ध्वनि खिरना तथा मोक्ष कल्याण मे कैलाश पर्वत से मुक्तिगमन आदि के सुन्दर भावो का दिग्दर्शन है। इसके अतिरिक्त सम्मेद शिखर, चंपापुर, पावापुर, गिरनार के भाव अत्यन्त आकर्षक है। मध्यलोक का चित्रांकन भी सुन्दर है। वास्तव मे कला की दृष्टि से मंदिर महत्त्वपूर्ण है।

मंदिर में शास्त्र भंडार भी है जिसमे 250-300 ग्रथ है। सूची बनाई जा रही है। धार्मिक प्रचार-प्रसार हेतु चारों प्रकार के दान का प्रावधान है तथा उत्सव विधानादि होते रहते हैं।

मंदिर बीसपथ आम्नाय का है जिसका प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है। मंदिर सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत पजीकृत है। वर्त्तमान मे श्री रतनलाल कासलीवाल अध्यक्ष एव श्री क्रातिकुमार कासलीवाल मंत्री है।

## 50. श्री दिगम्बर जैन मंदिर चौधरियों का

यह मंदिर गोदीकों का रास्ता, छाजूलाल साह की गली मे स्थित है। इस मंदिर का निर्माण कब और किसने करवाया कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। स्वरूपचन्द बिलाला रचित जैन मंदिर वदना से ज्ञात होता है कि इसका निर्माण स० 1892 के पूर्व ही हो चुका था। एक हस्तलिखित सूची मे इसे पन्नालालजी चौधरी का मंदिर लिखा है। बाबा दुलीचन्द की सूची मे इसे चौधरी पाड्या का चैत्याला लिखा है। पाटोदी के मंदिर मे मिले रेकार्ड से इसका नाम चौधरियों की साल भी मिलता है। सम्भव है पहिले प्रतिमाएँ नीचे ही विराजमान हों अतः साल कहा है। किंवदन्ती के अनुसार छाजूलालजी साह जो राज्य के उच्च पदाधिकारी थे पिजस में बैठकर मंदिर के सामने से निकलते थे तो साल मे श्रीजी नीचे रह जाने के कारण वे उसे अनादर समझते थे, अतः मंदिर ऊंचा बनाया गया। ग्रथो की प्रशस्तियों मे उनके पूर्वज कालूरामजी साह आदि का ग्रंथ लिखवा कर भेंट करने का उल्लेख है।

मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा नेमिनाथजी की स० 1861 की है। यहाँ पर तीन वेदियो मे 39 प्रतिमाएँ एव 17 यत्र हैं। वेदियो मे सोने का सुन्दर काम है। यहाँ धातु की

5 बड़ी प्रतिमाएँ हैं जिनका वजन 2-2, 3-3 मण होना लिखा है। इसके अनिर्दिष्ट स० 1630 को पद्मावती देवी की प्रतिमा तथा स० 1858 की ताम्बे की चरण चौकी है।

शास्त्र भंडार में 147 ग्रंथ तथा 7 गुटके हैं जिनकी सूची महावीर क्षेत्र से प्रकाशित ग्रंथ सूची भाग 4 में छप चुकी है। ग्रंथ संख्या तथा गुटका संख्या में बाद में और भी वृद्धि हुई है। मंदिर में प्रकाशित पुस्तकों का भी अच्छा संग्रह है। कलात्मक पुट्टे ग्रंथों के सुन्दर चाँदी के तारों के काम के हैं। 4-5 हाथ की कलम के मढ़े हुए चित्र हैं। कला पूर्ण कपड़े का सामान चदवा आदि है।

मंदिर का क्षेत्रफल लगभग 200 वर्गगज है। नीचे एक कमरा है तथा किशनपोल बाजार में एक दूकान है जो छाजलालजी साहू के वंशजों द्वारा भेंट स्वरूप दी हुई है। एक दूकान मनिहारो के रास्ते में भी है।

मंदिर बीस पथ आम्नाय का है। इसका प्रबन्ध चुनी हुई प्रबन्धकारिणी समिति द्वारा होता है। वर्तमान में श्री भवरलाल चौधरी अध्यक्ष एवं श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ मंत्री हैं।

## 51. श्री दिगम्बर जैन मंदिर चम्पारामजी पांड्या

यह मंदिर किशनपोल बाजार आचार्यों के रास्ते में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण वि०सं० 1884 की फाल्गुण सुदी 5 को पं० श्री चम्पारामजी पांड्या ने कराया था।

मंदिर काफी ऊँचा पहली मजिल पर है। वेदी में मूलनायक प्रतिमा श्याम पाषाण की भगवान आदिनाथ की स० 1852 की है। यहाँ कुल 4 वेदियाँ हैं जिनमें 46 प्रतिमाएँ एवं 21 यंत्र हैं, एक प्रतिमा बिल्लौर की है। इस मंदिर में धातु की प्रतिमाएँ व यन्त्र अत्यन्त आकर्षक, साफ-सुथरे व चमकदार हैं।

स्वाध्याय के साधारण ग्रंथ हैं। मंदिर में श्री ज्ञानचन्द बिल्टीवाले शास्त्र पढ़ते हैं।

मंदिर कलापूर्ण है। वेदी में सोने की छपाई का सुन्दर काम है तथा गुम्बज में चित्र बने हैं। दायी ओर कमरे में भी सुन्दर कलापूर्ण काम है। मुनि गजकुमार, सुकुमाल, पार्श्वनाथ भव वर्णन, भक्तामर स्तोत्र आदि के भित्ति चित्र हैं। हाथ की कलम के भी 2 मढ़े हुए कलापूर्ण चित्र तथा पद्मावती पार्श्वनाथ ॐ ह्रीं आदि के सुन्दर चित्र हैं। तिवारे के खम्भों तथा महराबो के कपड़े के कवर पर्दे आदि सुन्दर कलापूर्ण बने हुए हैं जो भाद्रपद मास तथा अन्य उत्सव विधानादि के अवसर पर लगाये जाते हैं।

मंदिर का क्षेत्रफल 2500 वर्गफीट है तथा इसके नीचे एक हवेली और गोदाम है।

मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा प्रबन्ध चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है। वर्तमान में श्री हरकचन्द साहू अध्यक्ष एवं श्री प्रसन्नकुमार चादवाह मंत्री हैं।

बुधचंदजी बज के मंदिर में उपलब्ध सवत् 1890 का निम्न ग्रथ प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि यहाँ पहिले मूलनायक प्रतिमा शीतलनाथ स्वामी की थी ।

“संवत् 1890 बैसाख सुदी 9 रविवासरे पद्मनदि पचविंशति की भापा लिखी बगीची के मंदिर श्री शीतलजिन विराजे अरभक्त भक्ति करें श्री भक्तजन दर्शन कर स्वाध्याय करे त्याके वास्ते लिखी -

श्री शीतलनाथ चरण के पास सेवक श्री लाल बज दास  
लिखी भक्त जन पढने काज पढत सुनत है सुदर्शनराज ।”

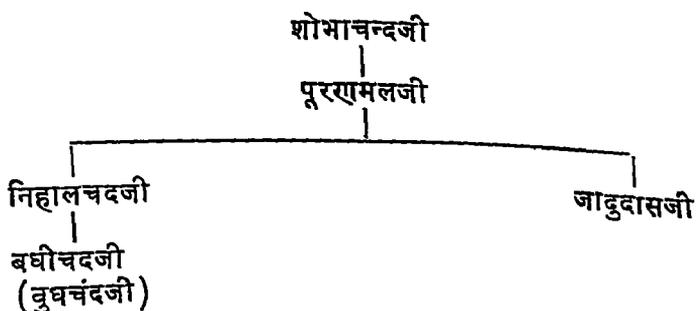
श्रीलालजी फतेहरामजी के प्रपौत्र थे ।

मंदिर का क्षेत्रफल लगभग 2400 वर्गफीट है तथा इसके नीचे मकान व दूकानें हैं ।

मंदिर तेरह पथ आम्नाय का है । मंदिर मे आगे बगीची है तथा कुआँ है । श्री शातिकुमार बज इसकी व्यवस्था करते है ।

## 55. श्री दिगम्बर जैन मंदिर बुधचन्दजी बज

यह मंदिर टिककीवालो का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर मे स्थित है । मंदिर का निर्माण विक्रम संवत् 1864 में कार्तिक सुदी 12 को बधीचदजी (बुधचंदजी) बज ने कराया । ब्यास के पर्व के अनुसार भी यही ठीक है । “महाराजाधिराज राज श्री सवाई जगतसिंह का राज मे बधीचद बज को सवत् 1864 मे बण्यो ।” निज मंदिर के प्रमुख द्वार पर श्वेत पाषाण के बने फूलों की पखुडियो मे भी निर्माण सवत् 1864 ही लिखा है । मंदिरों की सभी सूचियों मे यह बधीचदजी बज के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है किन्तु मंदिर के प्रबधकों के अनुसार निर्माणकर्ता का नाम बुधचदजी बज लिखा है । बुधचदजी के वंशज सधीजी के मंदिर (महावीर पार्क रोड) के सामने रहते हैं और उनकी वंशावली निम्न प्रकार उपलब्ध है :-



बुधचन्दजी, बधीचन्दजी “बुधजन” के नाम से जैन जगत मे जाने जाते है । कवि-वर बुधजन की रचनाओं पर सनावद के डॉ० मूलचन्द शास्त्री ने शोध प्रबध लिखा है जो

महावीर ग्रंथ अकादमी, जयपुर से “कविवर बुधजन व्यक्तित्व एव कृतित्व” के नाम से प्रकाशित हो चुका है। कवि का पूर्ण विवरण उसमें उपलब्ध है।

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की सवन् 1852 की प्रतिष्ठित है जो समवसरण में विराजमान है। मंदिर का क्षेत्रफल लगभग 5000 वर्ग फीट है तथा इसके नीचे मकान एवं दूकाने हैं। मंदिर कलापूर्ण है तथा इसका गुम्बज विशाल है। बीच में मकराने का समवशरण है। चौक की ओर पच्चीकारी के सुन्दर तीन द्वार हैं जिनमें पत्थर की कटाई की सुन्दर जालियाँ हैं। चौक के तिवारे में सुन्दर भित्ति चित्र हैं जिनमें सम्भेद शिखर सोनागिरि तीर्थ क्षेत्रों, अढाईद्वीप के मानचित्र, 16 स्वप्न, तप कल्याण का दृश्य एवं ऋषि मडल यत्र के चित्र हैं। मंदिर में लगभग 200 हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है जिसकी सूची बनी हुई है तथा आलमारियों में सुरक्षित है।

यह मंदिर गुमान पथ आमनाय का है। मंदिर की प्रबध समिति बनी हुई है जिसकी देखरेख में प्रबध किया जाता है। वर्तमान में श्री रतनलाल अग्रवाल अध्यक्ष एवं श्री शांतिकुमार बज मंत्री है।

## 56. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, आमली

यह मंदिर किशनपोल बाजार में नमक की मढी में स्थित है। इसके पास में आमली का पेड़ होने से संभवतः यह आमली का मंदिर कहलाता है। बाबा दुलीचंद ने अपनी हस्तलिखित मंदिरों की सूची में निम्न प्रकार उल्लेख किया है :—

“इमली के दरख्त की छाया नीचे पण्डा बखतराम ऋषभदास मुहल्ला कुम्हारों का सुन्दर का बास कुंआ के पास”

मंदिर कब और किसने बनाया इसकी कोई प्रामाणिक सूचना उपलब्ध नहीं है। इतना अवश्य है कि मंदिर संवत् 1892 के पूर्व निर्मित हो चुका था।

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है। मूलवेदी के अतिरिक्त 3 वेदियाँ और हैं जिनमें श्रीजी विराजमान हैं। यहाँ कुल 81 प्रतिमाएँ एवं 15 यत्र हैं। दीवार में संगमरमर पर पचमेरु, संसारवृक्ष, षट्लेश्या, पाण्डुशिला आदि के भाव दर्शाये हुए हैं।

मंदिर में करीब 20 हस्तलिखित ग्रंथ हैं तथा रात्रि को शास्त्र सभा चलती है जिसमें श्रीमती सौभागदेवीजी काला प्रवचन करती हैं। प्रचार-प्रसार के लिए टेप से रिकार्डिंग की व्यवस्था है।

मंदिर का क्षेत्रफल 200 वर्गमीटर लगभग है तथा इसके नीचे एक दूकान है।

यह बीस पंथ आमनाय का मंदिर है तथा इसका प्रबध चुनी हुई प्रबध समिति द्वारा किया जाता है। वर्तमान में श्री मोहनलाल ठोलिया अध्यक्ष एवं श्री रामचरण साह मंत्री हैं।

बुधचंदजी बज के मंदिर मे उपलब्ध सबत् 1890 की निम्न ग्रथ प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि यहाँ पहिले मूलनायक प्रतिमा शीतलनाथ स्वामी की थी ।

“संवत् 1890 बैसाख सुदी 9 रविदासरे पद्मनदि पर्वविशति की भापा लिखी बगीची के मंदिर श्री शीतलजिन विराजे अरभक्त भक्ति करे श्री भक्तजन दर्शन कर स्वाध्याय करे त्याके वास्ते लिखी -

श्री शीतलनाथ चरण के पास सेवक श्री लाल वज दास लिखी भक्त जन पढने काज पढत सुनत है सुदर्शनराज ।”

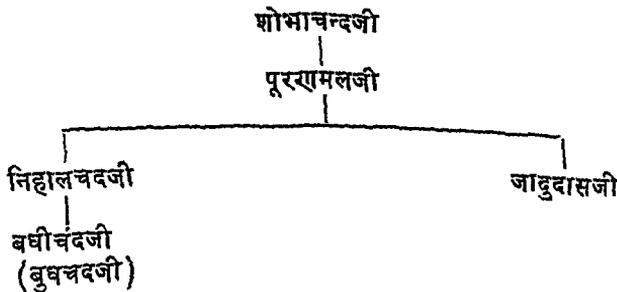
श्रीलालजी फतेहरामजी के प्रपौत्र थे ।

मंदिर का क्षेत्रफल लगभग 2400 वर्गफीट है तथा इसके नीचे मकान व दूकानें हैं ।

मंदिर तेरह पथ आम्नाय का है । मंदिर मे आगे बगीची है तथा कुआँ है । श्री शातिकुमार बज इसकी व्यवस्था करते है ।

## 55. श्री दिगम्बर जैन मंदिर बुधचन्दजी बज

यह मंदिर टिकीवालों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर मे स्थित है । मंदिर का निर्माण विक्रम संवत् 1864 मे कार्तिक सुदी 12 को बघीचदजी (बुधचदजी) बज ने कराया । ब्यास के पर्वे के अनुसार भी यही ठीक है । “महाराजाधिराज राज श्री सवाई जगतसिंह का राज मे बघीचद बज को सबत् 1864 मे बण्यो ।” निज मंदिर के प्रमुख द्वार पर श्वेत पाषाण के बने फूलों की पखुडियो में भी निर्माण सबत् 1864 ही लिखा है । मंदिरों की सभी सूचियों मे यह बघीचदजी बज के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है किन्तु मंदिर के प्रबधको के अनुसार निर्माणकर्ता का नाम बुधचदजी बज लिखा है । बुधचदजी के वंशज सघीजी के मंदिर (महावीर पार्क रोड) के सामने रहते है और उनकी वशावली निम्न प्रकार उपलब्ध है :—



बुधचन्दजी, बघीचन्दजी “बुधजन” के नाम से जैन जगत में जाने जाते हैं । कवि-वर बुधजन की रचनाओं पर सनावद के डॉ० मूलचन्द शास्त्री ने शोध प्रबध लिखा है जो

महावीर ग्रंथ अक्रादमी, जयपुर से “कविवर बुधजन व्यक्तित्व एवं कृतित्व” के नाम से प्रकाशित हो चुका है। कवि का पूर्ण विवरण उसमें उपलब्ध है।

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान् चन्द्रप्रभ की सवन् 1852 की प्रतिष्ठित है जो समवसरण में विराजमान है। मंदिर का क्षेत्रफल लगभग 5000 वर्ग फीट है तथा इसके नीचे मकान एवं दूकानें हैं। मंदिर कलापूर्ण है तथा इसका गुम्बज विशाल है। बीच में मकराने का समवसरण है। चौक की ओर पच्चीकारी के सुन्दर तीन द्वार हैं जिनमें पत्थर की कटाई की सुन्दर जालियाँ हैं। चौक के तिवारे में सुन्दर भित्ति चित्र हैं जिनमें सम्मोद शिखर सोनागिरि तीर्थ क्षेत्रों, अढाईद्वीप के मानचित्र, 16 स्वप्न, तप कल्याण का दृश्य एवं ऋषि मंडल यत्र के चित्र हैं। मंदिर में लगभग 200 हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है जिसकी सूची बनी हुई है तथा आलमारियों में सुरक्षित है।

यह मंदिर गुमान पंथ आम्नाय का है। मंदिर की प्रवच समिति बनी हुई है जिसकी देखरेख में प्रवच किया जाता है। वर्तमान में श्री रतनलाल अग्रवाल अध्यक्ष एवं श्री शांतिकुमार बज मंत्री है।

## 56. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, आमली

यह मंदिर किशनपोल बाजार में नमक की मढी में स्थित है। इसके पास में आमली का पेड़ होने से संभवतः यह आमली का मंदिर कहलाता है। बाबा दुलीचंद ने अपनी हस्तलिखित मंदिरों की सूची में निम्न प्रकार उल्लेख किया है :—

“इमली के दरख्त की छाया नीचे पण्डा बखतराम ऋषभदास मुहल्ला कुम्हारों का सुन्दर का बास कुंआ के पास”

मंदिर कब और किसने बनाया इसकी कोई प्रामाणिक सूचना उपलब्ध नहीं है। इतना अवश्य है कि मंदिर संवत् 1892 के पूर्व निर्मित हो चुका था।

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान् पार्श्वनाथ की है। मूलवेदी के अतिरिक्त 3 वेदियाँ और हैं जिनमें श्रीजी विराजमान हैं। यहाँ कुल 81 प्रतिमाएँ एवं 15 यत्र हैं। दीवार में संगमरमर पर पचमेरु, संसारवृक्ष, षट्प्लेश्या, पाण्डुशिला आदि के भाव दर्शाये हुए हैं।

मंदिर में करीब 20 हस्तलिखित ग्रंथ हैं तथा रात्रि को शास्त्र सभा चलती है जिसमें श्रीमती सौभागदेवीजी काला प्रवचन करती हैं। प्रचार-प्रसार के लिए टेप से रिकार्डिंग की व्यवस्था है।

मंदिर का क्षेत्रफल 200 वर्गमीटर लगभग है तथा इसके नीचे एक दूकान है।

यह बीस पंथ आम्नाय का मंदिर है तथा इसका प्रवच चुनी हुई प्रवच समिति द्वारा किया जाता है। वर्तमान में श्री मोहनलाल ठोलिया अध्यक्ष एवं श्री रामचरण साह मंत्री हैं।

## 57. श्री दिगम्बर जैन मंदिर डूंगरसीदास

यह मंदिर टिक्की वालों का रास्ता, पहला चौराहा, किशनपोल बाजार में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण पंडित डूंगरसीदास ने वि.सं 1841 में कराया। इसी मंदिर की एक बही सं 1891 से सन् 1920 तक की, चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर (पं. श्योजी-लालजी का मंदिर) के ग्रंथ भण्डार में उपलब्ध हुई है, उसमें पंडित दिलसुखजी (श्योजीलालजी के गुरु) ने चैत बुदी 9 सं. 1976 को निम्न प्रकार लिखा है :

“मंदिर पं डूंगरसीदासजी को संवत् 1841 की साल जायगा ठोल्या की में पंडित डूंगरसीदासजी चेला अजीतमल पांडे भाई हीरानन्द मंदिर की नींव लगाई। मंदिर की खड़क में विराजमान किया माह सुदी 5 वसत ने श्री पार्श्वनाथजी मूलनायक स्वामी स्थापित किया। पं. डूंगरसीदासजी चेला भट्टारकजी श्री सुरेन्द्र कीर्तिजी का छो सो संतोषरामजी ठोल्या हिंगुण्या को छो सो आपकी जगां पंडित मजकूर ने पुण्य दी पत्र चादणी चौक को करा दियो सो मौजूद है। या निश्चय कर लिखी पंडित दिलसुख सं. 1976 का मिति चैत बुदी 9 ने।”

“मंदिर की नींव काती सुदी 5 ने लागी”

मंदिर बनने के समय इसके नीचे 62 घरों की गोठ निम्न प्रकार से थी :-

सर्वप्रथम हस्तेडा के गंगवालों के घर	25
पीछे सेठियों के	8
पीछे बोहरों के	4
पीछे भौंसो के	4
पीछे लौंग्यों के	5
पीछे गौधों	4
पीछे छाबड़ों के	8
पीछे भौंसो के	4
	62

इसके पश्चात् सं. 1898 में मंदिर की फर्श हुक्मा सिलावट ने बनाई उसका पूरा इकरारनामा है।

वर्तमान में मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की है जो संवत् 1861 की प्रतिष्ठित है। संभव है पार्श्वनाथ के स्थान पर बाद में नेमिनाथ की मूर्ति स्थापित की हो। धरणेन्द्र पद्मावती एवं क्षेत्रपाल की प्रतिमाएँ भी हैं। मंदिर में मूलवेदी सहित 8 वेदियाँ और हैं जिनमें 53 प्रतिमाएँ एवं 26 यंत्र हैं।

मंदिर की मूलवेदी कलापूर्ण एवं सोने की कारीगरी की है।

मंदिर के ग्रन्थ भण्डार में करीब 50 हस्तलिखित ग्रन्थ एवं गुटके हैं। सबसे प्राचीन प्रति सं. 1593 की महीपाल चरित्र की है। संवत् 1797 की चैत्र शु. प्रतिपदा को पंडित

डूंगरसी के स्वाध्याय के लिए पं रुडमल ने शालिभद्र चरित्र को प्रतिलिपि की वह सुरक्षित है।

मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा मंदिर का क्षेत्रफल लगभग 400 वर्गफीट है तथा इसके नीचे 4 दूकानें हैं। प्रबन्ध चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा होता है। यहाँ फेरों की वेदी के 2 सेंट उपलब्ध है। वर्तमान में यहाँ के अध्यक्ष श्री रामचन्द्र कोठारी एवं मंत्री श्री महेन्द्रकुमार डिग्गी वाले हैं।

## 58. श्री दिगम्बर जैन मंदिर जोबनेर

यह मंदिर किशनपोल बाजार के भालानियो के रास्ते में तीसरे चौराहे पर स्थित है। जोबनेर के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध इस मंदिर का निर्माण किसने कराया कोई उल्लेख नहीं मिलता। व्यास के पर्व के अनुसार इसका निर्माण सं 1800 में हुआ।

“महाराजाघिराज श्री सवाई जयसिंहजी का राज में जोबनेर को देवरो वण्यों संवत् 1800 साल में”

वर्तमान प्रबन्धकों की सूचनानुसार इसके निर्माणकर्ता पं. पन्नालालजी हैं किन्तु पाटोदी के मंदिर में उपलब्ध बहियों में सं. 1926-27 में जोबनेर के मंदिर से पं. पन्नालालजी द्वारा पूजन का बारा भेजने का उल्लेख है। 125 वर्ष का अंतराल बहुत अधिक है अतः सही प्रतीत नहीं होता।

यहाँ मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की है। यहाँ कुल 64 प्रतिमाएँ हैं तथा 20 यंत्र हैं। कुछ दिनों पूर्व करीब 30 प्रतिमाएँ और विराजमान की गई हैं। यहाँ कुल 6 वेदियाँ तथा एक समवसरण रचना है। पुरानी बस्ती का हरकारों का चैत्यालय भी इसी मंदिर में एक वेदी में विराजमान है। प्राचीन प्रतिमा सं. 1502 की है। यहाँ हाल ही में सुन्दर समवसरण रचना का निर्माण होकर उसमें चतुर्मुखी प्रतिमाएँ तथा अन्य 24 प्रतिमाएँ विराजमान हुई हैं।

यहाँ 340 ग्रथ एवं 23 गुटके हैं जिनकी सूची चौथे भाग में प्रकाशित हो चुकी है। सबसे प्राचीन प्रतियाँ पद्मनदिपचविशति तथा रघुवशा टीका की है जो सं. 1508 एवं 1680 की हैं। यहाँ प्रदर्शनी योग्य कुछ चित्र भी हैं। भित्ति चित्र भी सुन्दर बने हुए हैं।

गत तीन दशकों में काफी विकास कार्य हुए हैं जिनमें कुए का निर्माण, दुखता, साधु-साध्वियों के आवास हेतु कमरे प्रमुख हैं। मंदिर काफी बड़ा है तथा इसके नीचे दूकानें तथा मकानात हैं।

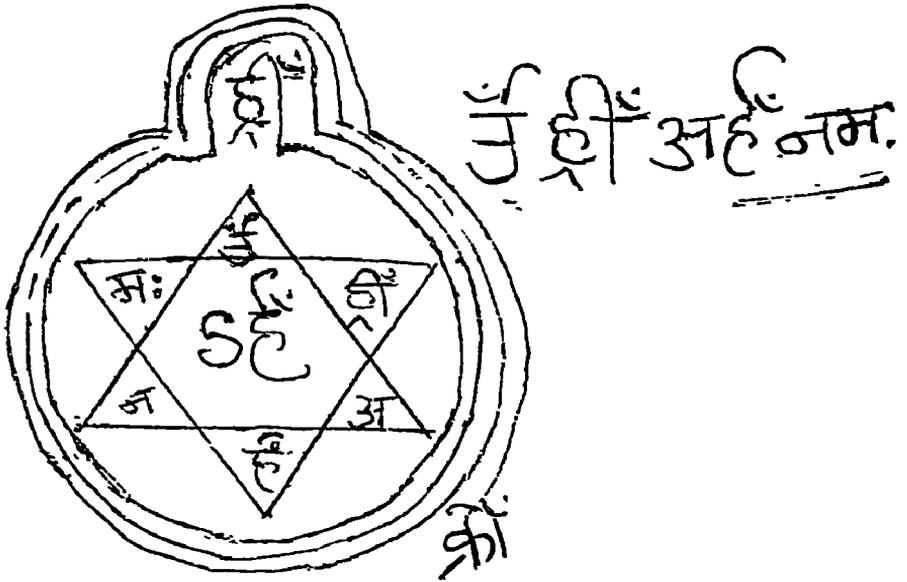
यहाँ भाद्रपद मास में पं. चिरंजीलालजी लुहाड़िया जैन दर्शनाचार्य प्रवचन करते हैं तथा धार्मिक प्रचार-प्रसार हेतु उत्सव विधानादि होते रहते हैं।

मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है। वर्तमान में यहाँ के अध्यक्ष श्री फतेलाल नीमैडा वाले एवं मंत्री श्री गोपीचन्द पाटनी हैं।

पाश्वर्नाथ मन्त्र-यन्त्र, चिन्तामणि मन्त्र-यन्त्र, सर्वं विघ्न विनाशन मन्त्र-यन्त्र, शान्तिनाथ यन्त्र, ह्रीं मन्त्र-यन्त्र आदि ।

इस प्रकार आज का भौतिकवादी मानव नाना प्रकार के रोगों तथा मानसिक तनाव से त्रस्त होता जा रहा है । उसके रोगों तथा मानसिक तनावजन्य कारणों पर सम्यक् खोज की जाकर उसके उपचारात्मक साधन के रूप में यदि उपर्युक्त शान्ति मन्त्र-यन्त्रों में से किसी एक का उपयोग किया जाय तो आज के त्रस्त मानव को सुख-शान्ति की नयी दिशा प्राप्त होने की इसी विद्या में पूर्ण सम्भावना है । मेरे दो दशक के प्रयोग एवं परीक्षण के निष्कर्ष रूप में मनुष्य अनवरत रूप से नीचे लिखे मन्त्र-यन्त्र का विधिवत आराधन करता है तो वह समस्त मानसिक तनावों से मुक्त ही नहीं होता अपितु समस्त शारीरिक व्याधियों से भी मुक्ति पा सकता है । यह मन्त्र-यन्त्र शान्तिक विद्या का प्राणरूप सार है । इसे पूर्वाचार्यों ने मन्त्रराज, महामन्त्र, महामृत्युञ्जय मन्त्र, परमशान्ति दाता मन्त्र आदि कई सज्ञाओं से परिभाषित किया है ।

परमशान्ति दाता मन्त्र-यन्त्र



इस प्रकार मानव मन की प्रकृत इच्छा की पूर्ति स्वरूप शान्ति मन्त्र-यन्त्रों को समझने के अनन्तर उसकी दूसरी प्रकृत इच्छा वित्तषणा, पुत्रेषणा तथा लोकेषणा की सिद्धि रूप पौष्टिक अभिकर्म पर विचार करना न्यायसंगत होगा । अस्तु जिस पर आगे विचार किया जा रहा है ।

पौष्टिक मन्त्र-यन्त्र

मानव मन की परतो को यदि खोला जाय तो उसमें वित्तषणा, पुत्रेषणा तथा लोकेषणा रूप विकास वा विनाश का अदृष्ट इतिहास छुपा पड़ा है । इस तथ्यानुसार

ससार का कोई भी मनुष्य निर्धनता की वांछा नहीं करता अपितु वह वित्तेपणा रूप धन-धान्य तथा समस्त प्रकार की सुख सामग्री की तमन्ना रखते हुए उन्हें येन-केन-प्रकारेण प्राप्त करने का प्रयास करता है। उसके मन की दूसरी लिप्सा पुत्र प्राप्ति की होती है। इस इच्छा की सहज रूप में पूर्ति नहीं होने के फलस्वरूप वह नाना उपायों के आश्रय से आशान्वित होने का प्रयास करता है। उसकी तीसरी मानसिक व्यथा किंवा इच्छा ख्याति लाभ की होती है। वह अपनी प्रसिद्धि के लिये अनेक प्रकार की नीतियों का आश्रय लेते हुए सबल पुरुषार्थ करता है। जैनाचार्यों ने मानव मन की इन उपर्युक्त इच्छाओं की सिद्धि हेतु पौष्टिक अभिकर्म रूप अनेक मन्त्र-यन्त्रों का सृजन कर भुक्ति से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया है।

जिन ध्वनियों के वैज्ञानिक संरचना के धर्षण द्वारा सुख सामग्रियों की प्राप्ति अर्थात् जिन मन्त्र-यन्त्रों के द्वारा मन की संकल्प शक्ति तथा ऐसे वातावरण एवं परिस्थितियों का निर्माण हो जिससे धन-धान्य, पुत्र, सौभाग्य तथा यशःकीर्ति की प्राप्ति हो उन ध्वनियों के सन्निवेश को पौष्टिक मन्त्र-यन्त्र कहते हैं। यथा—ज्वालामालिनी मन्त्र-यन्त्र, पद्मावती मन्त्र-यन्त्र, महालक्ष्मी मन्त्र-यन्त्र, 20 यन्त्र, 38 यन्त्र, विजयपताका यन्त्र, चिन्तामणि यन्त्र, लक्ष्मी देवी मन्त्र-यन्त्र, पार्श्वनाथ पद्मावती मन्त्र-यन्त्र, ऋद्धि-वृद्धि मन्त्र-यन्त्र, 32 यन्त्र, 21 यन्त्र, मातृ कामना, सर्वसिद्धि दायक मन्त्र-यन्त्र, घण्टाकर्ण मन्त्र-यन्त्र, 65 यन्त्र, चक्रेश्वरी मन्त्र-यन्त्र, अक्षीण महान् वृद्धि मन्त्र-यन्त्र, ह्री यन्त्र, विजय मन्त्र-यन्त्र, ऋद्धि-सिद्धि दायक मन्त्र-यन्त्र, सारस्वत मन्त्र-यन्त्र आदि।

मेरी साधना एव परीक्षणकाल के लम्बे समय से किये गये अनेकों प्रयोगों में से इस विद्या के निदर्शन रूप एक प्रयोग सामान्यजन के अवलोकनार्थ दे रहा हूँ जिसकी विधिवत साधना द्वारा अनेक लोगों ने लाभ प्राप्त किया है।

धन-धान्य-सौभाग्य-सन्तान तथा यशःकीर्ति आदि सर्वसिद्धि महाप्रभाविक मन्त्र-यन्त्र

मन्त्र :— “ॐ ह्रीं श्री क्ली अहं नमः महालक्ष्म्यै  
घरण्द्र पद्मावती सहिताय ह्री श्री नमः ।”

ॐ	ह्री	श्री	क्लीं	महा
अ	हं	न	मः	लक्ष्म्यै
घ	र	ण्	न्द्र	पद्मा
स	हि	ता	य	वती
ह्री	श्री	न	मः	नमः

सुनो—जब तक रोग-रूपी आग देह-रूपी कुटिया को भस्मीभूत नहीं करता अर्थात् जब तक इन्द्रियों की शक्ति अशील है तब तक आत्म-कल्याण करलो अन्यथा पछताने के अलावा कुछ और बचा नहीं रहेगा।  
—श्राचार्य कुन्दकुन्द

With best compliments from ·

## UNIGEMS

### HIGHEST EXPORT AWARD WINNERS

Manufacturers, Exporters & Importers of Diamonds  
Precious and Semi-Precious Stones  
Jewellery & Consultants

- H O 2032 A, Street Barafwali, Kinari Bazar, DELHI-110 006  
Tel. . 275472, 273390 Tlx : 31-66900 Cable 'TUPAS' DELHI
- B O Le Meridien Hotel Showroom No 3,  
Lobby Level, Janpath, NEW DELHI-110 001  
Tel 384163, 383864
- B. O Mahavir Bhawan, 9, Hospital Road,  
C-Scheme, JAIPUR-302 001  
Tel 66438, 64893
- B O · 403, Dharam Palace, Hughes Road, BOMBAY-400 007  
Tel . 8113918, 8114289

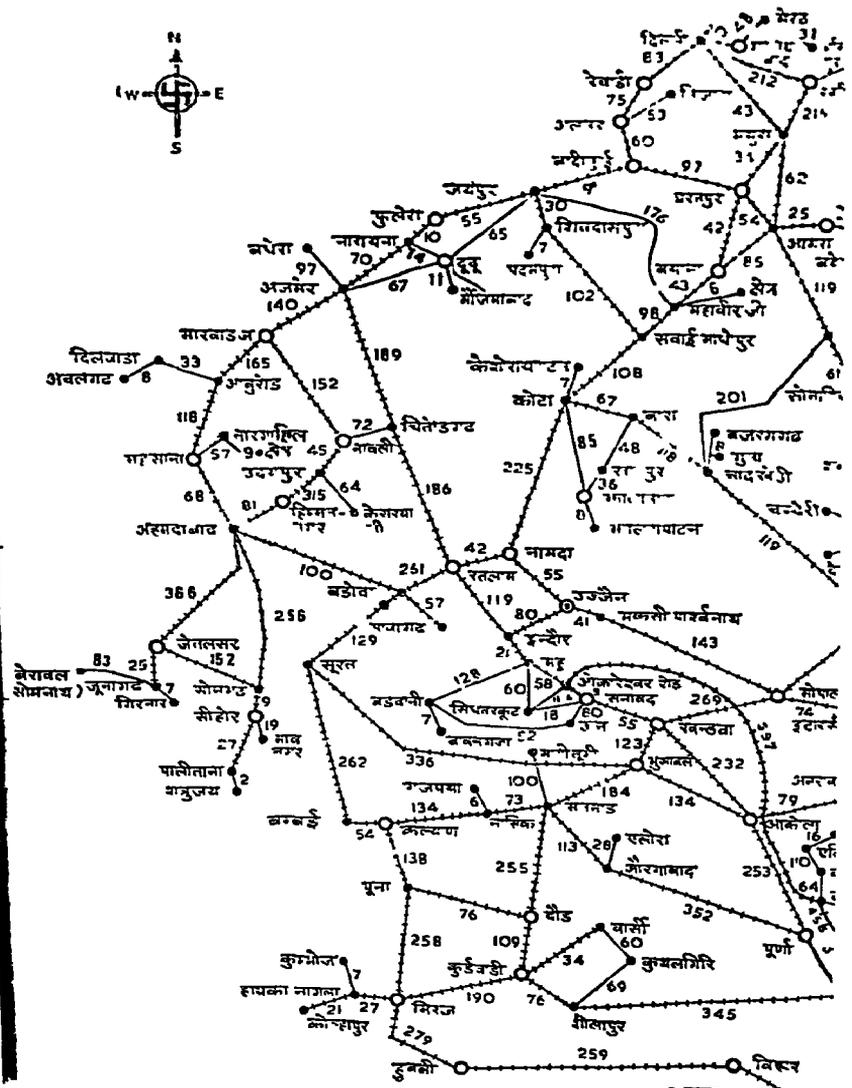
## NANAG RAM & CO.

- H O 1201, Maliwara, DELHI-110 006  
Tel · 276924
- B O Gopals ka Rasta, JAIPUR-302 001  
Tel · 563246

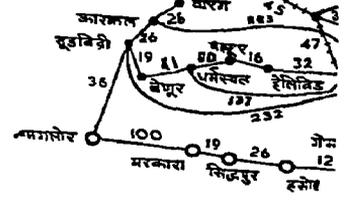
## SANTOSH JEWELLERS

- H O . 2032 A, Street Barafwali,  
Kinari Bazar, DELHI-110 006  
Tel. 275472
- B O . Santosh Book & Gift Shop, Le Meridien Hotel,  
Shopping Arcade, Janpath, NEW DELHI-110 001  
Tel. . 383864

# भारत के दि. जैन तीर्थों का रेल रुट



—	एक्स्प्रेस पथ
- - -	मोटोर पथ
○	राज्य के शहर
●	दर्शनीय स्थान



अफले चिन् न जीवति इह ।

“वृत्तन कर्म फलां को उत्पन्न न कर्णे  
वाचा नमार् मे अत्रिक नही गृह्णा है ।”

आचार्य कुन्दकुन्द, -प्रवचनमार् गाथा 272

शुभकामनाओं सहित :

**सरावगी मेंशन (शोपिंग कॉम्प्लेक्स)**

( बेसमेन्ट-एयरकंडीशन्ड मार्केट )

मिरजा इस्माइल रोड, जयपुर



अनर्त्त/प्रोमोटर्त्त

**राजपूताना होटल्स (प्रा०) लिमिटेड**

4, हयरोई मार्केट, अजमेर रोड, जयपुर (रा०)

फोन : 72080, 72051, 45905

अंवरलाल सरावगी  
मैनेजिंग डाइरेक्टर

# जयपुर की दिगम्बर जैन संस्थाएँ

## श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय

यह महाविद्यालय राजस्थान विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त दिगम्बर जैन समाज जयपुर द्वारा सस्थापित एव संचालित प्राचीनतम शिक्षण संस्था है। महाविद्यालय की स्थापना का निर्णय वि. स. 1941 में होने वाले चार रथों के मेले के पुनीत अवसर पर लिया गया था। यह विद्यालय त्रिपोलिया बाजार में मनिहारो के रास्ते में दिगम्बर जैन मंदिर बड़ा दीवानजी के पास स्थित है। प्रारंभ में इसका नाम दिगम्बर जैन महापाठशाला था जिसकी स्थापना आपाढ़ कृष्णा पंचमी गुरुवार वि. स. 1942 में महामना श्री धन्नालालजी कासलीवाल फौजदार एव पं. भोलीलालजी सेठी के नेतृत्व में स्थानीय दिगम्बर जैन समाज द्वारा की गई थी। इसका उद्देश्य समाज के बालकों को जैन धर्म की शिक्षा दिलाना तथा उन्हें संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् बनाना रखा गया।

उस समय इस महापाठशाला के अधीनस्थ दो संस्थाएँ और थी जिनमें एक पाठशाला मंदिरजी ठोलियान में चलती थी जो वर्तमान में श्री महावीर दिगम्बर जैन सोनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय के नाम से सी-स्कीम में चल रही है और दूसरी कन्या विद्यालय, दीवानजी के मंदिर की धर्मशाला में चलती थी जो अब महावीर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय के नाम से खिन्दूकों की धर्मशाला में संचालित है। अब दोनों संस्थाएँ स्वतंत्र हैं।

यद्यपि महापाठशाला में प्रथम कक्षा से आचार्य कक्षा तक की प्रारंभ से ही पढाई होती थी किन्तु सन् 1930 में पं. चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ महाविद्यालय के प्रधानाध्यापक बन कर आये तभी से इसकी काया ही पलट गई और महापाठशाला दि. जैन संस्कृत कॉलेज के नाम से प्रसिद्ध हो गया। पंडित जी ने जैन दर्शन एवं साहित्य की शिक्षा के अतिरिक्त आयुर्वेद की शिक्षा को भी प्राथमिकता दी और कई आयुर्वेदाचार्य यहाँ से निकले।

वर्तमान में इस महाविद्यालय की ख्याति जैन संस्कृति के संरक्षण एव जैन दर्शन तथा न्याय के पठन पाठन की विशेषता के कारण देश में सर्वत्र व्याप्त है। इस संस्था ने गत 104 वर्षों में जैनदर्शनाचार्य, आयुर्वेदाचार्य, साहित्याचार्य, न्यायतीर्थ आदि उपाधि से विभूषित एवं प्रौढ़ पाण्डित्य से युक्त पचासों विद्वान् समाज को दिये जिनमें प्रमुख गणेश प्रसादजी वर्षी, प. मारणकचन्दजी न्यायाचार्य, पं. नानूलालजी शास्त्री, पं. जवाहरलाल जी शास्त्री, प. इन्द्रलाल जी शास्त्री, पं. श्रीप्रकाश जी शास्त्री के नाम उल्लेखनीय हैं।

अब तक यहाँ से हजारों विद्यार्थियों ने विद्या लाभ लिया है और ले रहे हैं। गत दस वर्षों में यहाँ के छात्रों ने विश्वविद्यालय स्तरीय परीक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर

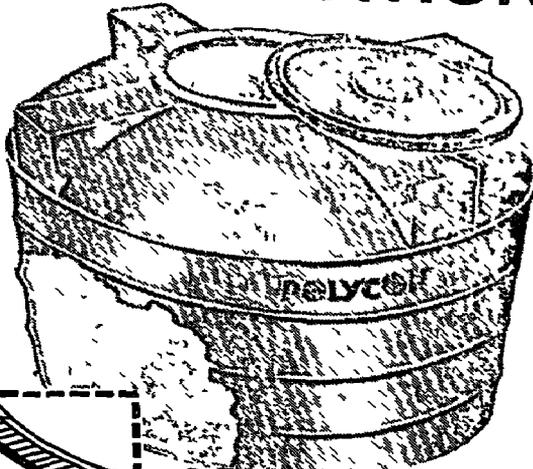
**INTRODUCING**

**FIRST TIME IN COUNTRY**

**EXPORT QUALITY**

**POLYCON**

**INSULATED TANK  
WITH  
FOAM INSULATION**



White Layer,

Black  
Layer

Foam insulation

**NOW AVAILABLE  
IN INDIA**

**a gift of 21st Century for water storage**

**JAI SINTER POLYCON (P) LTD.**

Polycon House, Bais Godam, Jaipur 6 Ph 68776, 74687

PINKCITY/JSP/355/90

“ज्ञान सूर्य को आगे करके जो चलता है  
छाया का वैभव उसके पीछे चलता है।”

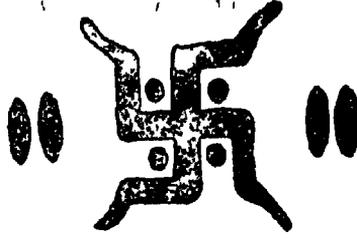


हार्दिक शुभकामनायें सहित

**आदित्य प्राईवेट लिमिटेड**

मालविया नगर, इण्डस्ट्रियल एस्टेट

जयपुर दिगम्बर जैन मन्दिर परिषद स्मारिका



वात्सल्यं नाम दासत्वं सिद्धर्हम्बिम्बवेश्मसु ।  
संघे चतुर्विधे शास्त्रे स्वामिकार्ये सुभृत्यवत् ॥

अर्थादन्यतमस्योच्चैरुद्दिष्टेषु स दृष्टिमान् ।  
सत्सु घोरोपसर्गेषु तत्परः स्यात्तदन्यये ॥

यद्वा न ह्यात्मसामर्थ्यं यावनमन्त्रासिकोशकम् ।  
तावद् दृष्टुं च श्रोतुं च तद्वाधां सहते न सः ॥

[पञ्चाध्यायी - 203-4-5]

भावार्थ - सिद्ध प्रतिमा, जिन बिम्ब, जिन मंदिर, चतुर्विध संघ और जिनवाणी इन सब में दास भाव (सेवाभाव) रखना वात्सल्य अंग है। उक्त सिद्ध प्रतिमादि पर उपसर्ग आने पर सम्यग्दृष्टि जीव उनकी रक्षा में तत्पर रहता है। आत्मिक सामर्थ्य नहीं होने पर जब तक मंत्र, तलवार और धन है तब तक वह उन सिद्ध प्रतिमादि पर आयी हुई बाधा को न तो देख ही सकता है और न सुन ही सकता है।

**दिगम्बर जैन अतिथय क्षेत्र श्रीमहावीरजी**  
श्रीमहावीरजी-322 220 (राज०)

*With Best Compliments from*



# **P. S. JAIN FOUNDATION**

**7-A, RAJPUR ROAD, DELHI-110 054**

**Gram : PASJAN**

**Telex : 031-78081 PSJC IN**

Phone { 2525123  
2520466

# जयपुर के दिगम्बर जैन मन्दिर तथा चैत्यालयों की सूची

क्र.सं.	नाम मन्दिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
<b>चौकड़ी घाट दरवाजा</b>				
1.	दि० जैन मंदिर ठोलियान		धी वालों का रास्ता, दूसरा चौराहा	संगमरमर में सुन्दर कार्य, विल्लौर की प्रतिमाएँ
2.	दि० जैन मंदिर दीवान बघीचंदजी साह		धी वालों का रास्ता, दूसरा चौराहा (गुमान पंथी पंचायती मंदिर)	गुम्बज में सोने का बारीक काम, समवसरण रचना, अकृत्रिम चैत्यालय रचना, टोडरमलजी का मोक्ष-मार्ग प्रकाशक मूलप्रति, विशाल शास्त्र मण्डार
3.	दि० जैन मंदिर नया बैराठियों का		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, पीपली महादेव का चौराहा	सचित्र ग्रंथ, काष्ठा संघी मन्दिर
4.	चैत्यालय चांदूलालजी गंगवाल (1) दि० जैन मंदिर गोघान		गंगवाल भवन, नागोरियों का चौक नागोरियों का चौक	चौक में प्रवेश द्वार पर सुन्दर पच्चीकारी
5.	दि० जैन मंदिर (चन्द्र-प्रभ स्वामी) चौघरियों का चैत्यालय सौगाणियों का (2)		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, चौथा चौराहा, बोहराजी के कुए के पास मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, (चैत्यालय चतुर्भुज सौगाणी का नले में से चौघरियों के मंदिर में आया)	
6.	दि० जैन मंदिर निगोतियान		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, चौथा चौराहा, बोहराजी के कुए के पास	
7.	दि० जैन मंदिर फागीका चैत्यालय बांकीवालों का (3)		धी वालों का रास्ता, तीसरा चौराहा, मोहल्ला कांच की चूड़ीवालान धी वालों का रास्ता, बांकीवालों की हवेली	
8.	दि० जैन मंदिर गुमानीरामजी का		धी वालों का रास्ता, पद्मावती जैन कन्या विद्यालय के पास	
9.	दि० जैन मंदिर लाडीजी चैत्यालय सोनियों का (4)		हल्दियों का रास्ता, दारोगाजी की हवेली के पास दारोगाजी के मन्दिर के पीछे, सुन्दर लालजी सोनी के मकान में, मन्नालाल रामलाल सोनी द्वारा निर्मित	
10.	दि० जैन मंदिर शांतिनाथ स्वामी, दारोगाजी		हल्दियों का रास्ता, ऊँचा कुम्हा के पास	सुन्दर मिति चित्र हैं।

क्र.सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
	चैत्यालय दारोगाजी	(5)	हल्दियों का रास्ता, दारोगाजी की पुरानी हवेली	
11.	पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर बास गोघान		हल्दियों का रास्ता, गोघों का चौक, ऊंचा कुम्भा	प्राचीन प्रतिमा है।
12.	दि० जैन मंदिर ईश्वरलालजी गोघा		हल्दियों का रास्ता, गोघों का चौक ऊंचा कुम्भा	
	चैत्यालय ऋषभजी गोघा	(6)	गोघों का चौक, ऊंचा कुम्भा	
13.	दि० जैन मंदिर श्री चन्द्र प्रभ जिनालय पं० लूणकरणजी		ठाकुर पचेवर का रास्ता	यहाँ प्राचीन शास्त्र मंडार, सचित्र प्रतियाँ, ग्रंथामाता की प्राचीन प्रतिमा, व्यवस्थित सरस्वती मंडार, विजययंत्र, पुराना रेकार्ड
14.	दि० जैन मंदिर (आदिनाथजी) बरुशीजी का		बरुशीजी का चौक, रामगंज बाजार	
	चैत्यालय बरुशीजी का	(7)	बरुशी कस्तूरचंदजी की हवेली, बरुशीजी का चौक, रामगंज बाजार	
	चैत्यालय बिन्दायक्यों का	(8)	कमला नेहरू स्कूल के पास	
15.	दि० जैन मंदिर मुशरफान		मुशरफ कॉलोनी, मनीरामजी की कोठी का रास्ता	सहस्रफरणी पार्श्वनाथ प्रतिमा है।
16.	दि० जैन मंदिर बैदान		मनीरामजी की कोठी के सामने	बड़े यंत्र हैं।
	चैत्यालय छाबड़ों का	(9)	मनीरामजी की कोठी का रास्ता, चांदूलालजी का मकान	
	चैत्यालय देहलीवालों का	(10)	हल्दियों का रास्ता, दूसरा चौराहा कूटवाली हवेली	
	चैत्यालय गंगवालों का	(10A)	तेरहपंथी बड़े मंदिर के पीछे	
	चैत्यालय रसोवडेवाले बजों का	(11)	हल्दियों का रास्ता, महमियों का दरवाजा	
	चैत्यालय जौहरियों का	(12)	हल्दियों का रास्ता, लाल कटलेके पास, गली में पहले मकान में	
17.	दि० जैन मंदिर चाकसू (इसमें एक चैत्यालय भी है)		हल्दियों का रास्ता, चाकसू का चौक (बीस पंथी पंचायती मंदिर)	44 यंत्र हैं चौक में सामने प्रवेश द्वार पर कलापूर्ण सुन्दर कुराई की कारीगरी।
18.	दि० जैन मंदिर बूचरान (लुहाड़ियान)		हल्दियों का रास्ता, चाकसू का चौक	प्राचीन प्रतिमा, चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ हैं।
	चैत्यालय दलजी चौधरी, छाबडा व कोडीवालों का	(13)	धी वालों का रास्ता, दायी की गली, कोडीवालों का मकान	
	चैत्यालय बैदों का	(14)	धी वालों का रास्ता, दायी की गली	
	चैत्यालय ठोलियों का	(15)	धी वालों का रास्ता, दायी की गली	

क्र. सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
	चैत्यालय ढोलाकों का	(16)	जोरास्टर वालों के सामने	(मुकदमेबाजी के कारण ताले लगे हैं)
	चैत्यालय सेठियों का	(17)	बाल मुकंदजी बज की हवेली के सामने	पार्श्वनाथ की नीले रंग के पाषाण की प्रतिमा है।
	चैत्यालय तूंगेवालों का	(18)	कुन्दीगरो के भैरु का रास्ता, तूंगावालों की हवेली	
	चैत्यालय संघणजी का	(19)	कुन्दीगरो के भैरु का रास्ता, कठिहारों के कुए के पास	
19.	दि० जैन मंदिर जीऊबाई		शिवजी राम भवन के सामने	सुन्दर वेदी है।
20.	दि० जैन मंदिर भूराजी		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, दूसरा चौराहा	
21.	दि० जैन मंदिर चौबीस महाराज (लाला अमीचंद टोंग्या)		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, दूसरे चौराहे के नुककड़ पर	यहाँ एकसी चौबीस तीर्थंकरों की 24 विशाल प्रतिमाएँ हैं।
	चैत्यालय गोदीकों का	(20)	मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, सुबोधजी गोदीका का मकान	
22.	दि० जैन मंदिर मारूजी		मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, मारूजी का चौक	यह मारूजी ओसवाल का बनवाया हुआ तेरहपंथी दिगम्बर जैन मन्दिर है।
23.	दि० जैन मंदिर बड़ा तेरहपंथी		हल्दियों का रास्ता (तेरहपंथी पंचायती बड़ा मंदिर)	यहाँ 2 विशाल शास्त्र मंडार हैं, पच्चीकारी का सुन्दर कार्य है, सचित्र भक्तामरस्तोत्र का पोथा है। यहाँ पं० टोडरमलजी की शास्त्र सभा होती थी।
<b>चौकड़ी तोपखाना हजूरी</b>				
24.	दि० जैन मंदिर रामगंज, ढूँढियों (पाटनियों) का		जीणमाता का खुरा, सूरजपोल बाजार जयपुर	यहाँ सं० 1350 की प्राचीन प्रतिमा है।
<b>चौकड़ी गंगपोल</b>				
	चैत्यालय राव कृपारामजी	(21)	ग्रामेर रोड, कच्चा बंधा, रावकृपा-रामजी का घेर	रावकृपाराम महाराजा जयसिंह के पंचरत्नों में से एक थे।
	चैत्यालय राव कृपारामजी	(22)	ग्रामेर रोड, कच्चा बंधा, रावकृपारामजी का घेर	(यहाँ चांदी के रथ में विराजमान सूर्य प्रतिमा भी है)

क्र. सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं	पता	विशेष
			<b>चौकड़ी रामचंद्रजी</b>	
25.	चैत्यालय तेरहपंथियों का दि० जैन मंदिर सोनियों का (पार्श्वनाथजी)	(23)	तेरहपंथी भवन, भट्टों की गली, विधानसभा के सामने खवासजी का रास्ता	यहाँ पार्श्वनाथजी का खड्गासन विशाल है, पार्श्वनाथ भेदि रिलीफ सोसाइटी कांच की कटाई के कथा चित्र हैं।
	चैत्यालय मुंशी कृपाचंदजी	(24)	पार्श्वनाथ मंदिर से सीधा आगे जाकर	
	चैत्यालय तनसुखजी श्रीमाल	(25)	ठा० अचरोल का रास्ता, श्रीमालों की हवेली	यहाँ पीतल के हाथियों प्रतिमाएँ विराजमान हैं।
	चैत्यालय खानसामा वाले दीवानों का	(26)	ठा० अचरोल का रास्ता, दीवानों की हवेली	
26.	दि० जैन मंदिर अठारह महाराज		पानों का दरीबा	यहाँ एकसी प्राचीन 17 प्रतिमाएँ हैं, एक रामगंज के मंदिर में हैं।
27.	दि० जैन मंदिर बिजैराम पांड्या		पानों का दरीबा	
28.	दि० जैन मंदिर कालाडैरा (महावीर स्वामी)		<b>चौकड़ी विश्वेश्वरजी</b> गोपालजी का रास्ता (यहाँ महावीर स्वामी की पाषाण की खड्गासन विशाल प्राचीन प्रतिमा हैं)	मुख्य द्वार कलापूर्ण, पत्थर में उकेरे भावों पर सोने की छपाई का काम समवसरण रचना व इन्द्र लकड़ी के, चाँदी के किवाड़ जोड़ियाँ।
	चैत्यालय पारसलालजी गोधा	(27)	पीतलियों का चौक, दरवाजे वाली हवेली	
	चैत्यालय तोतूकों का	(28)	बारह गणगौर का रास्ता	
	चैत्यालय दीवान भागचंदजी	(29)	चौड़ा रास्ता, फतेहपुरियों का दरवाजा	
29.	दि० जैन मंदिर यति यशोदानंदजी		चौड़ा रास्ता, जयपुर	मुख्य सड़क पर यह एक ही मंदिर है, तीन शिखर की सुन्दर वेदी, मिति चित्र, कांच की जड़ाई का का सुन्दर कार्य
	चैत्यालय टिकसालियों का	(30)	<b>चौकड़ी मोदीखाना</b> भट्टों की गली, चौड़ा रास्ता राधाकिशनजी टिकसाली के मकान में	

क्र. सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
	चैत्यालय नकटीकों का	(31)	संधीजी का रास्ता	
	चैत्यालय बजों का	(32)	राजूलालजी बज की गली, श्रीपत रायजी बज के मकान में महावीर पार्क के पास	विशाल मंदिर, कलापूर्ण हाथी, सुन्दर वेदी, भित्ति चित्र, प्राचीन प्रतिमाएँ, विजय यंत्र ।
30.	दि० जैन मंदिर संगहीजी			
31.	दि० जैन मंदिर छाबड़ों का		पं० शिवदीनजी का रास्ता	
32.	दि० जैन मंदिर कालों का		पं० शिवदीनजी का रास्ता, छींक माता के मन्दिर के पास	तीन शिखर की सुन्दर वेदी, तलघर में सहस्रफणी पाश्र्वनाथ प्रतिमाएँ ।
	चैत्यालय दूनी वालों का	(33)	छींक माता के मन्दिर के पास	
33.	दि० जैन मंदिर सिवाडवालों का		सिवाड-बांकलीवालों की गली हरसुखजी कासलीवाल का रास्ता	
34.	दि० जैन मंदिर बाकलीवालों का		सिवाड-बांकलीवालों की गली, हरसुखजी कासलीवाल का रास्ता	
35.	दि० जैन मंदिर आदिनाथजी (खोजों का)		दीवान शिवजीलाल का रास्ता	
36.	दि० जैन मंदिर गढमलजी बैनाड़ा चैत्यालय संघियों का	(34)	दीवान शिवजीलाल का रास्ता, कपूरचंदजी संधी के मकान में सांगाकों का रास्ता, किशनपोल बाजार	यहाँ काले-गोरे भैरव की मूर्तियाँ हैं ।
37.	दि० जैन मंदिर सांगाकान			सुन्दर कुराई की वेदी, भित्ति चित्र ।
	चैत्यालय खिन्दूकों का	(35)	1136, रामचन्द्रजी खिन्दूका के मकान में, महावीर पार्क के सामने	
	चैत्यालय छाबड़ों का	(36)	बघीचंदजी गंगवाल के सामने म० नं० 1130 महावीर पार्क रोड	अजितनाथजी की विशाल प्रतिमा ।
38.	दि० जैन मंदिर चन्द्रप्रभजी (खिन्दूकान)			
	चैत्यालय चन्द्रप्रभजी खिन्दूकों का	(37)	खारी कुई वाले मकान में, चोरूकों का रास्ता	
	चैत्यालय खिन्दूकों का	(38)	चोरूकों का रास्ता, ऊँची पैडी वाले खिन्दूकों का मकान	
39.	दि० जैन मंदिर बाई कुशलमतिजी चैत्यालय पाश्र्वनाथ भवन	(39)	चोरूकों का रास्ता, पहिला चोराहा नाटानियों का रास्ता	
	चैत्यालय लक्ष्मणलालजी दीवान	(40)	नाटानियों का रास्ता	

क्र. सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
	चैत्यालय मुशरफान	(41)	नाटानियों का रास्ता, बाछूलालजी मुशरफ का मकान	
40.	दि० जैन मंदिर पापल्यों का		लालजी सांड का रास्ता	
	चैत्यालय गुलाबचंदजी लोंग्या	(42)	दीवानजी की धर्मशाला के पीछे	
	चैत्यालय टोडरकों का	(43)	दीवानजी की धर्मशाला के पीछे	
41.	दि० जैन मंदिर पहाडियों का		"	
	चैत्यालय दीवान अमरचंदजी	(44)	दीवान अमरचंदजी की हवेली, राधा दामोदरजी की गली	
42.	दि० जैन मंदिर बड़ा दीवानजी		मनिहारों का रास्ता	धार्मिक व सामाजिक विशाल सभाओं का मंच, पं० चैनसुखदासजी का प्रवचन स्थल, विशाल चौक, बड़ी मूर्तियाँ व पन्चीकारी का काम।
	चैत्यालय बजों का (रारों का)	(45)	नरसिंहदासजी की हवेली के सामने	
43.	दि० जैन मंदिर पाटोदी		मनिहारों का रास्ता (बीस पंथी पंचायती मंदिर)	यहाँ भट्टारकीय गद्दी है, विशाल शास्त्र भण्डार है, प्रवेश द्वार की छत्री के नीचे कलापूर्ण तोरण है। तीन शिखर की वेदी तथा सुन्दर मिति चित्र हैं।
44.	दि० जैन मंदिर लश्कर		पं० चैनसुखदास मार्ग	लश्करी देहरा, मंदिर विशाल है।
	चैत्यालय साहों का	(46)	(इसी मंदिर लश्कर में अलग से)	
	चैत्यालय डेडाकों का (पं० सदासुखजी डेडाका)	(47)	मनिहारों का रास्ता नेमीचंदजी गोघा, घी वालों की हवेली में	
45.	दि० जैन मंदिर जती तनसागरजी		मनिहारों का रास्ता, जतीजी की हवेली	काँच की जड़ाई के सुन्दर भाव चित्र।
46.	दि० जैन मंदिर छोटे दीवानजी अमरचंदजी		लालजी सांड का रास्ता	चन्द्रप्रभजी की विशाल प्रतिमा, बड़ा गुंबज, बड़ी बारहदरी, जयपुर के जैन दीवानों के तैल चित्र प्राचीन प्रतिमा।
47.	दि० जैन मंदिर भांवसान (नया)		सेवापथ, दीवानजी के मंदिर के पीछे	
	चैत्यालय भांवसान	(48)	सेवापथ, दीवानजी के मंदिर के पीछे दरवाजे वाली हवेली में	
	चैत्यालय ब्र० लाड़जी बाबाजी	(49)	दीवानजी के मंदिर के पीछे	

क्र. सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चे. सं.	पता	विशेष
48.	चैत्यालय बटवालों का दि० जैन मंदिर मेघराजजी	(50)	सेवापथ, बटवालों का मकान	
	चैत्यालय गोटेवालों का	(51)	सेवापथ, लालजी सांड का रास्ता	
	चैत्यालय भूरामलजी साह	(52)	सेवापथ, गोटेवालों की हवेली	
49.	दि० जैन मंदिर सिरम्होरियों का		सेवापथ, गोटेवालों के सामने	विशाल मंदिर, पच्ची-कारी की सुन्दर तीन शिखर की वेदी, पत्थर का कलापूर्ण कार्य, छत तथा दीवारों पर कुराई का कार्य, खड्गासन विशाल प्रतिमाएँ तल-घर में।
	चैत्यालय भबर्यों का (पाटनी)	(53)	भबर्यों का चौक, आचार्यों का रास्ता	
50.	दि० जैन मंदिर चौधरियों का		बोंली के कुए के पास	
	चैत्यालय गोदीकों का	(54)	हरमुखजी कासलीवाल का रास्ता	
	चैत्यालय गोदीकों का	(55)	दरवाजे वाली हवेली	
	चैत्यालय गोदीकों का	(55)	हरमुखजी कासलीवाल का रास्ता	
	चैत्यालय गोदीकों का	(55)	दरवाजे वाली हवेली के सामने	
51.	दिगम्बर जैन मंदिर चम्पारामजी पांड्या		आचार्यों का रास्ता	भित्ति चित्र सुन्दर हैं।
	चैत्यालय आंधीकों का	(56)	अजायबघर का रास्ता, जमनालालजी साह के सामने	
	चैत्यालय सांगाकों का	(57)	अजायबघर का रास्ता, बिल्टीवालों का मकान, जयपुर	
<b>चौकड़ी तोपखाना देस</b>				
52.	दिगम्बर जैन मंदिर (चन्द्रप्रभजी) पं० शिवजीलालजी		आकड़ों का रास्ता, किशनपोल बाजार	अच्छा शास्त्र मंडार, हाथ की कलम के सुन्दर चित्र।
53.	दि० जैन मंदिर सौगाणियों का		आकड़ों का रास्ता	
	चैत्यालय बरुशीजी का	(58)	आकड़ों का रास्ता	
54.	दि० जैन मंदिर बज बगीचीवालों का		टिक्कीवालों का रास्ता	
55.	दि० जैन मंदिर बुधचंदजी बज		टिक्कीवालों का रास्ता	विशाल गुम्बज, पत्थर की जालियां।
	चैत्यालय भण्डेवालों का	(59)	किशनपोल बाजार, पोस्ट ऑफिस वाला मकान	

क्र. सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
56.	चैत्यालय धमानेवालों का दि० जैन मंदिर ग्रामली का चैत्यालय डिग्गीवालों का	(60) (61)	नमक की मंडी, कालख वालों का चौक नमक की मंडी, सुन्दर का बास टिक्कीवालों का रास्ता, डिग्गीवालों का मकान	
57.	दि० जैन मंदिर डूंगरसीदास चैत्यालय बाजूलालजी गोघा	(62)	टिक्कीवालों का रास्ता टिक्कडमल का रास्ता	
58.	दि० जैन मंदिर जोबनेर चैत्यालय हरकारों का	(63)	भालाणियों का रास्ता मंदिर जोबनेर में ही हैं	समवसरण रचना।

### चौकड़ी पुरानी बस्ती

- |     |                                   |  |
|-----|-----------------------------------|--|
| 59. | दि० जैन मंदिर बेगस्यान            | चांदपोल बाजार, उणियारा रावजी<br>का रास्ता                        |
| 60. | दि० जैन मंदिर कासलीवाल<br>बैनाडान | ठा० हरिसिंहजी लाडखानी के सामने<br>उणियारा रावजी का रास्ता        |
| 61. | दि० जैन मंदिर घिणोई               | जयलाल मुंशी का रास्ता, पांचवाँ<br>चौराहा, रामसुखजी काला के सामने |

### चौकड़ी हवाली शहर (जयपुर शहर के बाहर)

- |     |  |   |  |
|-----|--|---|--|
| 62. | दि० जैन नसियां खजांचीजी                            | संसारचन्द्र रोड, चांदपोल बाहर   |  |
| 63. | पंचायत श्री दि० जैन मंदिर<br>बगरूवालान             | रेलवे स्टेशन, जयपुर सदर थाना के पास   | सहस्रकूट चैत्यालय।   |
| 64. | दि० जैन नसियां तेरह पंथियान<br>चैत्यालय ठोलियों का | (64)<br>रेलवे स्टेशन, जी. पी. ओ. के सामने<br>ठोलिया बिल्डिंग, एम. आई. रोड<br>पांचबत्ती, जयपुर | बन्जीलाल ठोलिया चैरि-<br>टेबिल ट्रस्ट द्वारा संचालित<br>सन् 1935 में स्थापित। यहाँ 22 प्रतिमाएँ<br>2½" से 6½" इन्च तक की हैं<br>जिनमें 13 रत्नों की 6 विल्लोर की एक<br>चांदी की एवं 2 सप्तधातु की हैं। |

क्र. सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
65.	दि० जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय हिन्दु होटल वालों का चैत्यालय बूचरों का चैत्यालय ठोलियों का	(65) (66)	गोखले मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर बूचरा बिल्डिंग, भगवानदास रोड अनूपचंदजी ठोलिया का प्लॉट, चित्तरंजन मार्ग, सी-स्कीम	
	चैत्यालाल मीठालालजी सेठी	(67)	सेठी भवन, कमानी हाउस के पास, सी-स्कीम, महावीर मार्ग, जयपुर	
66.	दि० जैन मंदिर नसियां दीवान उदयलाल		सवाई मानसिंह अस्पताल के सामने, राम बाग रोड, जयपुर	मानस्तंभ ।
67.	दि० जैन नसियां भट्टारकजी		नारायणसिंह चौराहा, राम बाग रोड, जयपुर	सामाजिक एवं धार्मिक समारोह स्थल, वेदी में पच्चीकारी, भट्टारकों की चरण छत्रियाँ ।
68.	पार्श्वनाथ दि० जैन चैत्यालय बापूनगर		गणेश मार्ग, बापू नगर, जयपुर	
69.	सीमंघर जिनालय, टोडरमल स्मारक भवन		बापू नगर, जयपुर	भगवान सीमंघर स्वामी की प्रतिमा ।
70.	दि० जैन मंदिर दुर्गापुरा चैत्यालय बगवाड़ा वालों का चैत्यालय सेठियों का	(68) (69)	दुर्गापुरा गंगवाल पार्क पचार वालों का प्लॉट, फतहटीबा, जयपुर	
71.	दि० जैन मंदिर मुल्तान दि० जैन समाज		आदर्श नगर, जयपुर	मठ्य जिनालय, कलापूर्ण बिना स्तंभ की वेदी, 2500वां निर्वाण स्मृति स्तंभ, कांच की जड़ाई के सुन्दर भाव चित्र ।
72.	दि० जैन मंदिर मोहनबाड़ी		सूरजपोल दरवाजे बाहर, गलता रोड, जयपुर	
73.	दि० जैन मंदिर जनता कॉलोनी		जनता कॉलोनी, सर्किल के पास	
74.	दि० जैन मंदिर सेठी कॉलोनी		जैन मंदिर मार्ग, सेठी कॉलोनी, आगरा रोड	
75.	दि० जैन मंदिर शास्त्री नगर		शास्त्री नगर, सर्किल के पास	
76.	दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ मधुवन चैत्यालय मधुवन	(70)	मधुवन, टोंक फाटक	
	चैत्यालय तोतूकों का	(71)	मधुवन, किसान मार्ग	
77.	दि० जैन मंदिर लाल कोठी		ऐवरेस्ट कॉलोनी, लाल कोठी, जयपुर	

क्र. सं.	नाम मंदिर, चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
78.	दि० जैन मंदिर बोहराजी बिहारी वाला, पुराना घाट (अधीनस्थ, मंदिर पाटोदी)		व्यासजी के बाग के सामने, पुराना घाट	
79.	दि० जैन मंदिर चिरमोल्यां का		घाट की गुणी से उतरते ही पुराना घाट	
80.	दि० जैन नसियां संगही हीरालालजी दूनी वाले		खानियां (पुराना घाट), आगरा रोड	
81.	ट्रस्ट प्राइवेट दि० जैन मन्दिर मुरलीधरजी राणा की नसियां (दर्शनीय)		खानियां, पुराना घाट	छत में सोने की छपाई महीन कलम के सुन्दर चित्र, समवसरण, रा नालकी, आचार्य बी सागरजी की चर छत्री, विशाल नसियां
82.	दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री पार्श्वनाथ चूलगिरि		खानियां, पुराना घाट, चूलगिरि	जयपुर के निकट पहा पर अतिशय क्षेत्र, म वान महावीर की 2 फुट ऊँची प्रतिमा, 4 X फुट का तांबे का ऋदि सिद्धि दायक यंत्र, 2 टूंक, खड्गासन चौबीस तलघर में
83.	दि० जैन नसियां संगही हुकमचंदजी (अधीनस्थ, मंदिर संगहीजी, जयपुर)		बास बदनपुरा, टंकी के नीचे	
84.	दि० जैन नसियां बालमुकंदजी बज		बास बदनपुरा, टंकी के नीचे	छत में तथा खंभों प सोने की छपाई का काम भव मंदिर
85.	दि० जैन मंदिर नसियां दीवान नंदलाल (भालरे वाली) (अधीनस्थ, मंदिर पार्श्वनाथजी, जयपुर)		बास बदनपुरा, टंकी के नीचे	
86.	दि० जैन नसियां श्योजी गोघा (अधीनस्थ, मंदिर लशकर)		महारानीजी की छत्रियों के सामने, आमेर रोड, जयपुर	अच्छा पिकनिक स्थल घामिक एवं सामाजिक समारोह-स्थल
87.	दि० जैन मंदिर नसियां विजैराम पांड्या (अधीनस्थ, मंदिर पाटोदी)		फकीर के तकिये के पास, आमेर रोड	
88.	दि० जैन मंदिर जवाहर नगर		सैक्टर 7, जवाहर नगर, जयपुर	

क्र. सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
89.	चैत्यालय बैराठियों का दि० जैन मंदिर महावीर स्वामी नेहरू नगर, बस्ती सीतारामपुरा	(72)	गौतम मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर भोटवाड़ा रोड, जयपुर	
90.	दि० जैन मंदिर अम्बाबाड़ी चैत्यालय अम्बाबाड़ी	(73)	महावीर मार्ग, अम्बाबाड़ी, जयपुर अम्बाबाड़ी, जयपुर	
91.	दि० जैन मंदिर भोटवाड़ा		भोटवाड़ा, जयपुर	
92.	पाश्र्वनाथ दि० जैन मंदिर भोटवाड़ा		भोटवाड़ा, जयपुर	
93.	दि० जैन महावीर जिनालय		विजयपथ, तिलक नगर, जयपुर	
94.	दि० जैन मंदिर मालवीय नगर		सेक्टर नं० 2/379, मालवीय नगर, जयपुर	
95.	दि० जैन मंदिर मालवीय नगर चैत्यालय मालवीय नगर	(74)	सेक्टर नं० 3 (निर्माणाधीन) मालवीय नगर, जयपुर	
96.	दि० जैन मंदिर मालवीय नगर		सेक्टर नं० 7, मालवीय नगर, जयपुर	
97.	दि० जैन मंदिर महावीर नगर		महावीर नगर; दुर्गापुरा के पास	
98.	दि० जैन मंदिर ज्योति नगर, जनकपुरी		ज्योति नगर, इमली के फाटक के पास	
99.	दि० जैन मंदिर कीर्तिनगर		वसुन्धरा कॉलोनी, टोंक रोड, जयपुर	
100.	दि० जैन मंदिर जग्गा की बावड़ी (अधीनस्थ, मंदिर चाकसू)		घाट के बालाजी के पास, पुराना घाट, जयपुर	पहाड़ियों के बीच रास्ता, पाश्र्वनाथ की भव्य प्रतिमा ।

### आमेर

101.	दि० जैन मंदिर सांवलाजी (नेमिनाथजी)		अधीनस्थ, श्रीमहावीरजी क्षेत्र	प्राचीन मंदिर, मट्टारकजी की गद्दी जयपुर से पहले यहाँ थी। आमेर गद्दी के मट्टारकजी ही जयपुर तथा श्रीमहावीरजी में रहे। 12वीं शताब्दी की प्राचीन प्रतिमा ।
102.	दि० जैन मंदिर चन्द्रप्रभजी		अधीनस्थ, श्रीमहावीरजी क्षेत्र	संघी रायचन्द्र छाबड़ा ने बनवाया ।
103.	दि० जैन मंदिर संघीजी (पहाड़ी पर)		नसियां लुहाड़ियों की	सं० 1559 की निर्मित ।
104.	दि० जैन मंदिर बघीचन्दजी		अधीनस्थ, मंदिर बघीचंदजी, जयपुर	
105.	दि० जैन मंदिर मुंशीजी का			

क्र. सं.	नाम मंदिर/चैत्यालय	चै. सं.	पता	विशेष
106.	दि० जैन मंदिर नेमिनाथजी, बाहरली आमेर		अधीनस्थ, मंदिर कालाडेरा, महावीर स्वामी, जयपुर	नेमिनाथ की केश-गुच्छ युक्त प्राचीन प्रतिमा ।
107.	दि० जैन मंदिर संकट हरण पार्श्वनाथजी		अधीनस्थ, फागीवाला ट्रस्ट	विशाल प्रतिमा ।
108.	दि० जैन नसियां कीर्ति-स्तम्भ		अधीनस्थ, श्रीमहावीरजी क्षेत्र	मट्टारक नामावली की कीर्ति-स्तम्भ एवं मट्टारक रकों की चरण छत्रियां

### सांगानेर

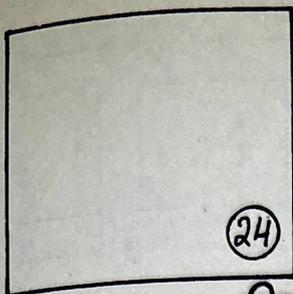
109.	दि० जैन मंदिर संगहीजी		अधीनस्थ, श्रीमहावीरजी क्षेत्र	दर्शनीय मंदिर, पुराना कलापूर्ण मंदिर, प्राचीन प्रतिमाएँ ।
110.	दि० जैन मंदिर अढाईपैडी		अधीनस्थ, मंदिर गोधान (नागौरी चौक)	
111.	दि० जैन मंदिर बधीचंदजी		अधीनस्थ, मंदिर बधीचंदजी, जयपुर	
112.	दि० जैन मंदिर पाटनियों का		अधीनस्थ, मंदिर तेरहपंथी बड़ा, जयपुर	
113.	दि० जैन मंदिर गोदीकों का		अधीनस्थ, मंदिर तेरहपंथी बड़ा, जयपुर	मनोज्ञ तीन शिखर, वेदी में महीन कुराई का काम ।
114.	दि० जैन मंदिर ठोलियों का		अधीनस्थ, मंदिर ठोलियान, जयपुर	सुन्दर तीन शिखर
115.	दि० जैन मंदिर लुहाड़ियों का		अधीनस्थ, लुहाड़ियान	
116.	दि० जैन नसियां संगहीजी		अधीनस्थ, श्रीमहावीरजी क्षेत्र	

### अन्य मंदिर

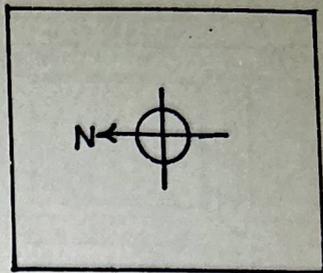
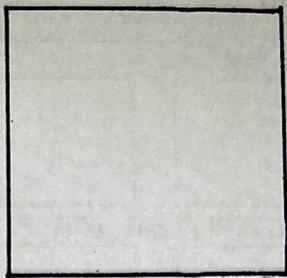
1.	दि० जैन मंदिर श्योपुर		अधीनस्थ, मंदिर गोधान, जयपुर	
2.	दि० जैन मंदिर जगतपुरा		अधीनस्थ, मंदिर बधीचन्दजी, जयपुर	
3.	दि० जैन मंदिर सांगानेर		सांगानेर पुलिस चौकी के सामने बस्ती में	
4.	दि० जैन मंदिर शांतिनाथ खोह		खानियां से 3 कि. मी.	
5.	दि० जैन मंदिर बगराणा		खानियां से 3 कि. मी.	
6.	दि० जैन मंदिर कानीखोह		बंघ की घाटी से आगे	
7.	दि० जैन मंदिर चांवड का मंढ		रामगढ़ रोड पर	
8.	दि० जैन मंदिर सायपुरा		रामगढ़ रोड पर	
9.	दि० जैन मंदिर साईवाड़		रामगढ़ रोड पर	
10.	दि० जैन मंदिर रामगढ़		रामगढ़ रोड पर	
11.	दि० जैन मंदिर कूकस		जयपुर देहली रोड पर	

# मानचित्र चौकड़ी लोपखाना हजरी

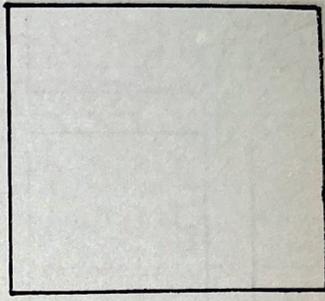
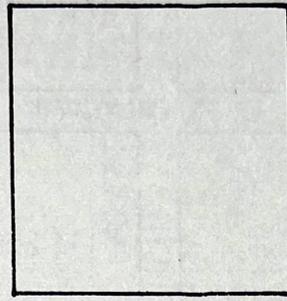
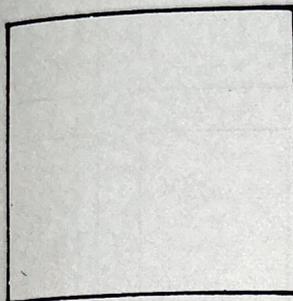
चौपड़  
बाजार  
सूखज पोल  
बाजार



24



जीन माता का खुर्ची



घाट दरवाजा बाजार

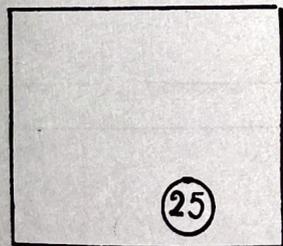
घाट  
गेट

# मानचित्र चौकड़ी रामचन्द्र जी मंदिर चैत्यालय



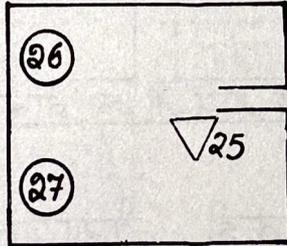
मोती कटला बाजार

बाजार  
सिन्धु डयोदी



25

पानों का

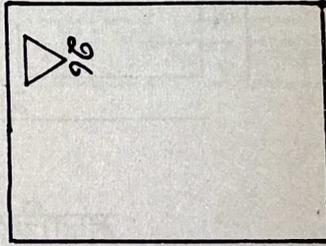


26

27

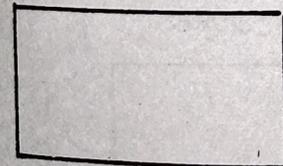
25

ठाकुर

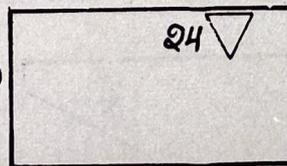


26

खवास जी का रास्ता

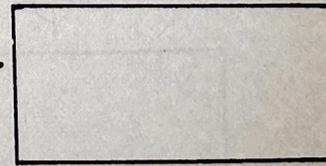


दशीबा

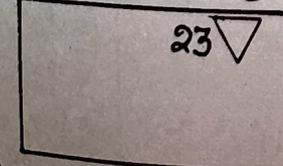


24

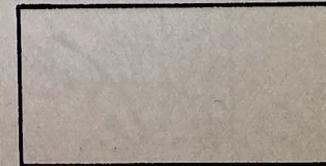
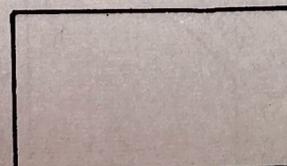
पंचवत का रास्ता



भट्टों की गली



23



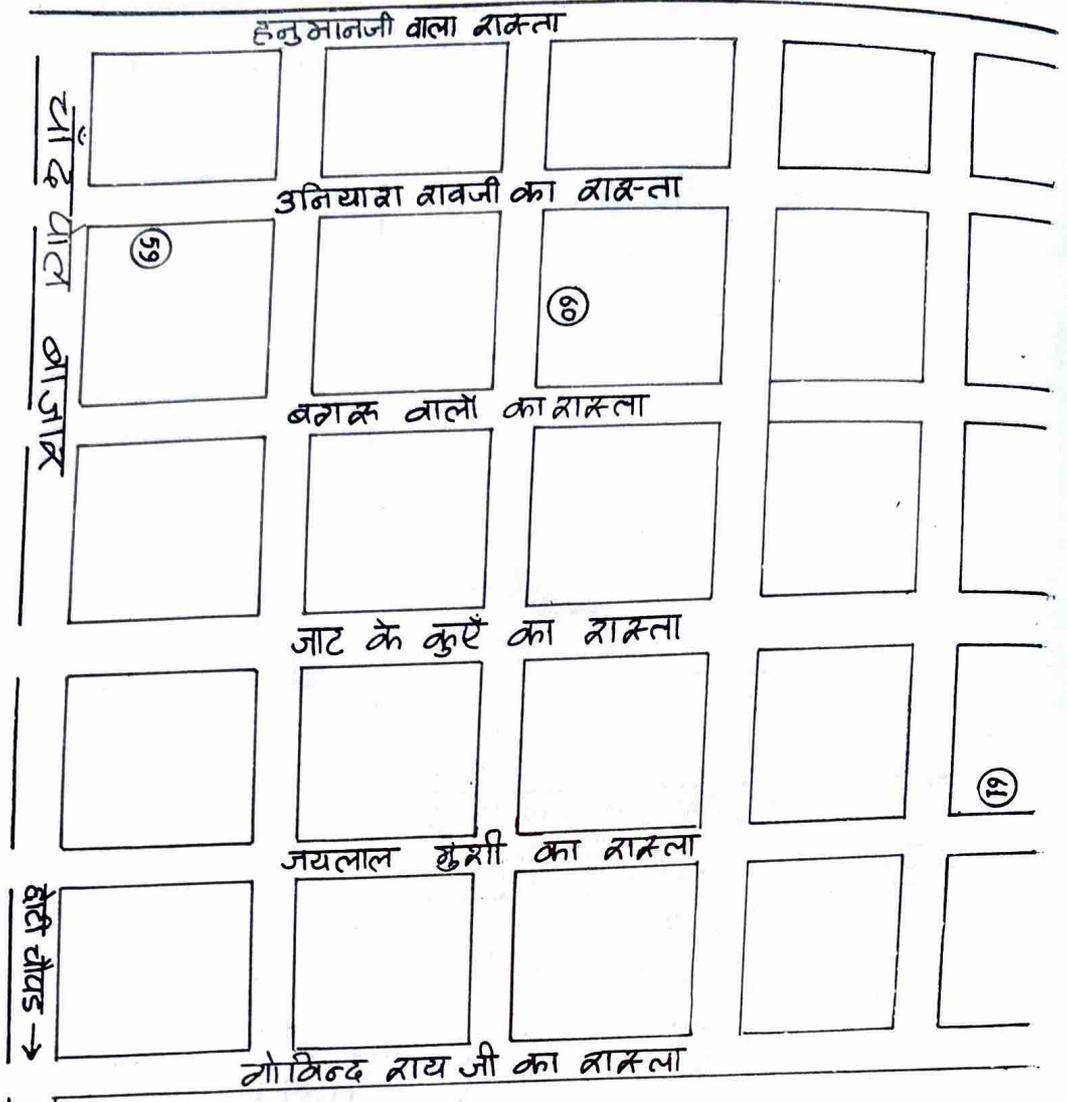
चौपड़  
बाजार चौक

रामराज बाजार

मानचित्र चौकड़ी पुरानी बस्ती

○ मंदिर

△ चैत्यालय

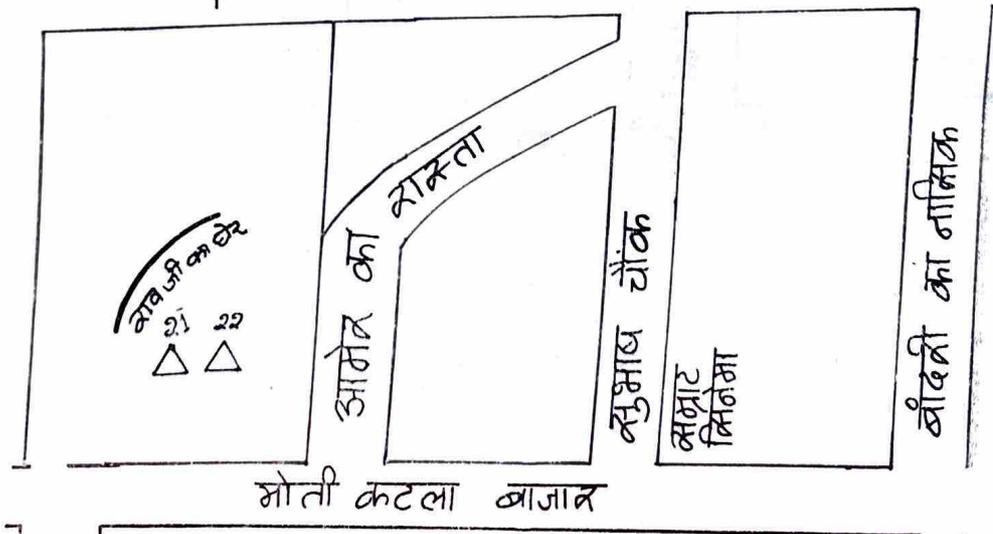


मानचित्र चौकड़ी श्रीमयापोल



○ मंदिर

△ चैत्यालय



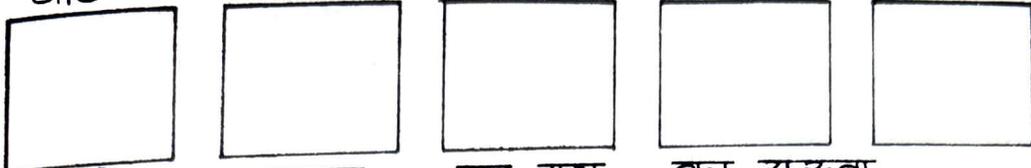
# मानचित्र चौकड़ी घाट दरवाजा एवं विश्वेश्वरजी



○ मन्दिर

△ चैत्यालय

घाट गेट बाजार - चौकड़ी घाट दरवाजा

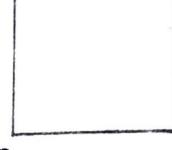
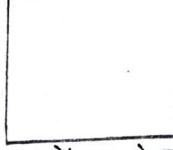
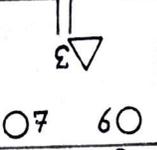
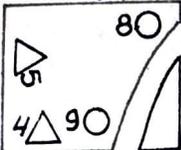


चौकी

बन्दार

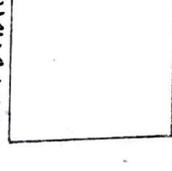
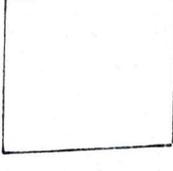
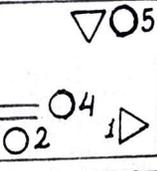
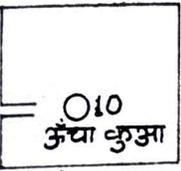
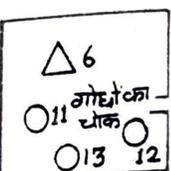
का बाग

का रास्ता



पूडी

वालों का मोहल्ला



बाजार

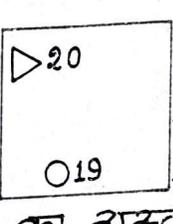
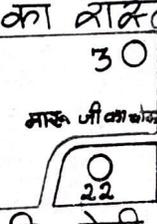
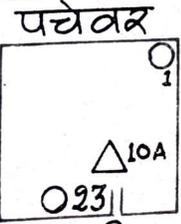
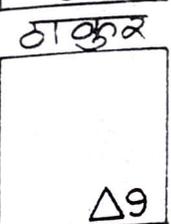
रास्ता

रास्ता

का रास्ता

का रास्ता

बाजार



रामगंज

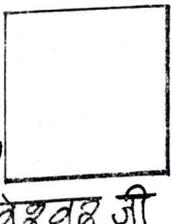
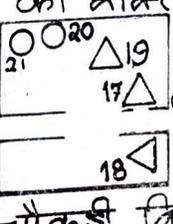
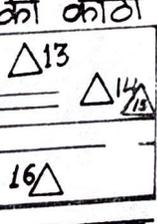
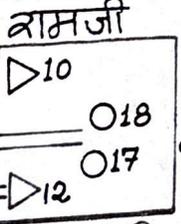
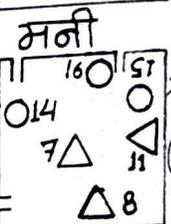
का

वालों का

मोमियों

के भौवर

बाजार

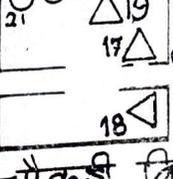
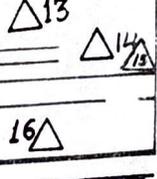
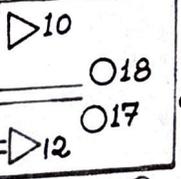
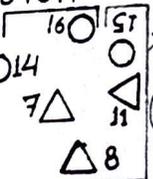


मनी

रामजी

की कोठी

का रास्ता



बाजार

दरिद्यों

घी

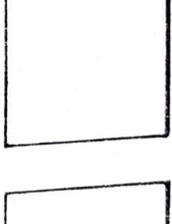
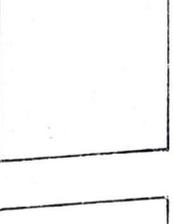
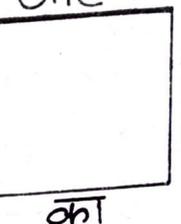
माती सिंह

कुंढीदार

बाजार

जौहरी

बाजार - चौकड़ी विश्वेश्वरजी



बाजार

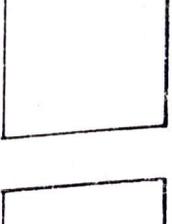
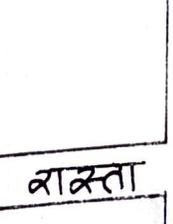
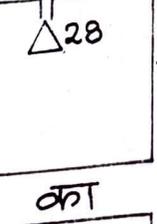
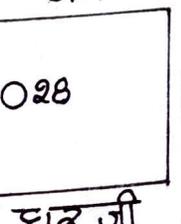
रास्ता

रास्ता

रास्ता

रास्ता

बाजार



त्रियोलिया

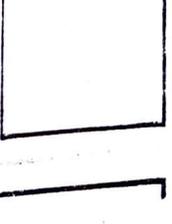
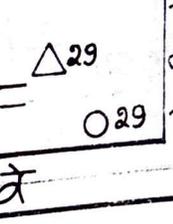
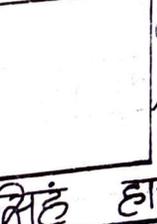
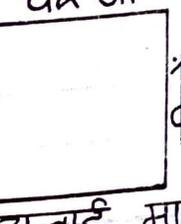
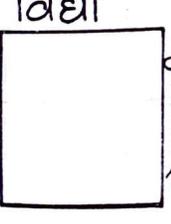
का

का

वालों का

का

बाजार



विद्या

गोपाल जी

जडियों

सोथली

तेलीपाई

बापू

सवाई मानसिंह हई वे

मान चित्र चौकड़ी मोदी बवाणा  
दि० जैन मंदिर

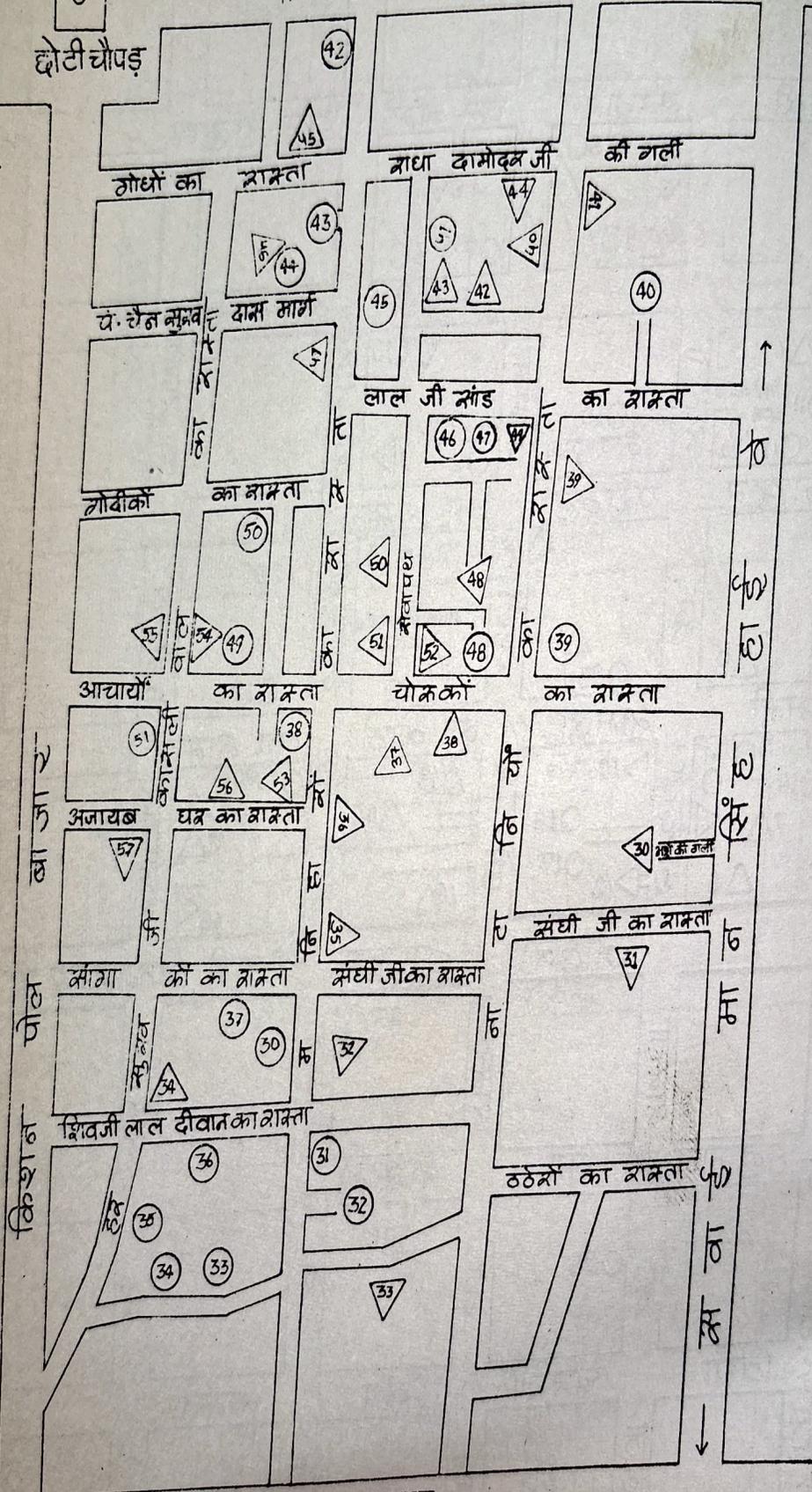
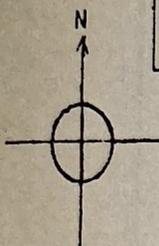
△ चैत्यालय  
○ मंदिर

चाँदपोल बाजार

गठबोरी बाजार

त्रिपोलिया बाजार

दोटी चौपड़



नेहरू

बाजार

# मानचित्र-चौकड़ी तोपखाना देस

○ मंदिर △ चैत्यालय

